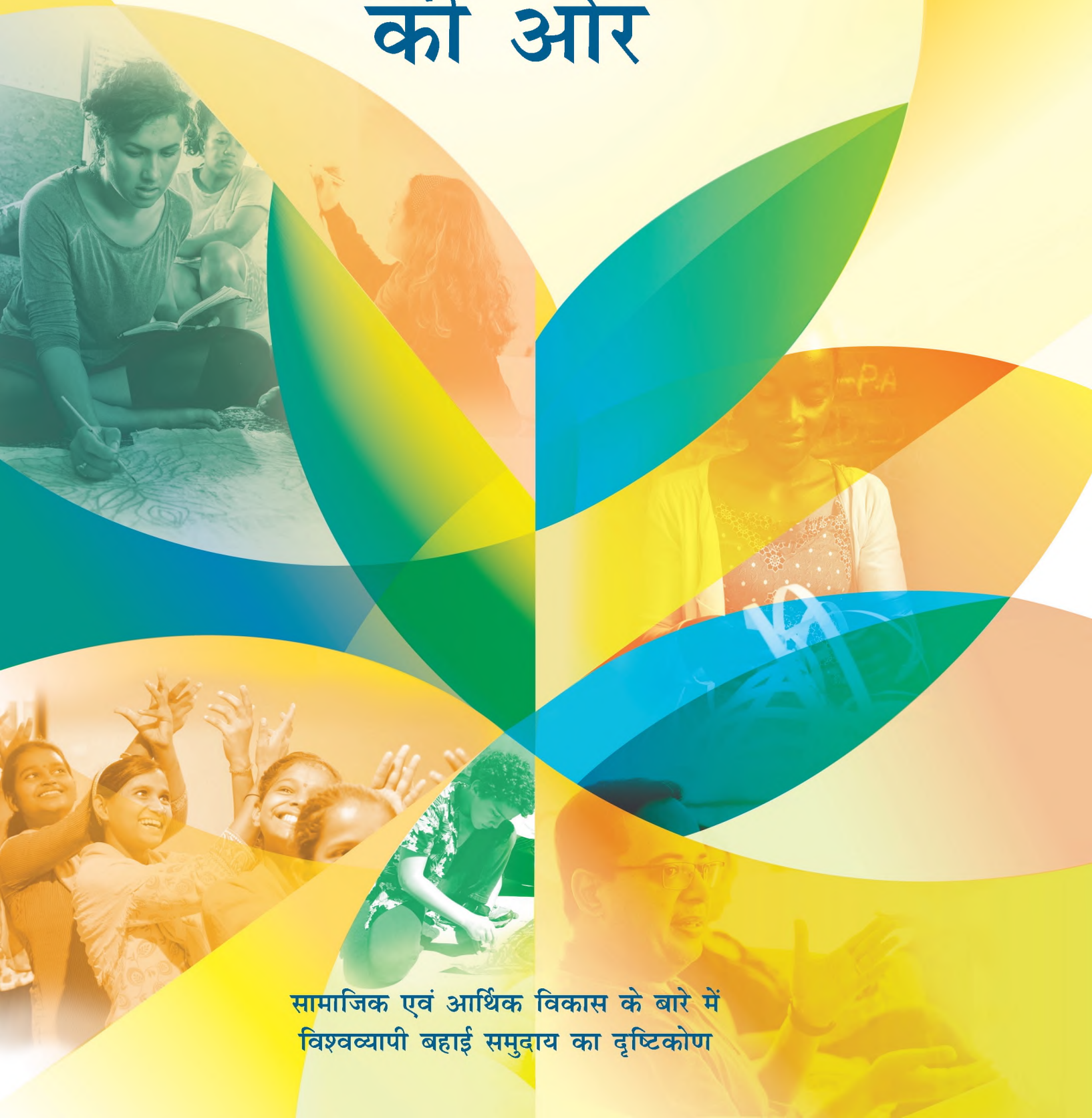


एक बेहतर विश्व की ओर



सामाजिक एवं आर्थिक विकास के बारे में
विश्वव्यापी बहाई समुदाय का दृष्टिकोण



©2003, 2008, 2018, 2023

बहाई अंतर्राष्ट्रीय समुदाय

बहाई अंतर्राष्ट्रीय समुदाय

866 युनाइटेड नेशन्स प्लाज़ा, सुइट 120

न्यूयॉर्क, NY 10017 USA



“तुम लोग मिल-जुलकर परामर्श करो और केवल उसी के बारे में चिन्ता करो जिससे मानवजाति को लाभ मिले और उसकी स्थिति बेहतर हो...”

– बहाउल्लाह



परिचय

“जिस युग में तुम रहते हो उसकी आवश्यकताओं के बारे में चिन्तातुर रूप से विचार करो और अपनी विवेचनाओं को इसकी ज़रूरतों और अनिवार्यताओं पर केन्द्रित करो”

— बहाउल्लाह

सामाजिक एवं आर्थिक विकास के प्रति बहाई समुदाय की प्रतिबद्धता की जड़ें उसके पावन लेखों में हैं जिनमें यह कहा गया है कि सभी मनुष्यों को “एक सतत-विकासशील सभ्यता को आगे ले जाने के लिए रचा गया है।” बहाई मान्यता के आधार में यह विश्वास निहित है कि एक शांतिपूर्ण और समृद्ध विश्व-सभ्यता के निर्माण में हर व्यक्ति, हर जनसमूह, हर राष्ट्र को एक भूमिका निभानी है।

विकास सम्बंधी पारम्परिक सोच में, आधुनिकीकरण के सिद्धान्त प्रगति की कुछ खास परिभाषाओं पर आधारित थे और उनके मूल में धर्म तथा सामाजिक प्रगति में उसकी भूमिका के बारे में कुछ खास अवधारणाएँ निहित थीं। इस सन्दर्भ में, धर्म को बिल्कुल ही अप्रासंगिक अथवा अर्थपूर्ण प्रगति के मार्ग में एक बाधा मान लिया गया था — निषेध का एक स्रोत और सामाजिक जड़त्व का एक मजबूत बल। यह मान लिया गया था कि विकास अपरिहार्य रूप से धर्म को अधःपतन की ओर ले जाएगा क्योंकि देशों ने प्रगतिशील रूप से औद्योगिकीकृत राष्ट्रों की जीवन-पद्धतियों, प्रौद्योगिकियों और संस्थाओं को अपना लिया था। लेकिन फिर भी आने वाले दशकों में विकास के क्षेत्र की सोच प्रचलित दृष्टिकोण की शक्तियों और कमजोरियों के और अधिक यथार्थवादी आकलन से संतुलित हो गई। सालों के घोर प्रयास

और धन के विशाल व्यय यद्यपि सार्वजनिक स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे क्षेत्रों में ठोस प्रगति की दिशा में जरूर ले गए लेकिन फिर भी असंख्य सामाजिक एवं आर्थिक व्याधियों का अस्तित्व कायम रहना और कुछ मामलों में उनका और ज्यादा बदतर हो जाना देखा गया, जैसे कि अमीरों और गरीबों के बीच बढ़ती खाई, अपार संख्या में लोगों का गरीबी में जीवन जीना, अग्नितुल्य स्तर पर पलायन और बहुत सारे पर्यावरणीय मुद्दे। ऐसे प्रयास के परिणाम ने विकास के सम्पूर्ण उपक्रम की प्रकृति और उसके उद्देश्य के बारे में व्यापक किस्म के बुनियादी सवालों को जन्म दिया। अब यह व्यापक रूप से माना जाने लगा है कि सामाजिक और आर्थिक विकास आय बढ़ाने या टेक्निकल पैकेंज के प्रचार-प्रसार पर आधारित सरल फॉर्मूले जितना आसान न होकर एक जटिल प्रक्रिया है। समाधान पाने के गहन दबाव में, अब विकास सम्बंधी सोच सतत बढ़ते हुए रूप से लोगों — उनकी संस्कृतियों, उनके मूल्यों और संसार के बारे में उनके दृष्टिकोणों — पर केंद्रित हो रही है जिनकी रूप-रचना, धरती के ज्यादातर निवासियों के लिए, धर्म द्वारा की जाती है। ऐसे विस्तृत परिदृश्य में, यह पर्याप्त रूप से स्पष्ट हो चुका है कि अपने आस-पास की दुनिया में परिवर्तन लाने के लिए व्यक्तियों एवं समुदायों की क्षमताओं को निर्मुक्त करने में केवल भौतिकवादी दृष्टिकोण कदापि सफल नहीं हो सकते, न ही वे उन अनेक जटिल समस्याओं का समाधान ही प्रस्तुत कर सकते हैं जो आज मानवजाति के समक्ष खड़ी हैं — चाहे वे पर्यावरण संकट से सम्बंधित हों, अत्यधिक अमीरी और अत्यधिक गरीबी से, स्वास्थ्य सम्बंधी वैश्विक चिन्ताओं, खाद्य सुरक्षा या अभिशान्न की क्षीण होती प्रणालियों से।



इस प्रकार हाल के वर्षों में विकास सम्बंधी संवाद में, जिसे कुछ विद्वान “धर्म की ओर उन्मुख होने” के रूप में उल्लेखित करते हैं, आध्यात्मिकता और धर्म द्वारा दिए जा सकने वाले संभावित योगदान के बारे में उल्लेखनीय रूप से अभिरुचि का विकास हुआ है। हालांकि धर्म के साथ सहभागिता करने के अभी तक के प्रयास सामान्य तौर पर उसे पूर्व-निर्धारित विकास के उद्देश्यों की दिशा में एक साधन समझने की प्रवृत्ति से बचने में विफल रहे हैं, किंतु एक और अधिक बुनियादी प्रश्न अपना संकेत देने लगा है: धर्म से प्राप्त अंतर्दृष्टियों और सिद्धान्तों को आधुनिक विश्व की वैज्ञानिक, तकनीकी, आर्थिक और सांस्कृतिक रचनात्मकता को उपयोग में लाने के तौर-तरीकों की खोज के काम में कैसे लगाया जा सकता है ताकि धरती के विविध निवासियों के बीच समृद्धि को पोषित किया जा सके तथा सामूहिक प्रगति की नई अवधारणाओं और उसके नए मार्गों के बारे में सीखा जा सके?

यह प्रकाशन जीवन के सभी क्षेत्रों के सहयोगियों के साथ मिलकर — चाहे उनकी जो भी पृष्ठभूमि और मान्यता हो — उनके अपने समाजों के सामाजिक एवं आर्थिक कल्याण में योगदान देने के लिए बहाई समुदाय द्वारा किए जा रहे विनम्र प्रयासों के सम्बंध में है। ऐसे प्रयास, जिन्हें व्यापक रूप से सामाजिक क्रिया के रूप में परिभाषित किया जाता है, मानवजाति की सेवा करने की आकांक्षा से अभिप्रेरित हैं और वे सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन में योगदान देते हैं। वे सारे प्रयास मिल कर मानवजाति की एकता और न्याय जैसे आध्यात्मिक सिद्धान्तों और साथ ही मानवीय प्रयास के विभिन्न क्षेत्रों में संचित ज्ञान को सामाजिक एवं आर्थिक वास्तविकता के प्रसंग में क्रियान्वित करने के सम्बंध में सीखने की एक सतत जारी प्रक्रिया का आकार ग्रहण करते हैं। बहाई सामाजिक एवं आर्थिक विकास को व्यावहारिक रूप से कैसे लागू किया जा रहा है, हमें आशा है कि यह पुस्तिका इस बात का स्पष्ट चित्रण प्रस्तुत करती है।

बहाई अंतर्राष्ट्रीय विकास संगठन



विषय-सूची



06 अब तक का पथ



08 सामूहिक रूप से सीखने का क्रमविकसित होता ढांचा



14 बहाई विकास पहलों की एक झलक

विश्वव्यापी विकास गतिविधियों का मानचित्र	16
प्रथम स्पंदन	18
समुदाय-आधारित सतत जारी परियोजनाएं	22
विकास संस्थाएं	28



34 कार्य के क्षेत्र

शिक्षा	36
युवाओं की क्षमता की निर्मुक्ति	48
कृषि	60
स्वास्थ्य	64
पर्यावरण	66
आर्थिक जीवन	68
महिलाओं की उन्नति	70
कला और मीडिया	74
मानवतावादी राहत	76



80 सीखने का सुव्यवस्थिकरण



86 विभिन्न स्तरों पर विकास संवाद में योगदान देना

अब तक का पथ

“मानवजाति की सबसे बड़ी जरूरत है सहयोग और पारस्परिकता। लोगों के बीच बंधुता और अखंडता के बंधन जितने ही अधिक मजबूत होंगे, मानवीय कार्यक्रम के सभी धरातलों पर रचनात्मकता और उपलब्धि की शक्ति उतनी ही प्रबल होगी।”

- अब्दुल-बहा

विकास के क्षेत्र में बहाई अनुभव का इतिहास उन्नीसवीं सदी के दौरान ईरान में बहाई धर्म के आरंभ काल से ही अस्तित्व में रहा है। बहाई पवित्र लेखों में शिक्षा के महत्व पर बहुत ही जोर डाला गया है और इसी कारण उस पूरे देश में बहाई स्कूलों के एक व्यापक नेटवर्क की स्थापना करने की प्रेरणा प्राप्त हुई। उन्हीं विद्यालयों में से एक था लड़कियों के लिए ‘तरबीयत स्कूल’ जिसकी शुरुआत 1900 के प्रारम्भिक दशकों में देश की राजधानी में हुई थी और जिसे राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त हुई। उस देश में धर्मानुयायियों का वह समुदाय, कुछ ही पीढ़ियों के बाद एक ऐसे जनसमूह से आगे बढ़कर जिसके ज्यादातर लोग पढ़ने-लिखने में सक्षम नहीं थे, एक ऐसा समुदाय बन गया जिसके सदस्य कार्यक्रम के अनेक क्षेत्रों में अग्रणी थे। 1973 तक, 40 से कम उम्र की महिला धर्मानुयायियों के बीच ईरान के बहाई समुदाय ने 100 प्रतिशत साक्षरता दर हासिल कर ली थी, जबकि उस समय महिलाओं की राष्ट्रीय साक्षरता दर 20 प्रतिशत से भी कम थी।

आने वाले दशकों में, “मानव-संसार के लिए सेवा प्रदान करने” की बहाउल्लाह की शिक्षा को व्यावहारिक अभिव्यक्ति देने के प्रयास, यद्यपि सरल एवं विरल पैमाने पर ही सही, सम्पूर्ण एशिया, प्रशान्त महाद्वीप,

अफ्रीका और लैटिन अमेरिका तक में आकार ग्रहण करने लगे। समूहों और व्यक्तियों द्वारा साक्षरता कार्यक्रम और विद्यालय जैसे सामाजिक एवं आर्थिक विकास के कार्यक्रमलाप पृथक परियोजनाओं के रूप में आरंभ किए जाने लगे। उसी समय महिलाओं की स्थिति को उन्नत बनाने के लिए रेडियो परियोजनाओं और प्रयासों को भी आगे बढ़ाया जाने लगा।

1980 के आरंभिक दशकों में, मुख्य रूप से अनेक राष्ट्रों में बहाइयों की जनसंख्या में महत्वपूर्ण वृद्धि के फलस्वरूप, सामाजिक और आर्थिक विकास में बहाई समुदाय की भागीदारी और अधिक व्यापक हो गई तथा उस पर ज्यादा जोर दिया जाने लगा। आगे आने वाले वर्षों में प्रयोग की एक अवधि निहित थी, जो कि एक ही वक्त उत्साह और झिझक, विवेकपूर्ण नियोजन और अस्त-व्यस्त क्रिया, उपलब्धियों और बाधाओं के मिले-जुले लक्षणों से युक्त थी। हालांकि ज्यादातर परियोजनाओं के लिए दुनिया भर में विकास के प्रचलित अभ्यासों के पैटर्न से बाहर निकल पाना कठिन प्रतीत हुआ किंतु उनमें से कुछ परियोजनाओं ने क्रिया के आशाजनक परिदृश्यों की झलक दिखाई। विविधतापूर्ण क्रियाकलाप के इस आरंभिक चरण से, समुदाय 1990 के आरंभिक दशकों में उभर कर सामने आया जब सामाजिक एवं आर्थिक विकास के कार्य उसके स्वाभाविक जीवन की एक विशेषता के रूप में तथा कालक्रम में एक विशिष्ट बहाई दृष्टिकोण की रूप-रचना के लिए संवर्धित क्षमता के साथ दृढ़तापूर्वक स्थापित हो गए।

उसके बाद के दशकों में सामाजिक क्रिया आरंभ करने की क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि देखने को मिली है, जिसके परिणामस्वरूप इस प्रकार का कार्यक्रमलाप खूब फलीभूत हुआ है। 1996 की तुलना में जब साल-दर-साल करीब 250 सामाजिक एवं आर्थिक विकास परियोजनाएं जारी रखी जाती थीं, 2022 में उनकी संख्या बढ़कर 2,000 से भी ऊपर हो गई और बहाई-प्रेरित विकास संगठनों की संख्या चौगुनी बढ़कर 170 से ऊपर पहुंच गई। इसी अवधि में, प्रति वर्ष शुरू की जाने वाली सामाजिक क्रिया की अल्पकालिक तृणमूल गतिविधियों की संख्या में 70

तरबीयत स्कूल,
ईरान, 1933





गुणी वृद्धि देखने को मिली है और उनकी संख्या कुल मिलाकर 100,000 को भी पार कर गई है। पश्चिम के छोटे-छोटे नगरों और गांवों से लेकर अफ्रीका और एशिया के विशाल नगरीय केन्द्रों तक — ये गतिविधियां विविध प्रकार के सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक परिप्रेक्ष्यों में संचालित की जाती हैं।

इस प्रगति को अभिप्रेरित करने वाला एक प्रमुख कारक रहा है करीब 330 राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थानों के एक वैश्विक नेटवर्क का अभ्युदय। लगभग हर देश में संचालित ये संस्थान ऐसे पाठ्यक्रम प्रस्तुत करते हैं जो व्यक्तियों को बहाई लेखों से अंतर्दृष्टियां ग्रहण करने तथा अपने-अपने समुदायों को बेहतर बनाने के लिए अपनी क्षमता बढ़ाने में सहायता देते हैं। दसियों हजारों स्थानों पर, संस्थान के इन पाठ्यक्रमों में सहभागी बनने के माध्यम से, जीवन के सभी क्षेत्रों से आने वाले लोगों के समूह अध्ययन, क्रिया और समीक्षा की एक प्रतिभागितापूर्ण प्रक्रिया में सहभागी बनते हैं जिसका उद्देश्य उनके समुदायों के आध्यात्मिक एवं भौतिक जीवन को ज्यादा समृद्ध बनाना होता है। क्षमता-निर्माण की इस प्रक्रिया का एक स्वाभाविक परिणाम समुदाय-आधारित कार्यकलापों की संख्या में अपार वृद्धि तथा सामुदायिक जीवन के विभिन्न पहलुओं को आगे बढ़ाने के लिए प्रयासरत नायकों के बीच वृहत्तर सहयोग के रूप में परिलक्षित हुआ है। जो विशाल चुनौतियां सामने खड़ी हैं उनके मुकाबले अत्यंत सामान्य होते हुए भी, पूरी दुनिया

में जो सामूहिक प्रयास जारी है वह इस बात का आरंभिक संकेत देता है कि किस प्रकार व्यक्ति, समुदाय और संस्थाएं आध्यात्मिक सिद्धान्तों के प्रकाश में अपने आस-पास की दुनिया के नवनिर्माण के लिए मिल-जुल कर काम कर सकते हैं।

विगत वर्षों में क्रियाकलापों में हुई इस वृद्धि के पीछे विकास के बारे में सीखने की एक प्रगतिशील प्रक्रिया रही है। क्रिया, क्रिया की समीक्षा, अध्ययन और परामर्श के कार्य को पोषित करने और उसमें सहायता देने, तथा संचित होते हुए समग्र अनुभव को सुव्यवस्थित करने हेतु बहाई संस्थाओं और एजेन्सियों के सतत जारी प्रयासों ने क्रमिक रूप से सामूहिक रूप से सीखने की प्रक्रिया के एक व्यापक ढांचे को जन्म दिया है जो सामाजिक क्रिया के क्षेत्र में विश्वव्यापी बहाई समुदाय के प्रयत्नों को मार्गदर्शित करता है। जब विभिन्न परिवेशों से आने वाले लोग अपने आध्यात्मिक, सामाजिक और भौतिक विकास का दायित्व ग्रहण करने लगेंगे और एक समृद्ध भविष्य के मार्ग की ओर नए ज्ञान का सृजन करने लगेंगे तो आने वाले दशकों और शताब्दियों में इस ढांचे का विकास जारी रहेगा।

बाएं से दाएं: रेडियो बहाई, पनामा पर "ऑन दि एयर"। एर्डेनेबुलगान (मंगोलिया) में बागवानी परियोजना। सिलाई कक्षा, भारत युवा शिक्षा कार्यक्रम, कोलंबिया बहाई उपासना मंदिर, मातुंडा सोय, केन्या, 2022

सामूहिक रूप से सीखने का क्रमविकसित होता ढांचा

सामाजिक एवं आर्थिक विकास के प्रयास बहाई समुदाय के जीवन में एक विशिष्ट प्रकार्य को पूरा करते हैं। वे भौतिक एवं सामाजिक प्रगति प्राप्त करने की दिशा में, विज्ञान की विषयवस्तुओं और प्रविधियों के साथ-साथ, आध्यात्मिक सिद्धान्तों को लागू करने के लिए व्यक्तियों, समूहों और संस्थाओं द्वारा किए जाने वाले प्रयासों का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनका उद्देश्य केवल बहाइयों के हित के लिए नहीं, बल्कि सभी पृष्ठभूमियों और मान्यताओं के लोगों के लिए है। इस दुनिया को “विकसित” एवं “अविकसित” की दो श्रेणियों में बांटकर देखने की प्रथा विकास के क्षेत्र में बहाइयों द्वारा किए जा रहे प्रयासों के लिए अजनबी है। वास्तव में, यदि सैद्धांतिक रूप से कहें तो सामाजिक परिवर्तन कोई ऐसी परियोजना नहीं है जिसे एक समूह दूसरे समूह के लाभ के लिए संचालित करता हो। बल्कि यह माना गया है कि किसी भी राष्ट्र या जनसमूह ने सच्ची शांति और समृद्धि की उस स्थिति को प्राप्त नहीं किया है जिसे दूसरों के अनुकरण के लिए एक मॉडल के रूप में प्रस्तुत किया जा सके। इसके बदले, जो वस्तुतः वांछित है वह है विकास के सभी आयामों — भौतिक, बौद्धिक, एवं आध्यात्मिक — के अर्थ और उनके अभिप्रायों के बारे में विविधतापूर्ण प्रसंगों में सीखने की एक दीर्घकालिक, विश्वव्यापी और सामूहिक प्रक्रिया।

इस प्रकाश में, सभी बहाई विकास प्रयत्नों का केन्द्रीय विषय है सीखना। विगत कई दशकों में, सामूहिक रूप से सीखने का एक विस्तृत ढांचा उभर कर सामने आया है जो विकास के क्षेत्र में बहाइयों के प्रयासों का अनुरूपित करता है और अनुभवों के संचय के साथ क्रमिक रूप से उसका विकास होता जाता है। इस ढांचे के कई तत्वों का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया गया है।

मानवजाति का अपनी सामूहिक परिपक्वता की दिशा में अग्रसर होना

बहाई लोग विकास को एक ऐसे वैश्विक उपक्रम के रूप में देखते हैं जिसे एक अभ्युदयशील विश्व-सभ्यता

के परिप्रेक्ष्य में अपने लक्ष्यों की ओर अग्रसर होना चाहिए। बहाई लेखों में कहा गया है कि मानवता पारगमन के एक युग का अनुभव कर रही है जिसका सबसे अच्छा वर्णन सामूहिक बाल्यावस्था से सामूहिक परिपक्वता की ओर यात्रा के रूप में किया जाता है। जीवन के सभी पहलुओं में आश्चर्यजनक तेजी के साथ जो क्रांतिकारी परिवर्तन घटित हो रहे हैं वे इसी आलोक में अपना सच्चा अर्थ ग्रहण करते हैं। इस अवधि के दौरान, मानवजाति की बाल्यावस्था के विचारों, प्रवृत्तियों और आदतों को क्रमिक रूप से उखाड़ कर फेंका जा रहा है और वयस्कता की शक्तियों का झलकाने वाली एक नई सभ्यता की संरचनाएं आकार ग्रहण कर रही हैं। इतिहास की यह अवधारणा सामाजिक क्रिया की हर घटना को एक विशेष उद्देश्य से सम्पन्न बनाती है: धरती के वैविध्यपूर्ण निवासियों के बीच, अपने आध्यात्मिक एवं भौतिक आयामों के साथ सच्ची समृद्धि को पोषित करना।

एकमेवता और न्याय

बहाई शिक्षाओं के अनुसार, परिपक्वता के युग की निशानी होगी मानवजाति की एकता — वह समय जबकि मानवजाति की एकमेवता, जो कि बहाउल्लाह के प्रकटीकरण का अंतिम उद्देश्य और संचालक सिद्धान्त है, को पूरी तरह मान्यता दे दी जाएगी और समाज के सभी स्तरों पर उसे जीवन के पैटर्नों में एकीकृत कर दिया जाएगा। लेकिन मानवजाति की एकमेवता के अभिज्ञान का अर्थ एकरूपता नहीं है, बल्कि उसमें विविधता की अनिवार्य संकल्पना निहित है, जो सामान्य मूल्यों और सिद्धान्तों के समूह को आत्मसात करते हुए, दुनिया भर की संस्कृतियों के विभिन्न पहलुओं को संरक्षित रखती है।

विकास सम्बंधी समसामयिक विचारों में विविधता में एकता के सिद्धान्त को दिनोंदिन व्यापक मान्यता मिल रही है। हालांकि यह बढ़ती हुई जागरूकता बहुत ही महत्वपूर्ण है, किंतु इसके बावजूद सामूहिक परिपक्वता की ओर मानवजाति की यात्रा की दिशा में मानवजाति की एकमेवता को स्वीकारा जाना केवल एक कदम है। अमीरों और गरीबों के बीच की बढ़ती

हुई असमानता को जारी रहने नहीं दिया जा सकता। भौतिक एवं आध्यात्मिक रूप से समृद्ध वैश्विक सभ्यता के सुफलों का आरवाद पाने में धरती के सभी निवासियों को सक्षम होना चाहिए। अतः एकमेवता के इस सिद्धान्त से अंतरंग रूप से जुड़ा हुआ है न्याय का सिद्धान्त जो कि समाज को स्थायित्व प्रदान करने वाले सम्बंधों की नई संकल्पनाएं तैयार करने का आह्वान करता है। अतः, विकास के बारे में सीखने की प्रक्रिया के मूल में है उन सम्बंधों की प्रकृति के बारे में जिज्ञासा जो व्यक्ति, समुदाय और संस्थाओं को परस्पर जोड़ते हैं। ये तीनों ही इतिहास के मंच पर वे नायक हैं जो अनादि काल से ही शक्ति-संघर्ष में आबद्ध रहे हैं। इस प्रसंग में, इस अवधारणा को दरकिनार कर दिया गया है कि उनके बीच के सम्बंध अनिवार्य रूप से प्रतिस्पर्द्धा के निर्देशों के अनुरूप होंगे – एक ऐसी अवधारणा जो मनुष्य की चेतना की अद्वितीय क्षमता की अनदेखी करती है – और उसकी जगह इस आधार को जगह दी गई है कि उनके बीच सौहार्दपूर्ण अभिक्रिया एक परिपक्व मानवजाति के लिए सर्वथा सुयोग्य सभ्यता को पोषित करेगी।

आध्यात्मिक और भौतिक के बीच सामन्जस्य

अत्यंत महत्वपूर्ण रूप से प्रासंगिक एक अवधारणा है जीवन की व्यावहारिक और आध्यात्मिक आवश्यकताओं के बीच गतिमय सामन्जस्य प्राप्त करना। बहाई लेखों में कहा गया है कि हालांकि “भौतिक सभ्यता मानव-जगत की प्रगति के साधनों में से एक है लेकिन जब तक दिव्य सभ्यता से उसका संगम नहीं हो जाता तब तक वांछित परिणाम, अर्थात् मानव-जगत की वास्तविक प्रसन्नता, प्राप्त नहीं की जा सकती।” उसी अनुच्छेद में आगे कहा गया है:

भौतिक सभ्यता लैम्प के शीशे की तरह है। दिव्य सभ्यता स्वयं लैम्प है और बिना प्रकाश के कांच अंधकारपूर्ण है। भौतिक सभ्यता शरीर की तरह है। वह चाहे कितना भी असीमित रूप से महिमामय, भव्य और सुन्दर हो किन्तु प्रकाश के बिना वह मृतप्राय है। दिव्य सभ्यता चेतना की तरह है और शरीर को इसी चेतना से जीवन मिलता है ...

आध्यात्मिक और भौतिक के बीच सामन्जस्य पाने का प्रयास करने का यह अभिप्राय नहीं है कि विकास के भौतिक लक्ष्यों को तुच्छ समझा जाए। किंतु इसके लिए यह आवश्यक है कि विकास के प्रति ऐसे दृष्टिकोणों को अस्वीकार कर दिया जाए जो विकास को सभी समाजों में वैचारिक मान्यताओं, सामाजिक संरचनाओं, आर्थिक कार्यप्रथाओं, अभिशासन के मॉडलों – यानी अंतिम विश्लेषण में, स्वयं जीवन की पद्धतियों के ही



पूर्ण हस्तांतरण के रूप में परिभाषित करते हैं – एक ऐसी अवधारणा जो संसार के कुछ उच्च औद्योगिक क्षेत्रों में प्रचलित हैं, चाहे वे पूंजीवादी विचारधाराओं से प्रेरित हों या समाजवादी विचारधाराओं से। भविष्य के सही मार्ग के निरूपण के लिए, विकास सम्बंधी सिद्धान्त और अभ्यास को चाहिए कि वे ज्ञान की उन दो आधारभूत प्रणालियों से प्रेरणा ग्रहण करें जिन्होंने कई सदियों से मानवजाति की प्रगति को उत्प्रेरित किया है: विज्ञान और धर्म। इन दो एजेन्सियों के माध्यम से, मानवजाति का अनुभव सुसंगठित हुआ है, उसके वातावरण की व्याख्या की गई है, उसकी अंतर्निहित शक्तियों का अन्वेषण किया गया है और उसके नैतिक एवं बौद्धिक जीवन को अनुशासित किया गया है। दोनों ने मिलकर सभ्यता के सच्चे जनक के रूप में अपनी भूमिका निभाई है।

बहाई लोग इस धारणा को खारिज करते हैं कि विज्ञान और धर्म के बीच कोई अंतर्निहित संघर्ष है – वह धारणा जो बौद्धिक परिसंवाद में एक ऐसे समय प्रचलित हुई जब प्रत्येक प्रणाली की अवधारणा उचित होने के काफी परे थी। विज्ञान और धर्म में तालमेल बहाई धर्म के आधारभूत सिद्धान्तों में से एक है, जो यह सिखाता है कि विज्ञान के बिना धर्म शीघ्र ही अंधविश्वास और कट्टरता में बदल जाता है, जबकि धर्म के बिना विज्ञान अपरिष्कृत भौतिकवाद का खिलौना बनकर रह जाता है। बहाई धर्म के पवित्र लेखों के

“भौतिक सभ्यता लैम्प के शीशे की तरह है। दिव्य सभ्यता स्वयं लैम्प है और प्रकाश के बिना शीशा अंधकारमय होता है।”

– अब्दुल-बहा



संस्थात्मक क्षमता के बारे में परामर्श
कांगो जनतांत्रिक गणराज्य

अनुसार, “धर्म दिव्य यथार्थ की बाहरी अभिव्यक्ति है। इसलिए उसे जीवन्त, ऊर्जस्वित, गतिशील और विकासमान होना चाहिए।” “विज्ञान मनुष्य के प्रति ईश्वर का प्रथम प्रस्फुटन है। सभी रचित वस्तुओं में भौतिक पूर्णता की क्षमता निहित है लेकिन बौद्धिक खोज और वैज्ञानिक उपलब्धि एक उच्चतर गुण है जो केवल मनुष्य को ही प्राप्त है।” तर्क और आस्था के बीच के काल्पनिक द्वैतवाद से बचना चाहिए – एक ऐसा द्वैतवाद से जो तर्क को अनुभवजन्य प्रमाण तथा तार्किक बहस के दायरे तक सीमित करके रख देगा और जो आस्था का सम्बंध अधविश्वास एवं तर्कहीन विचार से जोड़ देगा। विकास की प्रक्रिया को तर्कसंगत एवं सुव्यवस्थित होना चाहिए – उदाहरण के लिए, उसमें विचारों का प्रेक्षण करने, मापने और कठोर परीक्षण करने की वैज्ञानिक सामर्थ्य होनी चाहिए। साथ ही, उसे, उदाहरण के लिए, सद्गुण, सच्चरित्रता, उच्च संकल्प, सहयोग और त्यागपूर्ण प्रयास में योगदान देने वाली आस्था एवं आध्यात्मिक मान्यताओं से भी गहन रूप से परिचित होना चाहिए।

सार्वभौमिक प्रतिभागिता

वह मानवजाति जो क्रमिक सामाजिक विकास के आरंभिक चरणों से गुजर कर अब अपनी परिपक्वता की अवस्था को प्राप्त कर रही है, उसके उपयुक्त

सभ्यता का अभ्युदय केवल कुछ चुने हुए राष्ट्रों के समूहों अथवा राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय एजेन्सियों के नेटवर्क के प्रयासों के माध्यम से नहीं होगा। बल्कि, इस चुनौती का सामना समस्त मानवजाति को करना होगा। मानव परिवार के हर सदस्य को एक भौतिक एवं आध्यात्मिक रूप से समृद्ध सभ्यता से न केवल लाभ ग्रहण करने का अधिकार है बल्कि उसके निर्माण में अपना योगदान देना भी उसका कर्तव्य है। अतः, सामाजिक क्रिया को चाहिए कि वह सार्वभौमिक प्रतिभागिता के सिद्धान्त पर संचालित हो।

प्रतिभागिता सम्बंधी मुद्दों के बारे में विकास साहित्य में विस्तार से चर्चा की गई है। इसके बावजूद, सैद्धांतिक और व्यावहारिक दोनों ही रूपों में, इस महत्वपूर्ण सिद्धान्त पर तकनीकी स्तर पर विमर्श किया गया है – उदाहरण के लिए, सर्वेक्षणों और फोकस ग्रुपों का उपयोग करके। निरसंदेह, ऐसे उपायों के अपने लाभ हैं – वैसे ही जैसे कि राजनीतिक प्रक्रियाओं में भागीदारी बढ़ाने के उद्देश्य से किए गए महत्वाकांक्षी प्रयासों के अथवा किसी भी सरकारी या गैर-सरकारी एजेन्सी द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं के हितग्राहियों को प्रशिक्षण प्रदान करने के। किंतु फिर भी, ऊपर जिस प्रकार की प्रतिभागिता की संकल्पना की गई है उसके लिए ये उपाय बहुत ही कम हैं। किसी भी खास क्षेत्र में जिस उपाय को लागू

किए जाने की आवश्यकता प्रतीत होती है वह है रीखने की एक सामूहिक प्रक्रिया में ज्यादा से ज्यादा संख्या में लोगों और संस्थाओं की भागीदारी – ऐसी भागीदारी जिसका ध्यान एक ऐसे मार्ग की प्रकृति और गतिमयता पर केंद्रित हो जो उनके गांव या पड़ोसी समुदायों की भौतिक और आध्यात्मिक प्रगति के लिए लाभकारी हो।

यहां इस बात पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि सामाजिक और आर्थिक विकास के बहाई प्रयत्नों का उद्देश्य सभी मान्यताओं के लोगों की सेवा करना है और वे यथासंभव ज्यादा से ज्यादा व्यापक प्रतिभागिता को साकार करने के लिए प्रयत्नशील होते हैं। बहाई धर्म में धर्म-परिवर्तन (धर्मांतरण) करवाना मना है और विकास परियोजनाओं का परिचालन जन-सम्पर्क बढ़ाने या लोगों के धर्म बदलने के लिए नहीं किया जाता। परियोजनाओं का संचालन अक्सर सरकारी एजेंसियों और लोक समाज के समान उद्देश्य वाले संगठनों के साथ मिलकर किया जाता है। समुचित परिप्रेक्ष्य में, मानवतावादी प्रकृति की परियोजनाओं के लिए सरकार या दानदाता एजेंसियों से आर्थिक सहायता स्वीकार की जा सकती है, लेकिन अपने समुदाय के आंतरिक मामलों को बढ़ावा देने के लिए बहाई लोग बाहरी स्रोतों से धन को स्वीकार या उसका उपयोग नहीं करते। निरसंदेह, धर्म की शिक्षाओं के बारे में जानने और यदि वे चाहें तो उसमें भाग लेने के अवसर उपलब्ध रहते हैं। उरी प्रकार, अनेक प्रकार की सामुदायिक गतिविधियां भी होती हैं जिनमें उपासना और शिक्षा सम्बंधी कार्यक्रम शामिल हैं, जिनमें भागीदारी निभाने के लिए हर किसी का स्वागत किया जाता है, चाहे वे किसी भी धार्मिक पृष्ठभूमि के हों। तथापि, विकास सम्बंधी क्रियाकलापों का उद्देश्य बहाइयों और उनके सहयोगियों को मानवजाति की निःस्वार्थ सेवा के कार्य में शामिल करना है।

चूंकि बहाई समुदाय का दायरा विश्वव्यापी है, अतः वह वर्तमान समाज में व्याप्त शहरी और ग्रामीण तथा “विकसित” और “विकासशील” जैसे विभाजनों से ऊपर उठकर काम करता है। बहाई लोग चाहे जिस किसी देश में रहते हों – अपनी जन्मभूमि में या कहीं अन्य – वे विकास के बारे में रीखने की प्रक्रिया में भाग लेते हैं और उस राष्ट्रीय समुदाय के सदस्यों के रूप में अपनी प्रतिभा का योगदान देते हैं। सहयोग पर टिके हुए ये सम्बंध राष्ट्रीय सीमाओं से भी परे जाते हैं और भौतिक रूप से ज्यादा समृद्ध देशों के संसाधन कम साधन-सम्पन्न देशों की ओर प्रवाहित होते हैं। ऐसा करते हुए, बहाई लोग यह मानते हैं कि विकास के अपने-अपने रास्तों का खाका तैयार करना और अपने मामलों का स्वयं निर्देशन करना सभी लोगों का अधिकार है और बहाई प्रशासनिक संरचना इस अधिकार की रक्षा करती है।

इस प्रकार, हालांकि किसी भी परियोजना के लिए बाहरी सहायता और संसाधन तत्परता से उपलब्ध हो सकते हैं लेकिन ऐसी सहायता को रचनात्मक रूप से उपयोग में लाने की क्षमता मौजूद है या नहीं, यह निर्णय करने का काम निर्देशन करने वाले लोगों पर ही छोड़ दिया जाता है।

क्षमता-निर्माण

जब विकास को रीखने की एक सामूहिक प्रक्रिया में ज्यादा से ज्यादा लोगों की प्रतिभागिता के रूप में देखा जाता है तो क्षमता-निर्माण की अवधारणा विशेष महत्व ग्रहण कर लेती है – एक ऐसी अवधारणा जिस पर विकास सम्बंधी समसामयिक विचारों और अभ्यासों के अंतर्गत ज्यादा से ज्यादा ध्यान दिया जाता है। हालांकि सामाजिक क्रिया के किसी भी कार्यक्रम का उद्देश्य स्वाभाविक रूप से किसी आबादी के जीवन के कुछ पहलुओं को बेहतर बनाना होगा लेकिन वह केवल वस्तुओं और सेवाओं के प्रबंधन पर ध्यान केंद्रित नहीं कर सकता – जो विकास सम्बंधी एक ऐसी अवधारणा है जिसमें अक्सर पितृसत्तात्मकता की प्रवृत्ति रहती है और जो ऐसे तरीकों को नियोजित करती है जो उन लोगों को अशक्त बना सकती है जिन्हें परिवर्तन का नायक होना चाहिए था। परिस्थितियों को बेहतर बनाने के लिए विशिष्ट लक्ष्यों का निर्धारण और उन्हें प्राप्त करना सामाजिक क्रिया के लिए वैध स्रोतों का विषय है; लेकिन विकास क्षेत्र में यह सतत रूप से स्पष्ट होता गया है कि प्रगति में योगदान देने के लिए प्रतिभागियों की क्षमता में साथ ही साथ विकास होना कहीं ज्यादा आवश्यक है। इसमें कोई संदेह नहीं कि क्षमता-निर्माण का काम केवल व्यक्तियों के लिए प्रासंगिक नहीं है बल्कि वह सभ्यता के विकास के अन्य दो नायकों – संस्थाओं और समुदाय – पर भी बराबर रूप से लागू होता है।

व्यक्ति के लिए, क्षमता-निर्माण का अभिप्राय है बहुत-सी अंतर्सम्बंधित सामर्थ्य को विकसित करना – वैज्ञानिक, कलात्मक, तकनीकी, सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक। व्यक्तियों को अवधारणाओं की समझ, तथ्यों के ज्ञान, विधियों में दक्षता और साथ ही एक उत्पादक जीवन जीने की दिशा में अग्रसर करने वाली कुशलताओं, अभिवृत्तियों और गुणों से भी विभूषित होना चाहिए। समुदाय की दृष्टि से, क्षमता-निर्माण उसके विकास के पोषण की ओर ले जाता है ताकि वह संस्कृति को समृद्ध करने वाले अनुकूल वातावरण के रूप में क्रियाशील हो सके। वह परिवेश उपलब्ध कराने की चुनौती समुदाय पर ही आश्रित है जिसमें व्यक्तियों की इच्छाशक्तियां मिल सकें, जिसमें शक्तियों में कई गुणा वृद्धि हो और वे सामूहिक क्रिया के रूप में झलक उठें और जिसमें

“अब हमें उन सभी साधनों को थाम लेने के लिए उच्च संकल्प के साथ उठ खड़ा होना चाहिए जो सम्पूर्ण मानवजाति की शांति और कल्याण तथा प्रसन्नता, ज्ञान, संस्कृति और उद्योग, गरिमा, मूल्य और पद को उन्नत करते हों।”

– अब्दुल-बहा



युनाइटेड स्टेट्स

मानव-चेतना की उच्चतर अभिव्यक्तियाँ प्रकट हो सकें।

व्यक्तियों के प्रशिक्षण और सामुदायिक जीवन के विकास से भी कहीं आगे बढ़कर, विकास सम्बंधी कार्यनीतियों में संस्थात्मक क्षमता को मजबूत बनाने पर ध्यान देना होगा। समाज के प्रत्येक स्तर पर, ऐसी संस्थाओं की जरूरत है जो ऐसे माध्यमों के रूप में काम कर सकें जिनसे व्यक्तियों की प्रतिभाएं और ऊर्जाएं मानवजाति की सेवा के रूप में स्वयं को अभिव्यक्त कर सकें। अनेक उपलब्धियों में से वह एक जिस पर बहाई समुदाय को विशेष गर्व है वह है इसके अस्तित्व के 180 वर्षों में – कई बार अत्यंत प्रतिकूल परिस्थितियों में – निर्वाचित संस्थाओं की एक ऐसी संरचना तैयार करना जो स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तरों पर काम करती हैं। संस्थाओं का यह सामूहिक पदक्रम निर्णय-प्रक्रिया को व्यावहारिक रूप से निम्नतम स्तर तक ले जाता है— और इस प्रकार आधारभूत स्तर पर क्रिया का एक अनूठा संवाहक उपलब्ध कराता है – जबकि वह साथ ही साथ संयोजन और प्राधिकार का एक स्तर भी उपलब्ध कराता है जो वैश्विक स्तर पर सहयोग को संभव बनाता है। पूरे विश्व में विकास सम्बंधी बहाई प्रयास इसी प्रशासनिक व्यवस्था द्वारा प्रदत्त मार्गदर्शन और सहायता से लाभान्वित होते हैं।

जैविक वृद्धि

बहाई दृष्टिकोण से, विकास के क्षेत्र में होने वाली प्रगति व्यापक रूप से समुदाय के आधारभूत स्तरों पर स्वाभाविक स्पर्दनों पर निर्भर करती है और उसे ऐसे ही स्पर्दनों से अपनी प्रेरक शक्ति प्राप्त करनी चाहिए। अतः, सामान्य रूप से, सामाजिक और आर्थिक विकास के क्षेत्र में बहाई प्रयास ऐसे इलाकों पर उत्पन्न होते हैं जहां समुदाय का एक स्पष्ट बोध विद्यमान होता है और एक बढ़ती हुई सामूहिक चेतना और इच्छाशक्ति स्पष्ट हो रही होती है। इन प्रयासों की शुरुआत अवसर अपेक्षाकृत ऐसी छोटी-छोटी क्रियाओं से होती है जिसका प्रबंधन स्थानीय समुदाय स्वयं कर सकता हो। जब प्रतिभागियों को सफलता मिलने लगती है, वे अनुभव हासिल करते हैं और जब वे अपनी आध्यात्मिक एवं भौतिक प्रगति के लिए निर्णयों को लागू करने की क्षमता बढ़ा लेते हैं तो जटिलता का आरंभ स्वाभाविक रूप से और विकासशील तरीके से होता है। स्थानीय कार्यकलापों से ज्यादा स्थायित्वपूर्ण प्रकृति की परियोजनाओं का जन्म होता है जिनके महत्वाकांक्षी लक्ष्य होते हैं। निश्चित रूप से, ऐसी परियोजनाओं को सहारा देने के लिए संगठनात्मक संरचनाओं का निर्माण किया जाता है और इनमें से कुछ नवजात एजेंसियों के पास कार्य के एक व्यापक दायरे में कार्यक्रमों को आरंभ करने की योग्यता के

साथ-साथ पूर्ण रूप से सुसज्जित विकास संगठनों के रूप में विकसित हो जाने की अन्तर्निहित क्षमता होती है।

यदि महत्वपूर्ण प्रगति हासिल की जानी है तो किसी भी क्षेत्र में ऐसे संगठनों का अस्तित्व जरूरी है। क्योंकि हालांकि कोई पृथक परियोजना ठोस परिणाम प्रस्तुत कर सकती है किंतु फिर भी पूरे विश्व में प्राप्त किए गए अनुभव से यह दर्शित होता है कि स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि और ऐसे ही अन्य क्षेत्रों में खंडित गतिविधियाँ स्थायित्वपूर्ण विकास की दिशा में नहीं ले जाते। मानवजाति को जिन समस्याओं ने घेर रखा है उन सबका समाधान किसी भी एक विषय से नहीं हो सकता। प्रभावी विकास निर्विवाद रूप से संयोजित, अंतर्विपरी और बहुक्षेत्रीय क्रिया का आह्वान करता है। सतत विकास के लिए वांछित सुसंगति प्रदान करने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में किए जा रहे प्रयासों को समेकित करने हेतु, सैद्धांतिक एवं प्रशासनिक जटिलता के बढ़ते हुए स्तरों से निबटने में सक्षम संगठनात्मक संरचनाओं की जरूरत है। बहाई विश्व समुदाय में ऐसे संगठनों का बढ़ता हुआ नेटवर्क अच्छी तरह संकल्पित विधियों और दृष्टिकोणों को किसी भी एक देश या क्षेत्र में अन्य लोगों के साथ साझा किए जाने की अनुमति देता है और इस प्रकार वह ज्ञान के प्रवाह के लिए एक सहज माध्यम उपलब्ध कराता है।

कार्य की एक विधा के रूप में सीखना

वे चाहे किसी भी स्तर पर अपना कार्य करते हों, विकास सम्बंधी सभी बहाई प्रयासों का केन्द्रीय विषय है सीखना। एक धार्मिक समुदाय के सदस्यों के रूप में, बहाई लोग कुछ सामान्य मान्यताओं और आधारभूत सिद्धान्तों में विश्वास रखते हैं। किंतु सामाजिक रूपांतरण के क्षेत्र में इन सिद्धान्तों का विवेकपूर्ण अनुप्रयोग एक ऐसी चीज है जिसे अनुभव के माध्यम से सीखना होगा। अतः, बहाई समुदाय द्वारा पोषित समस्त सामूहिक क्रिया के मूल में है आध्यात्मिक सिद्धान्तों को लागू करने की चिन्ता। ये सिद्धान्त न केवल व्यावहारिक समाधानों की दिशा में इंगित करते हैं, बल्कि वे उनके क्रियान्वयन को सहज बनाने वाले अभिवृत्तियों, इच्छा और गतिशीलताओं को भी प्रेरित करते हैं। सीखने की प्रक्रिया के लिए विज्ञान की विषयवस्तु और उसके तरीके भी कम महत्वपूर्ण नहीं हैं, क्योंकि धार्मिक सत्य का मतलब केवल गूढ़ विषयों के बारे में बताना नहीं है, बल्कि ऐसे कथन भी जो उन प्रणालियों और प्रक्रियाओं को प्रयोग में लाने, उन्हें लागू करने और उनकी रचना की ओर ले जाते हैं जिनके परिणामों का सत्यापन निरीक्षण और तर्क के प्रयोग के माध्यम से किया जा सकता है। इसके अलावा, समाज की उन्नति के लिए

भौतिक साधनों में इजाफा करना जरूरी है और उन साधनों का सृजन अर्थशास्त्र, कृषि और पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्रों में वैज्ञानिक प्रयासों के माध्यम से ही हो सकता है। अतः रीखाने की एक प्रक्रिया के रूप में विकास का सर्वोत्तम वर्णन अध्ययन, परामर्श, क्रिया और क्रिया की समीक्षा के रूप में किया जा सकता है – और ये सभी कार्य धार्मिक शिक्षाओं में निहित मार्गदर्शन और विज्ञान से प्राप्त ज्ञान के प्रकाश में किए जाते हैं।

जब इस तरह प्रयास किए जाते हैं तो संकल्पनाओं और कार्यनीतियों का बार-बार फिर से जांचा-परखा जाता है। जब कार्य पूरे कर लिए जाते हैं, बाधाओं को दूर कर लिया जाता है, संसाधनों में कई गुणा वृद्धि कर ली जाती है और सबक सीख लिए जाते हैं तो लक्ष्यों और विधियों में बदलाव किए जाते हैं। रीखाने की प्रक्रिया जिसे समुचित संस्थात्मक व्यवस्थाओं के माध्यम से दिशाबोध दिया जाता है, एक ऐसे रूप में उन्मीलित होती है जो किसी भी सजीव वस्तु में होने वाले विकास और भिन्नता के समान लगती है। बेतरतीब बदलाव से बचा जाता है और क्रिया की निरंतरता बरकरार रखी जाती है।

विश्वव्यापी बहाई समुदाय में, विकास के बारे में रीखाने की प्रक्रिया अनेक स्तरों पर प्रकट होती है। बुनियादी रूप से, उसका अभ्युदय स्थानीय स्तर पर पूरे विश्व में गांवों और पड़ोसी समूहों में होता है जहां सतत बढ़ती हुई संख्या में लोग और संस्थाएं अपने समुदायों की भौतिक एवं आध्यात्मिक प्रगति को बढ़ावा देने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। इन प्रयत्नों की प्रभावशीलता इस हद तक बढ़ती है कि वे सम्पूर्ण मानवजाति की भौतिक एवं आध्यात्मिक समृद्धि से सरोकार रखने वाली रीखाने की वैश्विक प्रक्रिया में योगदान देने और उससे रीखाने में सक्षम होते हैं। अतः, विकास के बारे में रीखाने की क्रिया को सहज बनाने के लिए, स्थानीय से लेकर राष्ट्रीय, सभी स्तरों पर संरचनाओं की जरूरत है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर, बहाई धर्म के हाइफा (इजरायल) स्थित विश्व मुख्यालय पर, बहाई अंतर्राष्ट्रीय विकास संगठन की स्थापना की गई है। विकास सम्बंधी बहाई प्रयासों को बढ़ावा देने के लिए, यह सभी देशों में संस्थात्मक क्षमता को मजबूत बनाने के काम में मदद देता है, यह सुनिश्चित करता है कि ऐसे प्रयासों के लिए भौतिक संसाधन सतत बढ़ते हुए रूप में उपलब्ध रहें तथा उठने वाले सवालों के प्रत्युत्तर में दुनिया भर में प्राप्त की गई अंतर्दृष्टियों के आधार पर सामान्य सलाह प्रदान करता है। अपने-अपने समाजों के विकास में जुटे हुए नित बढ़ती हुई संख्या में व्यक्ति, एजेंसियों और समुदायों की भागीदारी के कारण संभव हुए विश्वव्यापी अनुभव के सुव्यवस्थाकरण के प्रति समर्पित, यह विकास संगठन स्वयं को रीखाने के



लिए प्रतिबद्ध एक संस्था के रूप में देखता है। अतः, विकास सम्बंधी जिस दृष्टिकोण पर ध्यान केन्द्रित होता है वह “ऊपर से नीचे” या “नीचे से ऊपर” जैसी श्रेणियों में बांटने की प्रवृत्ति से बचता है, बल्कि वह पारस्परिकता और एक-दूसरे से जुड़े होने का दृष्टिकोण है।

आगे के पन्नों में विकास के क्षेत्र में बहाइयों द्वारा किए जा रहे प्रयासों की एक झलक दिखाई गई है। हालांकि यहां उन पर गहन चर्चा नहीं की गई है, लेकिन जो कतई कम महत्वपूर्ण नहीं है, वह है उन हजारों-हजार बहाइयों द्वारा विकास के क्षेत्र में दिए गए योगदान जो मानवजाति के भविष्य को बेहतर बनाने के लिए, अपने प्रोफेशनल जीवन में, अनेक एजेंसियों के समूह के दायरे में क्रियाशील हैं – सार्वजनिक सेक्टर और नागरिक समाज दोनों में।

ऊपर: केनयी आइलैंड। नीचे बाएं और दाएं: युनाइटेड स्टेट्स





बहाई विकास पहलों की एक झलक

बहाई दुनिया के प्रायः प्रत्येक देश और प्रदेश में फैले 100,000 स्थानों में रहते हैं और अन्य लोगों के साथ मिलकर काम करते हैं। यदि उन सबको साथ मिलाकर देखें तो कहा जा सकता है कि वे सम्पूर्ण मानवजाति की विविधता को प्रस्तुत करते हैं। वे जहाँ कहीं भी रहते हैं, बहाई परिवार और उनके मित्रगण बहाई शिक्षाओं से अंतर्दृष्टि ग्रहण करने और उन्हें अपने समुदायों की आध्यात्मिक और भौतिक प्रगति के संदर्भ में लागू करने के प्रयास में जुटे रहते हैं। सीखने की इच्छा की विशेषता से सम्पन्न विधा में और सत्य को बिल्कुल समझ लेने का दावा किए बगैर, वे समुदाय-निर्माण की एक ऐसी प्रक्रिया में योगदान देने के लिए कार्यशील हैं जिसमें सब भाग लेने के लिए स्वतंत्र हैं, चाहे उनकी धार्मिक पृष्ठभूमि कुछ भी हो, उनका सामाजिक पद-स्थान, लिंग, जाति, या नस्ल चाहे जो भी हो। वे मानवजाति के भविष्य के लिए आशा जगाने, उद्देश्यपूर्ण प्रयत्नों को पोषित करने और दुनिया में उन सब लोगों के प्रयत्नों का समारोह मनाने का प्रयास करते हैं जो एकता को बढ़ावा देने और मनुष्य के कष्टों को कम करने के लिए कार्य कर रहे हैं।

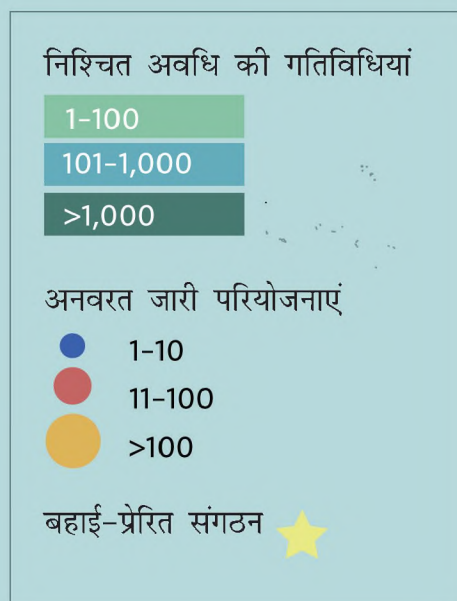
जीवन के सभी क्षेत्रों के सहयोगियों के साथ मिलकर बहाइयों द्वारा किए जाने वाले प्रयासों में वे प्रयास शामिल हैं जिनका उद्देश्य उन समुदायों और राष्ट्रों का सामाजिक और आर्थिक विकास है जिनका वे हिस्सा हैं। ऐसे कार्यलापों की जटिलता भिन्न-भिन्न प्रकार की है। उनमें व्यक्तियों के छोटे-छोटे समूहों द्वारा शुरू

किए जाने वाले कम अवधि वाले अनौपचारिक प्रयास भी शामिल हैं, समय बीतने के साथ ज्यादा स्थायी रूप से चलने वाली परियोजनाएं और बहाई-प्रेरित विकास संस्थाओं द्वारा क्रियान्वित ऐसे कार्यक्रम भी जो परिष्कृत हैं और जिनकी जटिलता थोड़ी उच्चतर स्तर की है। परिस्थितियां चाहे जो भी हों, किसी भी खास समय में ऐसी सामाजिक क्रिया का दायरे और उसकी जटिलता को किसी भी समुदाय में रहने वाले उन लोगों की संख्या और क्षमताओं के समरूप होना चाहिए जो उसका संचालन करेंगे। जैसा कि पिछले खंड में उल्लेखित है, जटिलता का विकास सहज रूप से होता है।

एक स्पेक्ट्रम में वह चाहे जहाँ भी आता हो, सामाजिक क्रिया का हर प्रयास समाज के भौतिक जीवन के कुछ पहलुओं को बेहतर बनाने के लिए बहाई शिक्षाओं में निहित अवधारणाओं और सिद्धान्तों को लागू करने की कोशिश का परिचायक है। अगले कुछ खंडों में एक स्पेक्ट्रम में विभिन्न मुकामों पर विकास सम्बंधी गतिविधियों का एक चित्रण प्रस्तुत किया गया है और यह चर्चा की गई है कि ऐसे प्रयासों का अभ्युदय कैसे होता है। निम्नांकित मानचित्र में दुनिया भर के देशों में इन गतिविधियों के पैमाने का चित्र प्रस्तुत किया गया है।

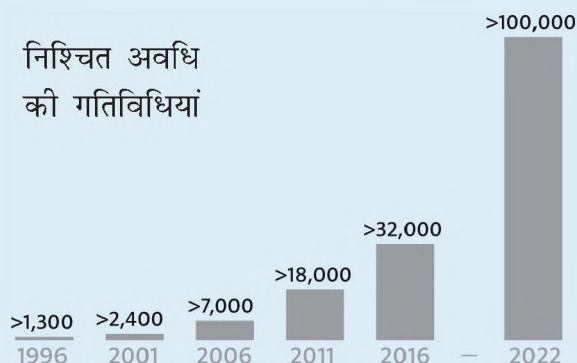


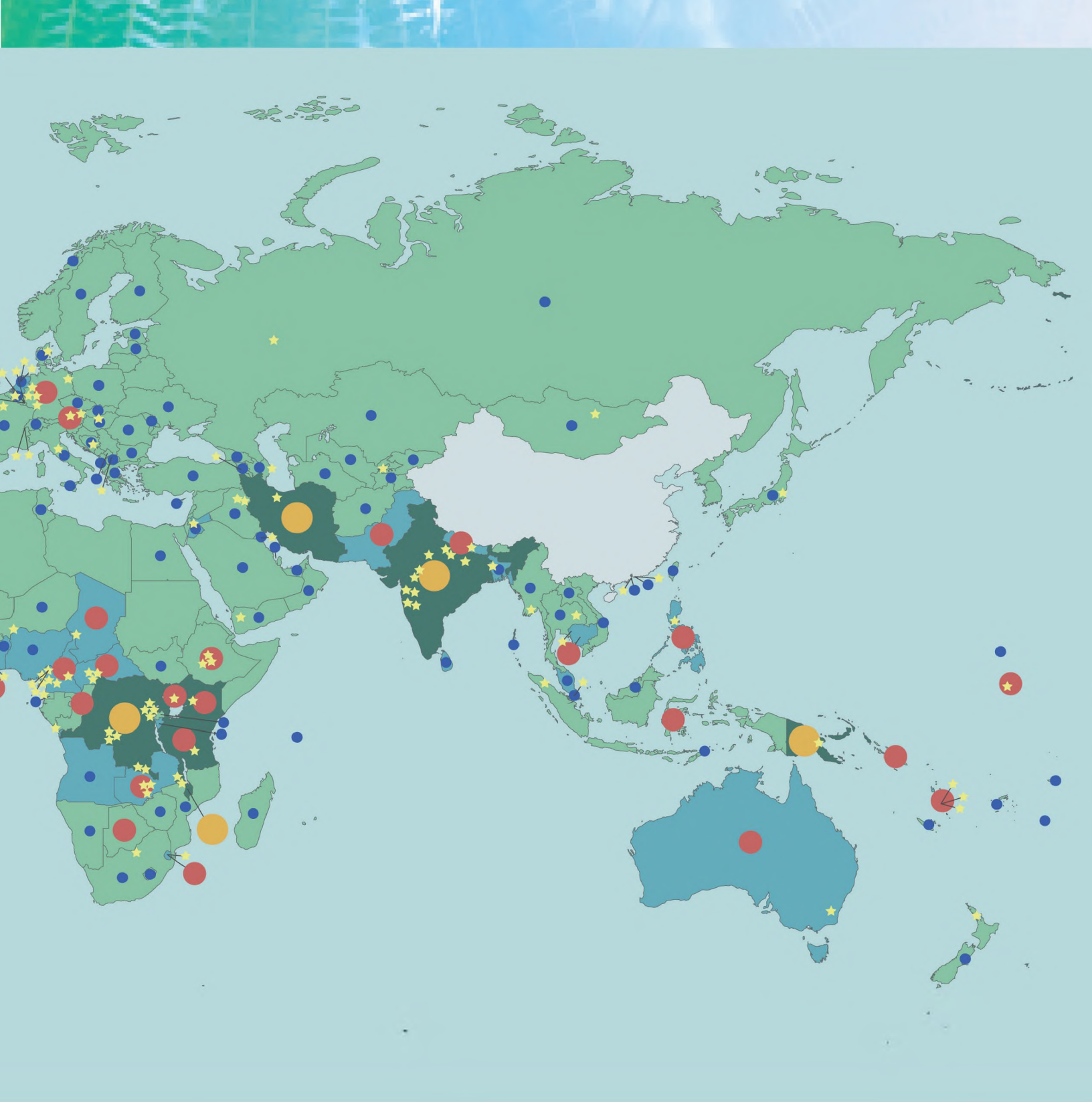
दुनिया भर में विकास सम्बन्धी बहाई गतिविधियां



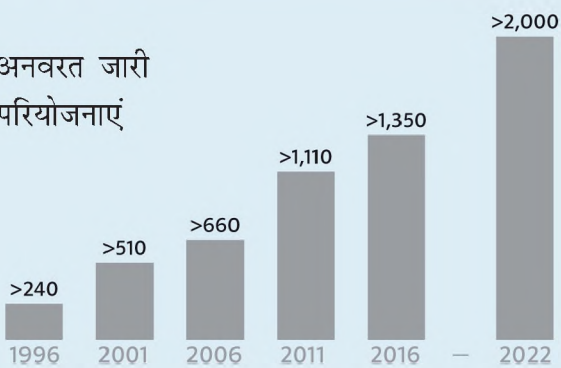
1996-2022 के दौरान विकास गतिविधियों की संख्या के रुझान*

* दी गई संख्याएं राष्ट्रीय बहाई संस्थाओं द्वारा बहाई अंतर्राष्ट्रीय विकास संगठन को प्रदान की गई सूचनाओं पर आधारित पारंपरिक आकलन हैं। इन श्रेणियों के बारे में और अधिक व्याख्या के लिए पृष्ठ 18 से 33 देखें।

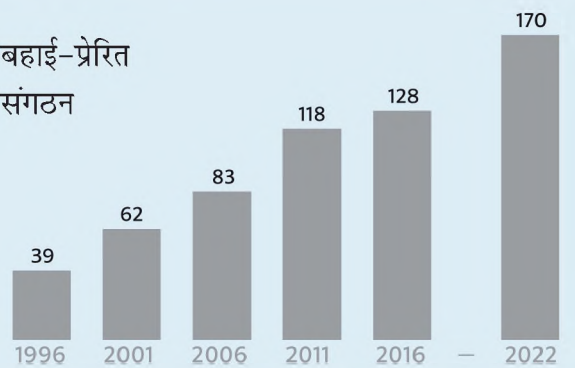




अनवरत जारी परियोजनाएं



बहाई-प्रेरित संगठन



प्रथम स्पंदन

सामाजिक क्रिया के प्रथम स्पंदन को लोगों द्वारा अपने भीतर समाज की सामाजिक और भौतिक प्रगति के लिए आध्यात्मिक सिद्धांतों को कार्यान्वित करने की क्षमता विकसित करने के संकेत के रूप में देखा जा सकता है। ऐसी अधिकतर पहलें जो पैमाने में सामान्यतः साधारण होती हैं स्वभावतः अत्यंत अनौपचारिक और सीमित अवधि की होती हैं।

“उसका दायरा या पैमाना
चाहे जो भी हो, सभी
सामाजिक क्रिया, मामूली स्तर
पर ही सही, किसी जनसमूह
के सामाजिक या आर्थिक
जीवन के किसी न किसी
पहलू को बेहतर बनाने के
लिए प्रभुधर्म की शिक्षाओं
और सिद्धान्तों को लागू करने
का प्रयास करते हैं।”

– विश्व न्याय मंदिर

बहाई लोग सामुदायिक जीवन का जो पैटर्न बुनने के प्रयास में जुटे हुए हैं वह सर्वसामान्य के कल्याण को बढ़ावा देने वाली गतिविधियों के साथ-साथ उपासना के क्रियाकलापों को भी जोड़ता है। इन प्रयासों के केंद्र में है सीखना। अपने स्थानीय समुदाय के अन्य सदस्यों के साथ एकत्रित होकर – चाहे वे किसी भी मान्यता और पृष्ठभूमि के लोग हों – व्यक्तियों के समूह अध्ययन, क्रिया, परामर्श और सीखने की सतत जागी प्रक्रिया के माध्यम से यह अन्वेषण करते हैं कि आध्यात्मिक शिक्षाओं को उस गांव या पड़ोसी समुदाय के जीवन में, जहां वे रहते हैं, कैसे साकार किया जा सकता है। एक ऐसे वातावरण में जो श्रेष्ठता की किसी भी भावना से मुक्त है, मित्रों के ये छोटे-छोटे समूह उन विषय-सामग्रियों का अध्ययन करते हैं जो उन्हें अपने समुदायों की सेवा करने के लिए वांछित कौशल, अभिवृत्तियों, गुणों और ज्ञान को अर्जित करने में सहायक होते हैं। प्रतिभागियों की ऊर्जा को परामर्श के माध्यम से क्रियाशील किया जाता है, जो कि बहाई लेखों में निरूपित सामूहिक निर्णय लेने की एक प्रक्रिया है। एक ऐसा अवसर प्रदान करने के अलावा जिसमें सामूहिक निर्णय लिए जा सकते हैं, परामर्श की क्रिया दृष्टिकोणों में सामंजस्य स्थापित करने, समुदाय के विभिन्न सदस्यों के बीच एकता को बढ़ावा देने, व्यक्तियों और संस्थाओं के बीच विश्वास और प्रेम के बंधन को मजबूत करने और प्रस्तुत किए जाने वाले उन जटिल विषयों में, जिन्हें निष्पक्षता से परखने की जरूरत है, नई अंतर्दृष्टियां उपलब्ध कराने के एक साधन के रूप में भी कारगर होती है।

अध्ययन और परामर्श अच्छी तरह से सूचित एवं उद्देश्यपूर्ण क्रिया की ओर अग्रसर करते हैं। व्यक्तियों और समूहों द्वारा सेवा के जो कार्य किए जाते हैं उनमें वे कक्षाएं भी शामिल हैं जिनका उद्देश्य है बच्चों की आध्यात्मिक शिक्षा, एक ऐसा नैतिक सशक्तीकरण कार्यक्रम जो एक महत्वपूर्ण एवं परिवर्तनशील आयु में युवाओं की ऊर्जा को समाज को बेहतर बनाने की दिशा में उन्मुख कर सके, अध्ययन वृत्त कक्षाएं जो युवाओं और वयस्क मित्रों में सेवा की सामर्थ्य का

विकास कर सके और सामूहिक भवितपरक सभाएं जो समुदाय के भवितपरक चरित्र को सुदृढ़ करती हैं। सेवा के ऐसे तथा अन्य कार्यों को करने के लिए उद्यत होकर, स्त्री-पुरुष, युवा और वयोवृद्ध सब लोग समान रूप से यह समझते हैं कि, शुद्ध और अच्छे कर्मों की शक्ति के माध्यम से, उनमें अपने आसपास की दुनिया को रूपांतरित करने की क्षमता निहित है।

निर्धारित अवधि की गतिविधियां

अक्सर, ऐसे इलाके में जहां क्षमता-निर्माण की इस तरह की प्रक्रिया स्थापित हो चुकी है और समुदाय की भावना स्पष्ट रूप से मौजूद है, प्रबल सामाजिक जागरूकता के प्रथम स्पंदन ऐसे छोटे समूहों के अभ्युदय के रूप में देखे जा सकते हैं जो किसी खास सामाजिक या आर्थिक सरोकार को संबोधित करते हुए उचित क्रियाओं के सरल समुच्चय की शुरुआत करें।

इस प्रकार की अधिकांश स्थानीय पहलें अनौपचारिक प्रकृति के और एक निर्धारित अवधि के लिए होती हैं और जब उनके उद्देश्य पूरे हो जाते हैं तो वे समाप्त हो जाती हैं। किसी स्थान की सामाजिक स्थितियों के आधार पर वे कार्यकलाप विभिन्न प्रकार के सरोकारों में से किसी भी एक से सम्बंधित हो सकते हैं। वे विभिन्न प्रकार के रूप ग्रहण कर सकते हैं और उनमें, उदाहरण के लिए, बच्चों को उनकी शिक्षा में सहायता करने के प्रयास, पर्यावरण सम्बंधी किसी विषय का समावेश करने वाली गतिविधियां, स्वास्थ्य से जुड़े किसी सरोकार का प्रत्युत्तर देने या किसी खास बीमारी की रोकथाम के लिए परियोजनाएं और किसी महत्वपूर्ण विषय के बारे में जागरूकता बढ़ाने के कार्य, इत्यादि शामिल हो सकते हैं। अनुमानतः, उन समुदायों में जहां बहाई लोग रहते हैं, प्रतिवर्ष इस प्रकार के 100,000 से भी अधिक कार्यकलाप हुआ करते हैं। ऐसे क्रियाकलापों के कुछ उदाहरण अगले पृष्ठ पर दिए जा रहे हैं।



ऑस्ट्रिया

निर्धारित अवधि की गतिविधियों के उदाहरण

समुदाय में अर्थपूर्ण वार्तालाप के अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से, स्टॉकहोम, स्वीडन, के एक मोहल्ले में एक परिवार ने एक खुले सार्वजनिक स्थान पर एक कला सम्बंधी कार्यशाला आयोजित की। इस प्रयास के माध्यम से, कुछ स्थानीय कलाकारों सहित अनेक स्वयंसेवकों ने मिलकर आध्यात्मिक और भौतिक रूपांतरण विषय पर एक भित्तिचित्र तैयार किया।

समाज की सेवा में युवाओं द्वारा निभाई जाने वाली महत्वपूर्ण भूमिका से प्रेरित होकर, मकेनी, सियेरा लेयोन, में युवाओं के एक समूह ने, कोविड-19 महामारी आरंभ होने पर स्वास्थ्य के लिए प्रभावकारी उपायों के बारे में जानकारी देने के लिए एक फिल्म बनाई। इस पहल ने उस घोर जरूरत की घड़ी में डॉक्टरों, गांव के अग्रणी लोगों और व्यापक समुदाय की बहुत सहायता की।

ब्राज़ील के साओ सेबेस्टियाओ में, युवाओं का एक समूह स्थानीय पर्यावरण के बारे में परामर्श में जुटा हुआ था और उन्होंने कचरों से भरी एक नदी को साफ करने का फैसला किया। समूह ने पर्यावरण की सुरक्षा के बारे में जागरूकता बढ़ाने और प्रेरणादायी समाचार साझा करने के लिए एक समाचार पत्र भी तैयार किया। समय बीतने पर, एक नगर निगम अधिकारी को सफाई के इस प्रयास के बारे में पता चला और उसने इस पहल को और मजबूत बनाने के लिए संसाधन उपलब्ध कराए।

संयुक्त राज्य अमेरिका के डरहम में, परिवारों के समूह संसाधनों को कैसे साझा कर सकते हैं और एक दूसरे की सहायता कैसे कर सकते हैं, इस पर परामर्श करने के लिए कई सामुदायिक सभाएं आयोजित की गईं। ऐसे माता-पिता जो उस देश में नए-नए आए थे, उनके लिए टीकाकरण पॉप-अप क्लीनिक और भाषा कक्षाएं सहित कई नए कदम उठाए गए।

कंबोडिया के बट्टमबांग में युवाओं के एक समूह ने गांव को सुंदर बनाने और गर्मी से सुरक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से सड़क के किनारे पेड़ लगाए। उस समय समूह को यह अनुमान भी नहीं था कि एक वर्ष बाद बाढ़ का प्रकोप होने पर उनके ये प्रयास सड़क के उस हिस्से को गंभीर कटाव से बचाएंगे।

डिली, तिमोर लेस्ते, में द्वीप पर चक्रवात का कहर टूटने के बाद, राहत प्रदान करने के लिए बहाई संस्थानों और स्थानीय अधिकारियों ने समुदायों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम किया। बहाई समुदाय ने भोजन, मच्छरदानी और अन्य आवश्यक वस्तुओं के पैकेज के वितरण की सुविधा प्रदान की जिसके कारण 13 गांवों और पड़ोसों में 7,000 से भी अधिक लोगों को सहायता प्राप्त हुई — चाहे वे किसी भी पृष्ठभूमि या मान्यता में विश्वास रखने वाले लोग रहे हों।

इस प्रकार की गतिविधियां चाहे कितनी ही साधारण क्यों न हों, वे एकता, उदारता और विश्वासपात्रता जैसे आध्यात्मिक सिद्धांतों के

प्रयोग के माध्यम से अपने स्वयं के समुदायों के सामने आने वाली विशेष चुनौतियों के प्रति लोगों की प्रतिक्रिया की परिचायक हैं। अलग-थलग देखने पर, उनका प्रभाव मामूली प्रतीत हो सकता है। फिर भी, सीखने के लिए एक समान ढांचे के अंतर्गत विभिन्न सामाजिक वास्तविकताओं में लगातार बढ़ती हुई संख्या में एकजुटता से साथ बंधे हुए लोगों द्वारा किए गए ऐसे हजारों कार्यों की रूपांतरकारी शक्ति को कम करके नहीं आंका जा सकता है। इसके अलावा, इस तरह की गतिविधियां किसी समुदाय के भीतर जैसे-जैसे बढ़ती हैं, वे सामाजिक ताने-बाने को मजबूत करने, भागीदारी और पहल की संस्कृति को प्रोत्साहित करने और परामर्श तथा सामूहिक निर्णय लेने की क्षमता बढ़ाने में मदद करती हैं — और इस प्रकार कुल मिलाकर एक ऐसे वातावरण के निर्माण में योगदान देती हैं जिसके भीतर विकास के लिए और अधिक जटिल प्रयासों का अभ्युदय हो सकता है। आगे का पृष्ठ इसका एक उदाहरण प्रस्तुत करता है।



गहन रूप में: समुदाय में पहलों की विविधता

लिलोंगे, मलावी, में एक घनी आबादी वाला इलाका है जिसका नाम है म्टेंडायर, जहां लगभग 500 घरों के एक क्षेत्र में तृणमूल स्तर की कई पहलें जारी हैं। बहाई शैक्षणिक कार्यक्रमों में भाग लेने वाले युवाओं के एक समूह ने बच्चों के लिए आध्यात्मिक शिक्षा की कक्षाएं उपलब्ध कराने और अपने घरों के आसपास किशोर समूहों (पृष्ठ 52 देखें) को आरंभ करने के लिए पहलकदमी शुरू की। इन गतिविधियों में प्रतिभागियों की संख्या बड़ी तेजी से बढ़ी क्योंकि माता-पिता ने अपने बच्चों के शैक्षणिक और नैतिक विकास में योगदान देने के प्रयासों को सहर्ष प्रोत्साहित किया। अपनी-अपनी स्वैच्छिक कक्षाएं संचालित करने में सक्षम होने के लिए प्रशिक्षण प्राप्त करने में अन्य युवाओं ने भी रुचि प्रकट की।

समय के साथ, उपासना और सेवा के कार्यों को समेकित करने वाली सामुदायिक जीवन के पैटर्न ने जड़ें जमा लीं और इसमें युवाओं के कई परिवारों को भी शामिल करने के लिए उसका विस्तार किया गया।

जब व्यक्तियों के इस बढ़ते हुए 'नाभिक' ने एकजुट होकर काम किया और अपने द्वारा किए जा रहे प्रयासों के बारे में परामर्श किया, तो आपसी सहयोग की भावना और अपने समुदाय के कल्याण की चिंता ने स्वाभाविक रूप से अतिरिक्त प्रयासों को जन्म दिया।

अनेक सेवा परियोजनाओं की शुरुआत किशोर समूहों की पहल से हुई जिनमें सहायता प्रदान करने के लिए दीमारों और वयोवृद्धों के पास विजिट करना और एक सच्ची उद्यान की स्थापना करना शामिल है जहां उत्पादित की गई खाद्य वस्तुएं जरूरतमंद लोगों के साथ साझा की जा सकती थीं। ऐसे ही एक समूह के सदस्यों ने कहा कि, "एक-दूसरे के प्रति प्रेम दर्शाना, एक साथ आना और एक ही परिवार के सदस्यों के रूप में रहना सीखना महत्वपूर्ण है। हमें उन वस्तुओं को मित्रों के साथ साझा करने की आदत विकसित करनी चाहिए जो शायद उनके पास नहीं हैं और जिनकी उन्हें जरूरत है; जब भी हमारे पास कुछ होता है, तो हमें उन लोगों के साथ साझा करना आवश्यक होता है जिनके पास वह नहीं है।"

अपने स्थानीय स्कूलों में आने वाली बाधाओं को दूर करने के प्रयास के क्रम में युवा अपनी औपचारिक शिक्षा के बारे में परामर्श करने के लिए भी नियमित रूप से इकट्ठा होते थे। उनकी बातचीत के कारण ट्यूटोरियल सहयोग के प्रबंध के लिए कई



अनौपचारिक प्रयास हुए। वे जो कुछ पहले से जानते थे उसे साझा करके एक-दूसरे की मदद करते थे, या किसी विषय में अधिक अनुभव वाले व्यक्तियों से सहायता का अनुरोध करते थे। साझा करने और एक-दूसरे की प्रतिभा से लाभ उठाने की भावना कला के क्षेत्र में भी फैली। संगीत रचना में विशेष रुचि रखने वाले कुछ युवाओं ने अपने से कम उम्र के युवाओं को अपना कौशल सिखाने के लिए अपने घर के द्वार खोल दिए। इन पाठों में, उन्होंने सकारात्मक संदेश वाले गीत बनाने का भी प्रयास किया – ऐसे गीत जो समुदाय की उच्चतम आकांक्षाओं को दर्शाते हों। इन प्रयासों के माध्यम से, युवाओं का यह व्यापक होता समूह यह सीखने का प्रयास कर रहा है कि समुदाय में मौजूद विविध प्रतिभाएं दूसरों के कल्याण में योगदान देने वाली पहलों में कैसे अभिव्यक्ति पा सकती हैं।

सामुदायिक जीवन की उभरती हुई पद्धति में घरों के नियमित भ्रमणों और सहभागी बच्चों के माता-पिता के साथ व्यक्तिगत रूप से और समूहों में बातचीत भी शामिल रही। इन वार्तालापों से यह स्पष्ट हो गया कि जो माताएं अपने बच्चों की आध्यात्मिक शिक्षा का समर्थन कर रही थीं, वे स्वयं अपनी शिक्षा को भी आगे बढ़ाने के लिए उत्सुक थीं। कई युवाओं ने अभिरुचि रखने वाले लोगों के लिए वयस्क साक्षरता कक्षाएं आयोजित करने के लिए स्वेच्छा से काम किया। अपनी आर्थिक परिस्थितियों को बेहतर बनाने



निर्धारित अवधि वाली गतिविधियों के बारे में कुछ और

कनाडा और फ्रांस: मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता अभियान (पृ. 64, “स्वास्थ्य” के अंतर्गत)

एक्वाडोर और केन्या: पारिस्थितिकी जागरूकता अभियान (पृ. 66, “पर्यावरण” के अंतर्गत)

बहरीन और नेपाल: वृक्षरोपण की पहलें (पृ. 66, “पर्यावरण” के अंतर्गत)

कोस्टा रिका और ब्राज़ील: नदी सफाई परियोजनाएं (पृ. 66, “पर्यावरण” के अंतर्गत)

वानुआतु: किशोरों के लिए पर्यावरणीय जागरूकता सेवा परियोजनाएं (पृ. 67, “पर्यावरण” के अंतर्गत)

ट्यूनीशिया: सहयोग की संस्कृति को बढ़ावा देने वाला सम्मेलन (पृ. 71, “महिलाओं की उन्नति” के अंतर्गत)

ऑस्ट्रेलिया: आशा की प्रेरणा देने के लिए युवाओं द्वारा गीतों की रचना (पृ. 75, “कला और मीडिया” के अंतर्गत)

मोज़ाम्बिक और मलेशिया: बाढ़ के बाद आपूर्ति-सामग्रियों का वितरण (पृ. 76, “मानवतावादी राहत” के अंतर्गत)

संयुक्त राज्य: महामारी में राहत प्रदान करते युवा (पृ. 78, “मानवतावादी राहत” के अंतर्गत)

इटली: आशा की प्रेरणा देने के लिए युवाओं द्वारा गीतों की रचना (पृ. 78, “मानवतावादी राहत” के अंतर्गत)

भारत: बहाई संस्था द्वारा परिवारों को खाद्य-सामग्रियों का वितरण (पृ. 78, “मानवतावादी राहत” के अंतर्गत)

इराक़: टास्क फ़ोर्स द्वारा स्वास्थ्य सहायता प्रदान किया जाना (पृ. 79, “मानवतावादी राहत” के अंतर्गत)

जोर्डान और स्पेन: मीडिया सम्बंधी प्रयास और महामारी के बारे में जानकारी (पृ. 79, “मानवतावादी राहत” के अंतर्गत)

हेतु आय-सृजन वाली छोटी-मोटी गतिविधियां शुरू करने के लिए कुछ युवा माताओं ने भी मिलकर काम करना शुरू कर दिया। अंततः, दो बचत समूह बनाए गए जिससे प्रतिभागी अपनी व्यावसायिक गतिविधियों के लिए छोटे-मोटे ऋण प्राप्त करने में सक्षम हुए।

स्वाभाविक रूप से, मित्रगण समुदाय के ऐसे विभिन्न प्रोफेशनल लोगों और संस्थाओं के प्रति भी अधिक जागरूक हुए जो जनसमूह की भलाई के लिए काम कर रहे थे। उसके बाद, तृणमूल स्तर पर उभरने वाली कुछ पहलों में किसी न किसी चुनौती को हल करने में मदद करने के लिए इन एजेंसियों के साथ सहयोग करना शामिल था। एक उदाहरण में, जब वे रीच में ही स्कूल छोड़ देने वाली कुछ युवा लड़कियों की सहायता करने के बारे में परामर्श कर रहे थे, तो मित्रगण लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देने में शामिल समुदाय की एक संस्था के पास पहुंचे। उस संस्था की सहायता से, वे लड़कियों को फिर से स्कूल में प्रवेश पाने में सहायता देने में सक्षम हुए। एक अन्य उदाहरण के रूप में, जब कोविड-19 महामारी फैली, तो युवाओं ने स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में जुटे एक सामुदायिक समूह के साथ स्वेच्छा से काम किया और इस बीमारी के बारे में आस-पड़ोस में जागरूकता फैलाने और इसकी रोकथाम तथा उपचार के तरीकों में सहायता पहुंचाई।

जो अनुभव प्राप्त हुआ है और आपसी सहयोग तथा परामर्श की जो संस्कृति उभरी है, उसके आधार पर युवा और उनके परिवार भी अधिक निरंतर और जटिल उपक्रमों के प्रबंधन के बारे में सीखना शुरू कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, हाल ही में पड़ोसी समूह में एक सामुदायिक डी-स्कूल स्थापित किया गया था जिसे स्थानीय संसाधनों द्वारा पोषित किया गया। परिवारों और शिक्षकों की संकल्पना यह है कि शिक्षक प्रशिक्षण प्रदान करने वाली एक नजदीकी बहाई-प्रेरित संस्था की सहायता से यह (स्कूल) धीरे-धीरे प्राथमिक शिक्षा के सभी ग्रेड प्रस्तुत करने के लिए तैयार हो जाएगा।



समुदाय-आधारित सतत जारी परियोजनाएं

प्रतिवर्ष निर्धारित अवधि की एक लाख से भी अधिक आधारभूत स्तर की पहलों के संचालन के अतिरिक्त, बहाई लोग - जो अक्सर दूसरों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करते हैं - 2,000 से भी अधिक सतत रूप से जारी परियोजनाओं में जुटे हुए हैं जो समय के साथ लगातार चलती रहती हैं और सामान्यतः बड़े दायरे की होती हैं। ऐसे कुछ कार्यक्रमलाप उन छोटे-छोटे प्रयासों से उभरे हैं जिनका वर्णन पिछले पन्नों में किया गया है, जबकि कुछ अन्य प्रारंभ से ही संरचित परियोजनाओं के रूप में स्थापित हैं।

“बीज अचानक वृक्ष नहीं बन जाता; ध्रुण तुरन्त ही मनुष्य नहीं बन जाता; खनिक पलक झपकते पत्थर में नहीं बदल जाता; नहीं, बल्कि ये सभी चीजें क्रमिक रूप से तब तक विकसित होती रहती हैं जबतक वे पूर्णता की सीमा न प्राप्त कर लें।”

- अब्दुल-बहा

जब आधारभूत स्तरों पर सामाजिक क्रिया की अनौपचारिक पहलें उभर कर सामने आती हैं तो ऐसी परिस्थितियां आ सकती हैं जिनमें परामर्श, क्रिया और समीक्षा की प्रक्रिया के माध्यम से कुछ प्रयास और भी ज्यादा सतत प्रकृति के प्रयासों को उत्पन्न करें। ऐसा तब होता है जब किसी विशेष प्रयास में जुटे मित्र उसके सार्थक परिणाम प्रकट होते देखते हैं, पहले से अधिक अनुभव प्राप्त करते हैं और सुव्यवस्थित कार्य के लिए रचनात्मक मार्गों की पहचान करते हैं। कुछ उदाहरणों में, किसी दीर्घकालिक परियोजना की कल्पना आरंभ से ही की जा सकती है।

यह देखते हुए कि विकास के क्षेत्र में बहाई प्रयासों के केन्द्र में क्षमता निर्माण है, सतत जारी सामाजिक क्रिया के प्रयासों का स्वामित्व स्वयं समुदाय के पास ही होना चाहिए। इस आलोक में, इसमें शामिल लोग वास्तविकता के अध्ययन से संसूचित होकर और किसी भी अनुचित बाहरी प्रभाव के बिना, अपनी गतिविधियों के दायरे को क्रमिक रूप से बढ़ाते हैं। उनके कार्य करने का तरीका क्रियाशील रूप से रखने का तरीका है। हालांकि किसी भी संकेन्द्रित क्रिया से अपेक्षा की जाती है कि वह समय के साथ ठोस परिणाम प्रस्तुत करेगी किंतु सफलता को मुख्यतः इस रूप में मापा जाता है कि क्रमिक रूप से जटिलतर और ज्यादा प्रभावशील स्तर पर विकास के मुद्दों को संबोधित करने के लिए जनसमूहों की क्षमता विकसित करने पर उस क्रिया का कितना असर हुआ है।

जहां भी ऐसे उद्यम उभर रहे हैं वहां स्थानीय बहाई प्रशासनिक संस्थाओं ने भी प्रोत्साहन और सहायता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। नैतिक प्राधिकार की आवाज के रूप में, वे यह सुनिश्चित करने में मदद करती हैं कि अपने समाज की स्थितियों को बेहतर बनाने के लिए काम करने वाले व्यक्तियों के समूह इस तरह से आगे बढ़ें कि वह सामुदायिक जीवन की अन्य प्रक्रियाओं के साथ

अधिकाधिक सुसंगत हो और विश्वासपात्रता, अखंडता और निःस्वार्थ सेवा जैसे सिद्धांतों के अनुरूप हो। बढ़ती हुई संख्या में अनेक स्थानों में, समुदाय ऐसे आशाजनक शैक्षणिक कार्यक्रमों का लाभ उठाने में सक्षम हैं जिन्हें कहीं अधिक विकसित किया गया है और जो उनकी स्थानीय वास्तविकता के अनुरूप हैं (पृ. 80-85 पर और अधिक देखें)। ऐसे कार्यक्रम किसी समुदाय में मौजूद व्यवस्थित और संस्थागत क्षमताओं को सुदृढ़ करने का काम करते हैं, जो अक्सर सामुदायिक जीवन के किसी न किसी पहलू पर ध्यान केंद्रित करने वाली अतिरिक्त सतत जारी परियोजनाओं के निर्माण को जन्म देते हैं।

वर्तमान समय में, पूरे विश्व में 2,000 से भी अधिक सतत जारी समुदाय-आधारित पहलें चल रहे हैं जिनमें से कुछ बुनियादी प्रशासनिक संरचनाओं के साथ समुदाय-आधारित संगठनों में विकसित हुए हैं। इनके उदाहरणों में शामिल हैं बच्चों को शिक्षा प्रदान करने वाले सामुदायिक स्कूल, ज्यादा बड़े आकार के शैक्षणिक स्कूल जिनकी पहुंच किसी क्षेत्र के व्यापक वर्ग तक है, आधारभूत स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने वाले स्थानीय क्लिनिक, आस-पास के जनसमूहों के लिए कार्यक्रम तैयार करने वाले रेडियो स्टेशन, सहकारी समितियां जो संसाधनों को साझा करने को प्रोत्साहित करती हैं और हर सदस्य को सहायता उपलब्ध कराती हैं, किसी देश में आने वाले नए लोगों को सामुदायिक जीवन में अधिक सार्थक रूप से भाग लेने में सहायता देने के लिए प्रस्तुत भाषा और साक्षरता कार्यक्रम, या शहरी पड़ोसी समूह में सामुदायिक उद्यान जो स्थानीय निवासियों के लिए पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराते हैं तथा सामाजिक सम्बंधों को सुदृढ़ करते हैं। अगले पृष्ठ पर दिया गया उदाहरण इस तरह की पहल की प्रकृति और वह कैसे उभर सकता है, इसका एक उदाहरण प्रस्तुत करता है।



सतत जारी समुदाय-आधारित कार्यकलापों के बारे में कुछ और तथ्य

संयुक्त राज्य: माइक्रो-स्कूलों का नेटवर्क ("स्कूलस" के अंतर्गत पृ. 41 पर)

दक्षिण अफ्रिका: बच्चों के परीक्षाओं सुधारने के लिए ट्यूटोरियल प्रोग्राम ("युवाओं की क्षमता को उभारना" के अंतर्गत पृ. 50 पर)

कैमरून: सामाजिक क्रिया के प्रयासों में सहारा देने के लिए सहकारिता ("सामाजिक क्रिया की तैयारी" के अंतर्गत पृ. 56 पर)

सिंगापुर: सामुदायिक उद्यान ("कृषि" के अंतर्गत पृ. 61 पर)

रोमानिया: स्वास्थ्य क्लीनिक ("स्वास्थ्य" के अंतर्गत पृ. 64 पर)

आइसलैंड: नववृक्षरोपण परियोजना ("पर्यावरण" के अंतर्गत पृ. 66 पर)

वानुआतु: पर्यावरण की रक्षा के कार्यकलाप ("पर्यावरण" के अंतर्गत पृ. 67 पर)

ग्यांमार: माइक्रोफ़ायनेंस (सूक्ष्मवित्त) परियोजना ("आर्थिक जीवन" के अंतर्गत पृ. 68 पर)

पनामा: जनजातीय लोगों की आवाज उभारने के लिए रेडियो स्टेशन ("कला और मीडिया" के अंतर्गत पृ. 74 पर)

स्पेन: आध्यात्मिक विषयों से प्रेरित संगीत परियोजना ("कला और मीडिया" के अंतर्गत पृ. 75 पर)

कांगो जनतानिक गणराज्य: रीतों की रचना के लिए कॉयर ("कला और मीडिया" के अंतर्गत पृ. 75 पर)

फिलीपींस: रेडियो स्टेशन ("मानवतावादी राहत" के अंतर्गत पृ. 79 पर)



गहन रूप में: भारत में समुदाय-आधारित सतत जारी पहलों का उदय

हाई स्कूल के छात्रों के एक समूह ने, जो पिछले कुछ वर्षों से सेवा की क्षमता बढ़ाने के उद्देश्य से चलाए जा रहे एक बहाई शैक्षणिक कार्यक्रम में शामिल था, शिक्षा सम्बंधी अपनी आकांक्षाओं के बारे में कई दौर की बातचीत आरंभ की। उन्हें और उनके साथियों को जिन अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा था उनमें से एक यह थी कि स्कूल की अवधियों के बाद अध्ययन के लिए उपयुक्त वातावरण कैसे उपलब्ध हो सकता है। उदाहरण के लिए, सबसे नजदीकी पुस्तकालय कीब तीन किलोमीटर दूर था और यात्रा करने की दृष्टि से यह थोड़ी लंबी दूरी थी और शाम के वक्त ऐसा करना ज्यादा सुरक्षित भी नहीं था — खास तौर पर लड़कियों के लिए। समूह ने इस बात पर भी विचार किया कि युवा लोग पढ़ाई के मामले में कैसे अवसर स्वयं को अलग-थलग महसूस करते थे और यदि वे साथ मिलकर अध्ययन कर सकें तो यह कितना प्रभावी होगा।

स्थानीय चुनौती पर सामूहिक प्रत्युत्तर

कुछ हफ्तों बाद, इस समूह ने बहाई समुदाय द्वारा गांव के युवाओं के लिए समाज को बेहतर बनाने के लिए अपनी अनूठी भूमिका पर विचार-विमर्श के लिए आयोजित एक सम्मेलन में भाग लिया। उन्होंने सामूहिक रूप से एक पुस्तकालय तैयार करने का विचार प्रस्तुत किया और इस काम में अपने माता-पिता तथा समुदाय के अन्य लोगों को भी शामिल करने के महत्व पर विचार-विमर्श किया। माता-पिताओं और वरिष्ठजनों ने इस विचार में अपना सहयोग दिया और उनके साथ परामर्श के कई दौरों के बाद गांव के मंदिर में एक अतिरिक्त कमरे की पहचान की गई जिसे पुस्तकालय का स्थान बनाया जा सकता था। उसे अध्ययन के स्थल के रूप में तैयार करने के लिए धन की आवश्यकता को महसूस करते हुए, गांव के मुखिया ने कोष उपलब्ध कराने का वचन दिया और दान के रूप में पत्र-पत्रिकाओं का सत्सक्रिप्शन भी दिया। युवाओं ने किताबें एकत्रित कीं जबकि कुछ अन्य लोगों ने साज-सज्जा की वस्तुओं का दान दिया। समुदाय में कोष इकट्ठा किया

गया और बाद में और भी पुस्तकें शामिल की गईं जिनमें हाई स्कूल की पाठ्यपुस्तकें, कहानी की किताबें और विभिन्न धर्मों की धार्मिक पुस्तकें भी शामिल थीं।

अध्ययन और एक-दूसरे की सहायता हेतु युवाओं के लिए अवसर का सृजन

अपने मामलों के प्रबंधन के लिए इन युवाओं ने, गुप्त मतदान के माध्यम से, हर वर्ष एक अध्यक्ष चुनने का फैसला किया जो अन्य लोगों के साथ परामर्श करते हुए, पुस्तकालय की जरूरतों को पूरा करने के काम को सहज बनाने के लिए स्वेच्छा से काम कर सके। आरंभ में सामग्रियों और उपकरणों के खर्चों को पूरा करने के लिए एक छोटा-सा मूलभूत शुल्क निश्चित किया गया। अगले कुछ वर्षों में, 100 से भी अधिक युवा इस पुस्तकालय के सदस्य बन गए। धीरे-धीरे, पुस्तकालय ने कुछ स्पष्ट तरीकों से सामुदायिक जीवन को प्रभावित किया। पिछले समय में, युवा लोग परीक्षाओं की तैयारी अकेले किया करते थे और जिन्हें पढ़ाई में संघर्ष करना पड़ता था उन्हें अकेले छोड़ दिया जाता था। अब इस पुस्तकालय ने युवाओं के बीच सामूहिक अध्ययन और आपसी सहायता की संस्कृति को पोषित किया। जो लोग इसमें शामिल थे उन्हें एक प्रेरणा भरा और समावेशी वातावरण तैयार करना सीखना था। एक लड़की जो अवसर उस पुस्तकालय में आती-जाती थी, ने यह विचार साझा किया:

“यहां आने पर जो बात मुझे सबसे अच्छी लगती है वह है सम्बंध। हम एक-दूसरे से खुली बातचीत करते हैं। समूह में किसी भी व्यक्ति को कोई घबड़ाहट या अटपटा जैसा कुछ भी महसूस नहीं होता और न ही इस बात की चिंता होती है कि अगर हम कुछ गलत बोल बैठे तो कोई हमारा मजाक उड़ाएगा। लड़कों और लड़कियों दोनों को मौका दिया जाता है। हम लोगों ने कई व्यवहारिक परियोजनाएं भी की हैं जिसके कारण विज्ञान की कई अवधारणाएं अब हमारे लिए ज्यादा स्पष्ट हो गई हैं।”

जब युवा लोग अपने-अपने अध्ययन में आगे बढ़ रहे थे तो उसी समय उनमें से कई युवा अपने से छोटी उम्र के नौजवानों की शैक्षणिक प्रगति के लिए भी चिंतित थे। शाम के समय कई अनौपचारिक ट्यूटोरियल

कक्षाओं का उदय हुआ और उन्हें पढ़ाने वाले युवा अपने गांव के शैक्षणिक स्तर के विकास के बारे में चर्चा करने के लिए नियमित रूप से बैठकें किया करते थे। धीरे-धीरे वे पब्लिक स्कूल में पढ़ने वाले किशोरों के पढ़ाई-लिखाई सम्बंधी संघर्षों के प्रति ज्यादा सजग हुए और इस प्रकार उन्होंने कार्य की एक दूसरी दिशा आरंभ की: बच्चों और किशोरों के लिए एक विशेष ट्यूटोरियल पहल।

संकटों पर विजय और एकता के उच्चतर स्तरों को प्राप्त करना

सतत रूप से जारी किसी भी समुदाय-आधारित विकास कार्यक्रम में चुनौतियां और क्षणिक बाधाओं का उत्पन्न होना स्वाभाविक है। जब खास तरह की चुनौतियां सामने आए तो पुस्तकालय के कार्य का संयोजन करने वाले युवाओं ने एकता, धैर्य और निःस्वार्थ सेवा जैसे आध्यात्मिक सिद्धान्तों को लागू करने के महत्व पर नियमित रूप से विचार-विमर्श करना शुरू कर दिया। स्थानीय बहाई संस्थाओं से सलाह और प्रोत्साहन पाकर, मित्रता के अपने बन्धनों को और अधिक गहन बनाने तथा विभिन्न पृष्ठभूमियों के व्यक्तियों और संस्थाओं के साथ सहयोग करना सीखने के लिए उन्होंने अपने प्रयास दोगुने कर दिए। ऐसा करते हुए उन्होंने यह पाया कि संकट एकता और प्रभावशीलता के उच्चतर स्तरों को प्राप्त करने के अवसर बन सकते हैं।

पुस्तकालय संचालन के चार वर्षों के बाद इस विश्वास को अग्नि-परीक्षा से गुजरना पड़ा जब यह स्पष्ट हो गया कि स्वेच्छिक रूप से प्रदान की जा रही सुविधाएं अब और ज्यादा दिनों तक उपलब्ध नहीं रहेंगी और पुस्तकालय को बंद करना पड़ सकता है। यह एक ऐसी घटना थी जिसने उस समुदाय के लिए इस प्रयास की प्रकृति और उसके उद्देश्य के बारे में फिर से परामर्श करने का अवसर उत्पन्न किया। अभी तक जो अनुभव प्राप्त किए गए थे उनवी समीक्षा करने के क्रम में उन्होंने यह गौर किया कि पुस्तकालय ने न केवल युवाओं को अध्ययन के लिए पर्याप्त स्थान उपलब्ध कराने में सहायता दी बल्कि उसने शिक्षा के अन्य कई क्रियाकलापों को भी उभारने की प्रेरणा दी और समुदाय में सामूहिक क्रिया



को प्रोत्साहित करने का मौका दिया। इस प्रयास का प्रभाव समुदाय से बाहर के दायरे में भी फैला। आस-पास के स्थानों से बहुत सारे युवा इस पुस्तकालय में शामिल हुए और एक गांव के प्रधान ने अपने समुदाय के युवाओं के लिए एक पुस्तकालय के निर्माण की व्यवस्था की।

अनेक विचार-विमर्शों और सामुदायिक बैठकों के बाद एक विस्तारित संकल्पना का उदय हुआ। स्थानीय संस्थाओं के सहयोग से, उस पुस्तकालय को गांव के मध्य में एक बड़े हॉल में स्थानांतरित किया गया। यह स्थान सभी आयुवर्ग के लोगों, लड़कों और लड़कियों दोनों के लिए ज्यादा सुगम था और बच्चों एवं किशोरों की ट्यूटोरियल कक्षाओं सहित व्यापक किस्म की शैक्षणिक गतिविधियों के लिए ज्यादा बेहतर और उपयुक्त था। परामर्श के उपरांत उसका एक नया नाम रखा गया – सामुदायिक शिक्षा केंद्र।

बढ़ती हुई मांग और वास्तविकता का विस्तृत पठन

उसके शीघ्र बाद, देश में कोविड-19 महामारी के कारण लॉकडाउन की पहली लहर का अनुभव किया जाने लगा। स्कूलों के बंद हो जाने के कारण शिक्षा केंद्र के आस-पास अनेक नई शैक्षणिक कक्षाएं शुरू हो गईं। केंद्र में और उसके आस-पास कार्यकलापों की बढ़ती हुई संख्या के संयोजन के लिए, जो कामचलाऊ व्यवस्था की गई उसके अंतर्गत एक पांच-सदस्यीय शिक्षा टीम का गठन किया गया।

अपनी क्षमता बढ़ाने के लिए, इस शिक्षा टीम ने उस क्षेत्र में सक्रिय एक बहाई-प्रेरित विकास संस्था की तकनीकी सहायता का लाभ उठाया। इस संस्था को शिक्षण

प्रशिक्षण और सामुदायिक स्कूलों को सहायता देने का अनुभव प्राप्त था। यह समझते हुए कि वह शिक्षा केंद्र उस समुदाय में सक्रिय अनेक शैक्षणिक अभिकारकों में से एक था, टीम ने शिक्षा की मौजूदा प्रणाली का और गहन विश्लेषण किया जिसके अंतर्गत पब्लिक स्कूलों, प्रायवेट स्कूलों, ट्यूटोरियल्स, स्थानीय बाल देखभाल केंद्रों, नैतिक शिक्षा की कक्षाओं, रीयर स्टडी ग्रुप्स और ऑनलाइन कक्षाओं के योगदान शामिल थे। जो कार्य की रेखायें पहले से जाँची थीं उनके अलावा शिक्षा टीम ने उन अन्य लोगों के साथ सहयोग के बन्धनों को मजबूत बनाने का लक्ष्य रखा जो गांव में शिक्षा को लेकर समान चिंता रखते थे। वह चीज जिसे कई बार प्रतिस्पर्धा का वातावरण कहा जाता है उसकी जगह इस टीम ने सबके कल्याण के लिए सेवा के कार्य में आपसी सहयोग और सहायता की भावना को प्रोत्साहित करने का प्रयास किया। आरंभिक कदम के रूप में, शिक्षा केंद्र शिक्षा के कार्य में जुटे हुए व्यक्तियों के लिए समीक्षा बैठकों का आयोजन करने लगा ताकि वे अपने अनुभवों को साझा कर सकें और एक-दूसरे से सीख सकें। जब उनके ध्यान में यह बात आई कि अपर्याप्त सुविधाओं के कारण गांव में स्थित एक पब्लिक स्कूल का काम-काज बंद करना पड़ा तो शिक्षा टीम ने समुदाय के अन्य लोगों को इस बात के लिए प्रेरित किया कि वे यह सुनिश्चित करें कि वह स्कूल गांव को अपनी सेवा देना जारी रख सके।

एक और जबकि सामुदायिक शिक्षा केंद्र के कार्यकलापों का विकास जारी है, उसके कार्य का संयोजन करने वाले मित्रों ने आगामी वर्षों में सीखने के अनेक क्षेत्रों का वर्णन किया है:

“हमलोग एक सामुदायिक सम्मेलन के

आयोजन की योजना बना रहे हैं जहां हम इस बात के बारे में हर किसी के साथ परामर्श कर सकते हैं कि सामुदायिक शिक्षा केंद्र को कैसे बेहतर बनाया जा सकता है, गांव के ज्यादा से ज्यादा युवा उसका लाभ कैसे उठा सकते हैं, स्कूल और कॉलेज की पढ़ाई के लिए ज्यादा से ज्यादा लड़कियाँ केंद्र पर कैसे आ सकती हैं और सहयोग एवं आपसी सहायता की भावना कैसे बढ़ाई जा सकती है। शिक्षा टीम यह सीखने का भी प्रयास कर रही है कि ट्यूटोरियल सहायता की गुणवत्ता कैसे बढ़ाई जाए और सभी ट्यूटर्स एवं गांव के शिक्षकों के बीच सीखने और पारस्परिक सहयोग के वातावरण को कैसे मजबूत बनाया जाए।”

इस प्रयास के क्रमिक विकास के लिए अनेक कारक तत्व महत्वपूर्ण रहे हैं। आरंभ से ही, इसने समुदाय की अभिलाषाओं को प्रतिबिंबित किया है और स्थानीय रूप से उपलब्ध संसाधनों और क्षमताओं के आधार पर उसका सहज विकास हुआ है। समुदाय और उसकी संस्थाओं से लगातार प्राप्त हो रही सहायता से भलीभूत, इस प्रक्रिया के मूल में युवाओं के समूह का यह प्रयास रहा है कि वे अपने भीतर कुछ खास क्षमताओं का विकास कर सकें, जैसेकि सीखने की मुद्रा में कार्य करने और विविधता में एकता के वातावरण को प्रोत्साहित करने की क्षमता। इस सम्पूर्ण प्रक्रिया में, अपने समुदाय में रहने और उसकी सेवा जारी रखने के साथ-साथ, युवाओं ने पड़ोस के शहर में अपनी तृतीयक शिक्षा को आगे बढ़ाने में भी एक-दूसरे को सहायता दी है।

सामुदायिक परामर्श एवं क्रिया के लिए जारी सम्मिलन

विकास सम्बंधी बहाई प्रयास ज्यादातर उन गांवों और पड़ोसी समूहों में प्रकट हुए हैं जहां समुदाय की भावना निरंतर स्पष्ट रूप से मौजूद है। ऐसे परिवेशों में यह विशेष रूप से परिलक्षित हुआ है कि क्रिया का क्षेत्र चाहे जो भी हो — शिक्षा, कृषि, स्वास्थ्य, या अन्य — सतत प्रगति न केवल व्यक्तियों और समूहों के सशक्तीकरण पर आश्रित है बल्कि, ज्यादा व्यापक रूप से, व्यक्तियों, समुदाय और उसकी संस्थाओं के बीच अभिक्रिया की क्षमताओं और प्रकृति पर भी। बहाई लेखों में कहा गया है कि लोगों के बीच सहयोग एवं आपसी सहायता के गुणों को जितना अधिक झलकाया जाएगा, “मानव समाज की प्रगति और समृद्धि उतनी ही अधिक होगी।”

इस विश्वास से अनुप्राणित होकर, दुनिया भर में विभिन्न स्तरों पर व्यक्तियों, समूहों और संस्थाओं के बीच अपने-अपने समुदायों की भौतिक एवं सामाजिक स्थितियों को पढ़ने-समझने की एक निरंतर जारी प्रक्रिया में जुटने के अवसरों को उत्पन्न किया जा रहा है। एक ऐसे वार्तालाप में जहां अनुभवों और संसाधनों को तत्परता से साझा किया जाता है, ऐसे सहयोगात्मक अवसर जनसंख्या के सभी तबकों को शामिल करते हैं। संकल्पना और विचार की एकता को समृद्ध बनाने के अलावा, ऐसे सम्मिलन अवसर, किसी न किसी समस्या के निराकरण के लिए, निर्धारित अवधि के क्रियाकलापों के अभ्युदय और ऐसी परियोजनाओं के सृजन की दिशा में भी ले जाते हैं जिन्हें आगे चलकर जारी रखा जाता है।

भारत में आयोजित ऐसे ही एक सामुदायिक सम्मिलन में, एक गांव के बाहरी किनारे के ऐसे 40 परिवार जिन तक पहले सरकारी कार्यक्रम नहीं पहुंचते थे, अपने इलाके की भौतिक और आध्यात्मिक उन्नति के बारे में विचार-विमर्श कर रहे हैं। जब स्थानीय बहाई संस्था द्वारा ग्राम परिषद के एक सदस्य को इस सम्मिलन में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया तो समुदाय और सरकार के बीच का सम्बंध मजबूत हुआ और सरकारी अधिकारी गांव के उस हिस्से की वास्तविकता से ज्यादा प्रबल रूप से अवगत हुए। इन सम्मिलनों के परिणामस्वरूप समुदाय ने सुनियोजित कदम उठाए जिसके कारण स्थानीय नेताओं के साथ सहज सहयोग का विकास हुआ और उस समुदाय को सरकारी संरचनाओं द्वारा पेश की जाने वाली विभिन्न योजनाओं से जुड़ने में मदद मिली — जैसे सूक्ष्मवित्त (माइक्रोफायनेंस) और बच्चों के कल्याण सम्बंधी योजनाओं से। वह सम्बंध जिसमें पहले समुदाय और स्थानीय प्रशासन के बीच दूरी



और अविश्वास परिलक्षित होता था, ऐसे कदमों के कारण धीरे-धीरे आपसी सहयोग और विश्वास पर आधारित सम्बंध में बदलने लगा।

पापुआ न्यू गिनी में, स्थानीय बहाई संस्थाओं ने वहां के सरकारी अधिकारियों के साथ मिलकर एक तीन-दिवसीय सामुदायिक सम्मिलन आयोजित किया जिसमें 600 से भी अधिक प्रतिभागी शामिल हुए। उस क्षेत्र के निवासियों, स्थानीय प्रशासन के प्रतिनिधियों और वार्ड पार्षदों को शामिल करते हुए बहुत ही अच्छी बातचीत हुई जिसके माध्यम से अभी तक उठाए गए कदमों और साथ ही उन सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक बाधाओं के बारे में विचार किया गया जिनके कारण जनसमूह की आध्यात्मिक और भौतिक प्रगति में अवरोध उत्पन्न हो रहा था। सम्मिलन के प्रतिभागियों ने समुदाय के जीवन की मूलभूत प्रक्रियाओं से जुड़े विभिन्न निकायों के बीच सहयोग को मजबूत बनाने के तरीकों पर भी विचार-विमर्श किया जिनमें माध्यमिक एवं तृतीयक शिक्षा, स्वास्थ्यचर्या और इन्फ्रास्ट्रक्चर जैसे विषय भी

“तुम सभी विषयों में परामर्श करो, क्योंकि परामर्श मार्गदर्शन का वह प्रदीप है जो राह दिखाता है और जो बोध प्रदान करता है।”

— बहाउल्लाह



कांगो जनतांत्रिक गणराज्य

शामिल थे। इस सम्मिलन के बाद, समुदाय के भीतर एक समिति के गठन के बारे में सोचा गया जो कि सामुदायिक सरोकार के मुद्दों पर स्थानीय प्रशासन के साथ अधिक सुव्यवस्थित एवं गहन सहयोग स्थापित कर सके।

कांगो जनतांत्रिक गणराज्य में समुदाय के सदस्यों को एकत्रित करने वाले नियमित अधिवेशनों के अतिरिक्त स्थानीय मुखिया लोगों के साथ विशेष सम्मिलनों का भी आयोजन किया जाता रहा है। इसका एक उदाहरण है 60 ग्रामीण एवं कबीलाई प्रमुखों की एक तीन-दिवसीय बैठक जिनमें से बहुत से प्रमुख अतीत के सशस्त्र संघर्ष की विरोधी धुरियों पर थे और वे सामाजिक प्रगति को बढ़ावा देने और ऐसे व्यावहारिक कदम तय करने इकट्ठे हुए थे जो विभिन्न नरलीय समूहों और धार्मिक समुदायों के बीच मौजूद तनावपूर्ण सह-अस्तित्व को रचनात्मक एवं शांतिपूर्ण सहयोग में बदल सकें। इस अधिवेशन का एक उल्लेखनीय परिणाम था बहुत से प्रमुखों द्वारा अपने गांवों की महिलाओं की नियमित बैठकों का आयोजन करना

ताकि इस लक्ष्य की दिशा में कदम उठाने के बारे में चर्चा की जा सके, क्योंकि उन्होंने यह महसूस किया कि सुलह और शांति स्थापित करने के लिए महिलाओं की भागीदारी आवश्यक है।



विकास संगठन

बहाई प्रयासों के वे विस्तृत दायरे जो विकास के क्षेत्र में अपना योगदान दे रहे हैं, उनमें शामिल हैं कुछ औपचारिक विकास संगठन। सामान्य तौर पर एक या एक से अधिक परिष्कृत विकास कार्यक्रमों का निरीक्षण करने के साथ-साथ, ऐसे कार्यक्रमलाप, परिस्थितियों पर निर्भर होते हुए, अपने पैमाने और अपनी जटिलता में प्राकृतिक रूप से स्वयं भी विकसित होते चलते हैं। इनमें से कुछ संगठनों ने कार्यक्रमलापों के अपेक्षाकृत ज्यादा जटिल क्षेत्रों में जुटने तथा सरकार एवं नागरिक समाज की एजेंसियों के साथ कामकाजी सम्बंध स्थापित करने की क्षमताएं हासिल की हैं।

“हमें मनुष्य की प्रसन्नता के लिए निरंतर नए-नए आधारों की स्थापना और इस लक्ष्य की दिशा में नए-नए साधनों का सृजन और प्रोत्साहन करते रहना चाहिए।”

- अब्दुल-बहा

जब सामाजिक क्रिया की परियोजनाओं की विविधता बढ़ती है तो उनका दीर्घकालिक स्थायित्व सुनिश्चित करने और उनकी विस्तारित जरूरतों को पूरा करने के लिए संस्थात्मक संरचनाएं उभरती हैं। वर्तमान में, बहाई विकास संगठन दो श्रेणियों में से एक श्रेणी में आते हैं। उनमें से कुछ बहाई प्रशासनिक परिपदों की एजेंसियां हैं, जबकि कुछ अन्य व्यक्तिगत बहाइयों के समूहों — जो अक्सर समान विचारधारा वाले साथी होते हैं — द्वारा आरंभ किए गए कार्यक्रमलाप जो कि सम्बंधित देशों के कानूनों के अंतर्गत गैर-लाभ, गैर-सरकारी संगठनों के रूप में अपना कार्य-संचालन करते हैं। इन दोनों ही प्रकार के संगठनों का उद्देश्य है सामाजिक संस्कार के एक या एक से अधिक क्षेत्रों में प्रभुधर्म की शिक्षाओं को लागू करना।

सामान्यतः व्यक्तियों के एक छोटे-से समूह द्वारा अस्तित्व में लाई गई इस प्रकार की एजेंसी एक छोटे पैमाने पर अपना काम शुरू करती है और जब ज्ञान एवं संसाधन का विस्तार होता है तो वे अपने क्रियाकलापों का दायरा बढ़ाते हैं। समय बीतने पर वह स्थानीय समुदायों तथा उस सम्पूर्ण क्षेत्र की चुनौतियों का समन्वित रूप से निराकरण करने के लिए विभिन्न कार्यदिशाओं में आगे बढ़ने के लिए अपनी क्षमता का विस्तार कर सकती है। इस लक्ष्य की ओर, वह सुव्यवस्थित रूप से मानव संसाधनों का विकास करती है और विकास के किसी न किसी पहलू के बारे में ज्ञान के सृजन, अनुप्रयोग एवं प्रसार को प्रोत्साहित करती है। विविध क्षेत्रों में क्रिया और समीक्षा को पोषित तथा प्राप्त हो रहे ज्ञान को सुव्यवस्थित करते हुए, इस प्रकार का संगठन समाज के रूपांतरण के बारे में सीखने और उसमें योगदान देने के लिए, व्यक्तियों, समुदायों और

संस्थाओं के प्रयासों में सहायता देता है। जब किसी बहाई-प्रेरित संगठन की स्थापना की जाती है तो स्वाभाविक रूप से उसकी गतिविधियों की गुणवत्ता पर जोर दिया जाता है; जब “जो बड़ा है वही बेहतर है” की अवधारणा को दरकिनार कर दिया जाता है तो धीरे-धीरे वांछित आकार के बारे में स्पष्टता प्राप्त होती है। किसी क्षेत्र में कार्य-संचालन करने वाला संगठन, आंशिक रूप से, अन्य प्रयासों के साथ अपने सम्बंध से अपना अर्थ ग्रहण करता है, यह उन अनेक पारस्परिक क्रिया के प्रयासों में से एक है जिसके माध्यम से सतत प्रगति हासिल की जाती है। सामान्य रूप से, जब ऐसी एजेंसियां समुदाय के अंतर्गत पारस्परिक क्रिया के प्रक्रियाओं के बीच सुसंगति बनाए रखना सीख रही होती हैं तो स्थानीय बहाई संस्थाएं उन्हें सलाह और प्रोत्साहन प्रदान करती हैं। जब किसी संगठन की क्षमता बढ़ जाती है और उसका कार्य ज्यादा सुपरिभाषित हो जाता है तो वह सरकारी एवं नागरिक समाज की एजेंसियों के साथ सतत बढ़ते हुए रूप से ज्यादा प्रभावी एवं अर्थपूर्ण सम्बंध की स्थापना करने में सक्षम हो जाता है।

वर्तमान समय में, कार्यक्रमों की अपेक्षाकृत जटिल संरचनाओं और अपने प्रभाव के महत्वपूर्ण दायरों के साथ, पूरे विश्व में 170 से भी अधिक बहाई-प्रेरित संगठन हैं और इनमें से प्रत्येक अपने क्रमविकास के अलग-अलग स्तरों पर है। आगामी पृष्ठों में इनमें से कुछ एजेंसियों के काम-काज की एक झलक प्रस्तुत की गई है।



कनाडा



ज़ाम्बिया

बहाई-प्रेरित विकास संगठनों के बारे में कुछ

नीदरलैंड्स: ब्रेकवेल इंस्टीट्यूट
 ("युवाओं की क्षमता की निर्मुक्ति"
 के अंतर्गत पृ. 50 पर)

उत्तरी अमेरिका: संगठनों का नेटवर्क
 ("युवाओं की क्षमता की निर्मुक्ति"
 के अंतर्गत पृ. 51 पर)

कोलंबिया: FUNDAEC
 ("सामाजिक क्रिया के लिए तैयारी"
 के अंतर्गत पृ. 56 पर)

कैमरून: 'इमर्जेंस फाउंडेशन
 फॉर एडुकेशन एंड डेवलपमेंट'
 ("सामाजिक क्रिया के लिए तैयारी"
 के अंतर्गत पृ. 56 पर)

युगांडा: किमान्या-नोयो फाउंडेशन
 ("कृषि" के अंतर्गत पृ. 62 देखें)

ज़ाम्बिया: इनशिंडो फाउंडेशन
 ("कृषि" के अंतर्गत पृ. 62)

कांगो जनतांत्रिक गणराज्य:
 फाउंडेशन एरफ़ान-कॉनैसेंस
 ("कृषि" के अंतर्गत पृ. 62)

कांगो जनतांत्रिक गणराज्य: ग्रैन
 डि'एस्पॉयर ("स्वास्थ्य" के अंतर्गत
 पृ. 64)

भारत: 'फाउंडेशन फॉर दि
 ऐडवांसमेंट ऑफ साइंस'
 ("स्वास्थ्य" के अंतर्गत पृ. 65)

लक्ज़ेम्बर्ग: युनिटी फाउंडेशन
 ("विभिन्न स्तरों पर विकास सम्बंधी
 परिसंवाद में योगदान" के अंतर्गत
 पृ. 89)।



लक्ज़ेम्बर्ग



किरिबाती

संक्षेप में: चुनिन्दा विकास संगठन

इमर्जेस फाउंडेशन फॉर एडुकेशन ऐंड डेवलपमेंट

देश के युवाओं के नैतिक सशक्तीकरण में योगदान देने के लिए 'इमर्जेस फाउंडेशन फॉर एडुकेशन ऐंड डेवलपमेंट' की स्थापना 2003 में कैमरून में हुई थी। उसके प्रयास 'सामाजिक क्रिया की तैयारी' को क्रियान्वित करने और कृषि के क्षेत्र में ऐक्शन रिसर्च के संचालन पर संकेन्द्रित हैं (और अधिक जानकारी के लिए, पृ. 56 देखें)।

कॉलिब्री लर्निंग फाउंडेशन

ब्रिटिश कोलंबिया (कनाडा) में स्थित 'कॉलिब्री लर्निंग फाउंडेशन' की स्थापना 2012 में देश में आए नए आगंतुकों के समूहों की क्षमता बढ़ाने में मदद देने के लिए की गई थी ताकि वे शहरी परिवेशों में समावेशी, स्वागतपूर्ण और आपसी रूप से सहयोगात्मक समुदायों के विकास में अपना योगदान दे सकें। हाल के वर्षों में, समाज की बेहतरी में योगदान देने के प्रयास में जुटे हुए युवाओं के जीवन के विभिन्न चरणों में शिक्षा और व्यवसाय के समुचित अवसरों की पहचान और अनुसरण करने में कॉलिब्री ने उनका साथ निभाना आरंभ किया है।

फंडाएक (FUNDAEC)

कोलंबिया की ग्रामीण आबादी की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए शोधकार्य एवं क्रियाशीलता के लिए 'फंडासिऑन पारा ला एंलिकेशिऑन वाइ एन्सेनैजा दी ला साइंसियाज' (FUNDAEC) की स्थापना 1974 में की गई थी। 'सिस्टेमा दी ऐप्रेंडिजाजे ट्यूटोरियल' (SAT) नामक एक माध्यमिक शिक्षा कार्यक्रम तैयार करने के बाद, जिसने अन्य बहाई-प्रेरित संगठनों के बीच अत्यंत रुचि का सृजन किया, इस संगठन ने 'सामाजिक क्रिया की तैयारी' कार्यक्रम तैयार किया और तब से वह उसके क्रियान्वयन के बारे में सीखता चला आ रहा है। FUNDAEC की अन्य कार्यदिशाओं में शामिल हैं 'सपोर्टिंग कम्युनिटी लीडर्स' (समुदाय के अग्रणी जनों को सहायता देना) नामक कार्यक्रम जो युवाओं को अध्ययन

और काम के पथ का अनुसरण करने में सहायता देता है तथा 'नेतृत्व एवं समुदाय विकास कार्यक्रम' जिसका उद्देश्य स्थानीय नेताओं और संगठनों के साथ मिलकर यह सीखना है कि वे अपने समुदायों के सामने खड़ी चुनौतियों का समाधान कैसे कर सकते हैं।

ग्रेने डी' एस्पॉयर

देश के किवु क्षेत्र में स्वास्थ्य सम्बंधी जरूरतों के प्रत्युत्तर में कांगो जनताधिक गणराज्य में स्थित ग्रेने डी' एस्पॉयर का उदय वर्ष 2013 में हुआ। यह संगठन स्कूली छात्रों और उनके परिवारों के बीच स्वास्थ्य को प्रोत्साहित करने के लिए शिक्षकों के प्रशिक्षण के काम में जुटा हुआ है तथा समग्रतावादी स्वास्थ्यचर्या प्रदान करने के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर काम करना सीख रहा है। (और अधिक जानकारी के लिए पृ. 64 देखें)।

बेयोन्ड ई.वी., जर्मनी

बेयोन्ड ई.टी. जर्मनी में कार्यरत एक एजेन्सी है जिसकी स्थापना 2012 में की गई थी और उसका ध्यान मुख्य रूप से बहाई-प्रेरित संगठनों द्वारा प्रदान किए जाने वाले शैक्षणिक कार्यक्रमों के लिए धन एकत्रित करने पर केन्द्रित है। यह एजेन्सी अफ्रीका, एशिया और प्रशान्त क्षेत्र में चलाई जा रही परियोजनाओं के लिए कोषों (फंड्स) के एक माध्यम के रूप में काम करती है और सभी राष्ट्रों की सामाजिक प्रगति को अंतर्निहित करने वाले आध्यात्मिक सिद्धान्तों के बारे में जर्मनी में व्यक्तियों और संस्थाओं के साथ बातचीत में जुटती है।

फाउंडेशन फॉर ऐडवांसमेंट ऑफ साइंस

उत्तर प्रदेश (भारत) में फाउंडेशन फॉर ऐडवांसमेंट ऑफ साइंस वर्ष 1996 से लेकर अब तक ग्रामीण समुदायों में स्कूली शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के काम में जुटा हुआ है। कोरोना वायरस महामारी के कारण स्कूलों के बंद हो जाने के कारण, वर्ष 2020 से, यह संगठन युवाओं को अपने समुदायों



जाम्बिया



किरिबाती



एसवाटिनी



पापुआ न्यू गिनी



मंगोलिया



कंबोडिया



भारत



कोलंबिया

में ट्यूटोरियल सहायता उपलब्ध कराने में सहायता देना सीखता आ रहा है। साथ ही यह फाउंडेशन यह भी सीख रहा है कि युवा माताओं के प्रशिक्षण के माध्यम से स्वास्थ्य को कैसे बढ़ावा दिया जा सकता है और वह स्थानीय सम्मिलनों में उपयोग के लिए इस विषय पर जागरूकता उत्पन्न करने वाली विषय-सामग्रियों के सृजन के बारे में भी सीख-समझ रहा है। (और अधिक जानकारी के लिए, पृ. 65 देखें)।

यायासन भिन्नेका तुनगल इका युनिवर्सल

‘यायासन भिन्नेका तुनगल इका (विविधता में एकता फाउंडेशन) की स्थापना 1996 में इंडोनेशिया में की गई थी जिसका उद्देश्य था बच्चों के लिए शैक्षणिक अवसरों को बेहतर बनाते हुए देश के दूरस्थ समुदायों की उन्नति में योगदान देना। 2011 में, इस संस्था ने उत्तरी सुमात्रा के मेंतावाई द्वीपसमूह पर स्थानीय विद्यालयों की स्थापना को बढ़ावा देना शुरू किया। 2022 के उत्तरार्ध तक, यह संगठन 31 आरंभिक बाल्यावस्था विकास केंद्रों को सहायता देने लगा था और 41 शिक्षकों को लगातार प्रशिक्षण दे रहा था (और अधिक जानकारी के लिए, पृ. 44 देखें)।

ऊतान मरावा एडुकेशनल इंस्टीट्यूट (OMEI)

समाज की सेवा के लिए अपने छात्रों में क्षमता-निर्माण के कार्य में किरिबाती के शिक्षकों को सहायता देने के उद्देश्य से, ऊतान मरावा एडुकेशनल इंस्टीट्यूट की शुरुआत 1990 के दशक में हुई। समय बीतने के साथ, पब्लिक स्कूलों में किशोरों के आध्यात्मिक सशक्तीकरण का कार्यक्रम प्रस्तुत करने और सामुदायिक विद्यालयों के अभ्युदय में सहायता देते हुए इस संगठन ने अपने शैक्षणिक प्रयासों का विस्तार किया। 2022 में, इस कार्यक्रम में करीब 900 युवा भाग ले रहे थे और OMEI द्वारा 17 किंडरगार्टनों को सहायता दी जा रही थी जिसका लाभ 200 से भी अधिक छात्रों को मिल रहा था (और अधिक जानकारी के लिए, पृ. 55 देखें)।

म्वेलेकियो संगठन

अपने समुदायों के भौतिक एवं आध्यात्मिक कल्याण को बढ़ावा देने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में युवाओं के साथ मिलकर काम करने के उद्देश्य से, म्वेलेकियो संगठन की स्थापना 2007 में केन्या में की गई थी। इस संगठन में, मुख्य रूप से पश्चिमी केन्या में, सैकड़ों युवा लोग एक ऐसे शैक्षणिक कार्यक्रम में शामिल हैं जो कृषि, पर्यावरण और आरंभिक बाल्य शिक्षा सहित सामाजिक क्रिया के लिए उनकी सामर्थ्यों का विकास करता है।

रेज ऑफ लाइट फाउंडेशन

पापुआ न्यू गिनी के ऐसे क्षेत्रों में जहां शिक्षा तक लोगों को सीमित पहुंच प्राप्त थी, शिक्षा सम्बंधी आवश्यकताओं के निराकरण के कार्य में मदद के लिए ‘रेज ऑफ लाइट फाउंडेशन’ की स्थापना 2007 में की गई थी। अपने समुदायों के कल्याण को बढ़ावा देने हेतु क्षमता-निर्माण में सहायता देने के लिए, यह फाउंडेशन ‘सामाजिक क्रिया की तैयारी’ कार्यक्रम पेश करता है और ऐसे व्यक्तियों के लिए शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन करता है जो नर्सरी एवं प्राथमिक विद्यालयों की स्थापना के लिए अपने समुदाय के साथ मिलकर काम करना चाहते हैं।

इनशिंडो फाउंडेशन

इस विश्वास के साथ कि ज्ञान ही सामाजिक प्रगति का मूल है, इनशिंडो फाउंडेशन की स्थापना 2006 में जाम्बिया में यह सीखने के उद्देश्य से की गई थी कि अपने समुदायों के कल्याण को बढ़ावा देने के लिए युवा लोग अपनी वैज्ञानिक सामर्थ्य का निर्माण कैसे कर सकते हैं। समय बीतने के साथ, इसके प्रयासों ने सामुदायिक विद्यालयों और सामुदायिक कृषि केंद्रों की स्थापना का भी मार्ग प्रशस्त किया जो कि स्थायित्वपूर्ण खाद्य उत्पादन के बारे में ज्ञान के सृजन के लिए प्रयत्नशील हैं। (और अधिक जानकारी के लिए, पृ. 62 देखें)।

गहन रूप में: मध्य अफ्रीकी गणराज्य में एक विकास संगठन का क्रमविकास

2003 में, मध्य अफ्रीकी गणराज्य में व्यवितियों के एक समूह ने इस बात पर परामर्श आरंभ किया कि वे अपने देश की सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति में कैसे योगदान कर सकते हैं। बहाई लेखों से प्रेरित होकर जिनमें कहा गया है कि मनुष्य को “बहुमूल्य रत्नों से भी खान” समझा जाना चाहिए और यह कि “केवल शिक्षा ही उसकी निधियों को प्रकट कर सकती है और मनुष्य को उनसे लाभान्वित होने के योग्य बनाती है”, उनका ध्यान डी-प्रायमरी और प्रायमरी शिक्षा की स्थिति पर केन्द्रित हुआ। खास तौर पर ग्रामीण क्षेत्रों में, राष्ट्र की शिक्षा-प्रणाली को लेकर हुए आंतरिक संघर्ष से उत्पन्न सालों के विनाशकारी प्रभाव के कारण, अनेक समुदायों को शिक्षा तक सीमित पहुंच प्राप्त थी।

अनौपचारिक शिक्षा के कार्यक्रमों में सहायता देने के क्रम में उन्हें जो अनुभव प्राप्त हुआ था उससे लाभ उठाकर इस समूह ने सीखने की एक अधिक सुव्यवस्थित प्रक्रिया में शामिल होने के एक माध्यम के रूप में ‘फाउंडेशन नाहिद एट हुआंग एहदियेह’ (एहदियेह फाउंडेशन) की स्थापना की। निहित चुनौतियों से अवगत रहते हुए, संस्थापकों ने अपने देश के लोगों में प्रतिभा का एक विपुल भंडार देखा जिसे यदि समुचित रूप से उपयोग में लाया जाए तो वह इन चुनौतियों पर विजय पाने में प्रमुख भूमिका निभा सकता है। चैड और माली के बहाई-प्रेरित संगठनों से प्राप्त अंतर्दृष्टियों और प्रशिक्षण सामग्रियों से प्रेरणा ग्रहण करके, वे यह सीखने के लिए अग्रसर हुए कि स्वयं अपने प्राथमिक विद्यालयों की स्थापना और प्रबंधन के काम में वे समुदायों की सहायता कैसे कर सकते हैं।

सतत जारी क्रिया और समीक्षा के माध्यम से कार्यक्रम विकसित करना

फाउंडेशन के प्राथमिक कार्यों में से एक था अपने-अपने समुदायों से चुने गए करीब 20 अभिलाषी शिक्षकों के लिए एक प्रशिक्षण सेमिनार — उन शिक्षकों के लिए जिन्होंने नौजवानों की शिक्षा में अपनी अभिरुचि

दिखाई थी। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य था अपने समुदायों में किंडरगार्टन आरंभ करने के लिए प्रतिभागियों की क्षमता के विकास में मदद देना। इसके परिणामस्वरूप, समुदाय के भीतर से उपलब्ध कराए गए आर्थिक स्रोतों से सहायता पाकर स्थानीय रूप से संचालित पांच डी-स्कूलों की स्थापना हुई। फाउंडेशन ने इन स्कूलों के काम-काज पर बागीची से नजर रखी और शिक्षा की प्रकृति, नए शिक्षकों के प्रशिक्षण, तथा शिक्षकों की आजीविका कायम रखने एवं एक विकासशील विद्यालय के प्रशासन जैसे अनेक विषयों के बारे में अंतर्दृष्टियां प्राप्त कीं।

अपने कार्यक्रम के विकास के लिए किए जा रहे प्रयासों में, फाउंडेशन को उस आबादी की वास्तविकता के प्रति सजग होना था जिसके साथ वह काम कर रहा था और उसी अनुरूप अपनी योजनाओं में तालमेल बिठाना था। उदाहरण के लिए, अभिलाषी शिक्षकों में बहुत सी युवा माताएं थीं जिन्हें सीमित रूप से औपचारिक शिक्षा प्राप्त थी और साथ ही वे ऐसी जिम्मेदारियों से जुड़ी हुई थीं जिनके कारण वे कई महीनों तक चलने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग ले पाने में सक्षम नहीं थीं। इसके प्रत्युत्तर में, फाउंडेशन ने विस्तारित अवधियों तक प्रतिभागियों के भाग लेने की आवश्यकता की जगह सिद्धान्त और प्रयोग के इर्द-गिर्द केन्द्रित शिक्षक प्रशिक्षण का तौर-तरीका अपनाया। इस प्रकार फाउंडेशन ने हर वर्ष एक से दो महीने का प्रशिक्षण प्रस्तुत किया और उसके बाद शिक्षकों को प्रोत्साहित किया जाता था कि उन्होंने जो कुछ भी सीखा था उसे तुरन्त अभ्यास में लाएं। शिक्षकों को एक समय में एक ग्रेड स्तर प्रस्तुत करने के लिए प्रशिक्षित किया गया था जिसका आरंभ किंडरगार्टन से होता था। फाउंडेशन के कर्मचारियों के नियमित विजिट और एक ऐसी प्रणाली के माध्यम से जिसमें अनुभवी शिक्षक नए शिक्षकों को सहारा देते हैं, निर्देश की गुणवत्ता में धीरे-धीरे सुधार लाया गया।

स्वाभाविक बात है कि अपने क्रमिक विकास के हिस्से के रूप में इन स्कूलों को अनेक चुनौतियों पर विजय प्राप्त करनी पड़ी। उदाहरण के लिए, आरंभिक वर्षों में, स्कूल इन्स्पेक्टर विद्यालयों को लेकर हमेशा संदेह

किया करते थे क्योंकि वे आम तौर पर स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्रियों से बनी मामूली संरचनाओं में और कई बार तो पेड़ों के नीचे, अपना कार्य-संचालन करते थे। लेकिन क्रिया, समीक्षा और सुधार की अनवरत प्रक्रिया के माध्यम से, फाउंडेशन ने सामुदायिक विद्यालयों की संख्या बढ़ाने के कार्यक्रम के अनेक तत्वों का विकास कर लिया (देखें: पृ. 42)। पांच वर्षों के भीतर, करीब 28 स्कूल संचालित होने लगे और प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों की संख्या 100 से ऊपर जा पहुंची।

संरचनाओं का सुगठन और सहयोग बढ़ाना

कार्यक्रम के आशाजनक परिणामों के कारण अफ्रीका के अन्य देशों के अनेक संगठनों की सतत बढ़ती हुई संख्या से निवेदन आने लगे जो सीखने के ऐसे ही पथ का अनुसरण करना चाहते थे। वर्ष 2008 में, फाउंडेशन ने इन संगठनों के कर्मचारियों को अपने-अपने देशों में शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम तैयार करने में सहायता देने का काम शुरू किया।

मध्य अफ्रीकी गणराज्य में कार्यक्रम को लागू करने की क्षमता लगातार बढ़ती रहे यह सुनिश्चित करने के लिए बांगुई शहर के कुछ युनिवर्सिटी ग्रेजुएटों को इस संगठन में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया गया। संगठन के कुछ कार्यक्रमों को विकेंद्रित करने के लिए, देश के विभिन्न भागों में पांच प्रशिक्षण स्थल भी स्थापित किए गए। 2011 आते-आते, फाउंडेशन 13 नगरपालिका क्षेत्रों में काम करने लगा जिसके अंतर्गत 33 विद्यालय करीब 2,800 बच्चों को शिक्षा उपलब्ध करा रहे थे। देश में नागरिक आंदोलन की सामान्य स्थिति के बावजूद, फाउंडेशन के कार्यक्रमों का बढ़ते रहे। उसके द्वारा जिस प्रकार की गुणात्मक शिक्षा प्रदान की जाती थी उसकी सराहना न केवल माता-पिताओं ने बल्कि शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने वाले लोगों और देश भर के सरकारी अधिकारियों ने भी की।

जब अधिकारियों और अन्य नायकों के साथ सहयोग पहले से ज्यादा मजबूत हो गया तो फाउंडेशन ने यह विचार करना आरंभ किया कि वह प्राथमिक शिक्षा के



साझेदारों के रूप में, अपनी युवा पीढ़ी को शिक्षा प्रदान करने में पहले से भी अधिक सक्रिय अभिकारक के रूप में देखने लगे।

वर्तमान समय में, एहदियेह फाउंडेशन सामुदायिक विद्यालय कार्यक्रम को लागू करने वाले सात क्षेत्रीय संगठनों के एक नेटवर्क का हिस्सा है जो सीखने के विभिन्न क्षेत्रों के बारे में परामर्श में जुटा हुआ है। वे सब मिलकर 850 से भी अधिक शिक्षकों के साथ मिलकर काम कर रहे हैं जो करीब 190 सामुदायिक विद्यालयों में 24,300 से भी अधिक छात्रों की शिक्षा की देखरेख कर रहे हैं।

आरंभकाल से ही, फाउंडेशन के काम-काज का क्रमिक विकास स्थानीय समुदायों की सामूहिक इच्छाशक्ति पर निर्भर रहा है और उसकी कार्यदिशाएं मानव संसाधन में हो रहे निरंतर उत्थान से पोषित होती रही हैं। अनुभव प्राप्त करने के साथ-साथ, इन शिक्षकों ने नए-नए शिक्षकों को सहायता देना और कक्षाओं में उपयोग किए जाने वाले पाठ्यक्रम की विषयवस्तु को परिष्कृत करना आरंभ कर दिया है।

अपनी तृतीयक शिक्षा में आगे बढ़ने में भी कई लोगों की सहायता की गई है। जो प्रश्न सामने खड़े हैं उनके बारे में विचार करते हुए, यह संगठन यह भी सोचता आ रहा है कि पिछले कई वर्षों में जो बातें सीखी गई हैं उन्हें सुव्यवस्थित कैसे किया जाए और देश भर में ज्यादा व्यापक रूप से उसे कैसे प्रस्तुत किया जाए। इस संदर्भ में, फाउंडेशन तथा बांगुई विश्वविद्यालय द्वारा संयुक्त रूप से एक विद्यापीठ (चेयर) की स्थापना के लिए कदम उठाए गए हैं जो कि सामुदायिक शिक्षा के क्षेत्र में शोधकार्य को आगे बढ़ाएगा और प्रमाणित पाठ्यक्रमों को प्रस्तुत करेगा – और इस प्रकार देश की अगली पीढ़ी के शिक्षकों को तैयार करने में आगे और अधिक योगदान दे सकेगा।

बारे में राष्ट्रीय संवाद में किस प्रकार ज्यादा नियमित रूप से भागीदारी निभा सकता है। अप्रैल 2012 में, फाउंडेशन ने सरकारी एवं गैर-सरकारी एजेंसियों के प्रतिनिधियों के लिए एक सेमिनार का आयोजन किया। इस सेमिनार के दौरान शिक्षा के उद्देश्य और समाज में शिक्षक की भूमिका सम्बंधी विचारों का अन्वेषण किया गया। अगले साल, फाउंडेशन ने अपनी सहायता से स्थापित सभी स्कूलों को सरकारी मान्यता देने वाले शिक्षा मंत्रालय के साथ एक करार किया। वर्ष 2014 में, बांगुई विश्वविद्यालय ने फाउंडेशन को शिक्षकों का प्रशिक्षण करने वाली एक संस्था के रूप में फाउंडेशन को मान्यता प्रदान की और उसके सहायकों को डिग्री प्रोग्रामों तक पहुंच उपलब्ध कराई।

अतिरिक्त कार्य की रेखायें

जब फाउंडेशन को शिक्षा के क्षेत्र में अनुभव प्राप्त हो गया तो उसने पाया कि वह अपने जनसमूह के तत्सम्बंधी सरोकारों से और अधिक गहन रूप से जुड़ गया है।

उदाहरण के लिए, अनेक समुदायों के सामने जो एक सामान्य चुनौती थी वह थी बच्चों के पोषण और स्वास्थ्य से सम्बंधी। स्कूल आने वाले बच्चे अक्सर कुछ हद तक कुपोषित थे और स्कूल के दौरान उन्हें ध्यान एकाग्र करने में दिक्कत होती थी। इसके प्रत्युत्तर में, संगठन ने समुदाय के सदस्यों के साथ मिलकर कुछ स्कूलों के शिक्षकों को अत्यंत उत्पादक, स्थायित्वपूर्ण कृषि प्रथाओं में जुटने के लिए क्षमता-निर्माण के उद्देश्य से विषय-सामग्रियों के अध्ययन में सहायता देना आरंभ किया। इन समुदायों ने प्रायोगिक खेती की स्थापना की और वे उनकी देखरेख करने लगे और जो

भी उपज होती थी उनसे हर दिन बच्चों को खाना दिया जाता था। इन प्रायोगिक खेतियों के इर्द-गिर्द, स्थानीय किसानों को इस सम्बंध में भी ज्ञान के सृजन, क्रियान्वयन और संवितरण में सहायता दी जाने लगी कि खाद्य उत्पादन की विविधता और मात्रा कैसे बढ़ाई जा सकती है ताकि उनकी आय बढ़ने के साथ-साथ परिवारों की पौष्टिकता सम्बंधी जरूरतों को भी पूरा किया जा सके।

माता-पिताओं के निवेदन पर एक और कार्यदिशा प्रकट हुई और इसमें उन नौजवानों के साथ काम करना शामिल था जो सामुदायिक विद्यालयों से उत्तीर्ण हुए थे। पिछले कुछेक वर्षों में, फाउंडेशन ऐसे युवाओं को एक कार्यक्रम में भागीदार बनने में सहायता दे रहा है जिसका उद्देश्य है सामुदायिक कल्याण प्रवर्तकों की संख्या बढ़ाना (पृ. 56 देखें)। इनमें से कई युवा शिक्षा, पर्यावरण, स्वास्थ्य और कृषि जैसी सामुदायिक जीवन की अनेक प्रक्रियाओं में योगदान देने के लिए उठ खड़े हुए हैं।

कोविड-19 महामारी शुरू होने पर जबकि देश भर के ज्यादातर स्कूल अस्थायी रूप से बंद हो गए थे, फाउंडेशन ने, राष्ट्रीय स्वास्थ्य विनियमों के अनुरूप, विकेन्द्रीकृत शिक्षा प्रदान करने में छात्रों के परिवारों के साथ-साथ सामुदायिक विद्यालयों के शिक्षकों को सहायता दी। परिवारों के छोटे-छोटे समूहों के साथ उनके अपने-अपने घरों में काम करते हुए, शिक्षकों ने माता-पिताओं को छात्रों की लिखाई-पढ़ाई और गणित इत्यादि में उनकी मदद करने के काम में शामिल किया। जब माता-पिता शैक्षणिक सिद्धान्तों और कुशलताओं से और अधिक सुपरिचित हुए तो वे स्वयं को, शिक्षकों के



कार्य के क्षेत्र

जैसा कि पिछले पन्नों में वर्णन किया गया है, सामाजिक क्रिया के क्षेत्र में किए गए बहाई प्रयासों का दायरा बहुत बड़ा है और वे तृणमूल स्तरों पर व्यक्तियों अथवा मित्रों के छोटे-छोटे पहलों द्वारा आरंभ किए गए सीमित अवधि के कार्यकलापों से लेकर बहाई-प्रेरित विकास संगठनों द्वारा क्रियान्वित उच्च रूप से परिष्कृत सामाजिक एवं आर्थिक विकास कार्यक्रमों तक व्याप्त हैं। वे उन खास समुदायों या समाजों की आवश्यकताओं के प्रति अनुक्रिया के परिचायक हैं जहां उन्हें आरंभ किया जाता है। अतः उनका सम्बंध शिक्षा, कृषि, पर्यावरण, कला और मीडिया, स्वास्थ्य, स्थानीय अर्थ-व्यवस्था, महिलाओं की उन्नति और मानवतावादी सहायता सहित एक या एक से अधिक क्षेत्रों से हो सकता है।

विगत अनेक वर्षों में, इन क्षेत्रों में मनुष्य के सामूहिक ज्ञान में काफी उन्नति हुई है, खास तौर पर उन क्षेत्रों में जो किसी न किसी वैज्ञानिक ज्ञान-विज्ञान की शाखा के हिस्सा हैं। इसलिए इनमें से प्रत्येक क्षेत्र में, विकास सम्बंधी बहाई कार्यकलापों के मूल में यह है कि धर्म और विज्ञान दोनों से ज्ञान का अर्जन कैसे किया जा सकता है और खास चुनौतियों के प्रसंग में उन्हें सुसंगत तरीकों से कार्यरूप में कैसे परिणत

किया जा सकता है और ऐसा करते हुए मनुष्य की स्थिति को बेहतर बनाने के लिए नई अंतर्दृष्टियों का सृजन कैसे किया जा सकता है और नए मार्गों को कैसे प्रकट किया जा सकता है। इस प्रकार के कार्य में निहित जटिलता को देखते हुए, बहाई लोग प्रयास के जिन क्षेत्रों में जुटे हुए हैं उन सबमें सीखने की प्रक्रिया अनिवार्यतया अभी नवजात अवस्था में है और आने वाले दशकों में उसका अन्वेषण जारी रहेगा।

अगले पन्नों में क्रिया के कुछ क्षेत्रों में ऐसे कुछ चुनिन्दा प्रयासों की संक्षिप्त झलक प्रस्तुत की गई है जिन्हें बहाइयों के निवास वाले विभिन्न परिवेशों में संचालित किया जाता है। प्रत्येक क्षेत्र के अंतर्गत जिन प्रयासों की रूपरेखा प्रस्तुत की गई है वे किसी भी रूप में विस्तृत नहीं हैं — वे केवल उन विविध प्रयत्नों की एक झलक पेश करते हैं जो जारी हैं।



शिक्षा

बहाई लेखों में शिक्षा के महत्व पर बहुत ही जोर दिया गया है और उसका वर्णन राष्ट्रों की समृद्धि प्राप्त करने के लिए “प्राथमिक और अत्यंत आवश्यक तत्व” के रूप में किया गया है। बहाउल्लाह ने कहा है: “ज्ञान मानव-जीवन के डैनों के समान है और उसके उत्थान के लिए एक सोपान की तरह। उसे अर्जित करना हर किसी का कर्तव्य है।” “हर बच्चे में विश्व का प्रकाश बनने की संभावना है - और साथ ही उसका अंधकार बनने की भी।” अब्दुल-बहा ने कहा है कि “इसलिए शिक्षा के सवाल को अत्यंत प्राथमिक महत्व का विषय माना जाना चाहिए।”



होनड्यूरस

“ज्ञान मानव-जीवन के डैनों के समान है और उसके उत्थान के लिए एक सोपान की तरह। उसे अर्जित करना हर किसी का कर्तव्य है।”

- बहाउल्लाह

वे आगे लिखते हैं: “बच्चों का शिक्षण और प्रशिक्षण मानवजाति के अत्यंत प्रशंसनीय कार्यों में से एक है और वह सर्वदयालु (परमात्मा) की अनुकम्पा और कृपा को आकर्षित करता है, क्योंकि शिक्षा मनुष्य की सर्व उत्कृष्टता की अपरिहार्य आधारशिला है और वह मनुष्य को शाश्वत महिमा की ऊंचाइयों का मार्ग प्रशस्त करने में सक्षम बनाती है।”

इन सिद्धान्तों से प्रेरित होकर, दुनिया भर में नित बढ़ती हुई संख्या में व्यक्ति और समुदाय व्यापक और विविध शैक्षणिक उपक्रमों को आरंभ कर रहे हैं जो अपनी जटिलता में अनौपचारिक विद्यालयोत्तर ट्यूटोरियल्स से लेकर विश्वविद्यालय स्तरों तक व्याप्त हैं। उनके अंतर्गत किंडरगार्टन और प्राथमिक स्कूलों के बच्चों की कक्षाएं शामिल हैं जिनमें नैतिक सिद्धान्तों की खोज की जाती है और साथ ही युवाओं और वयस्कों के लिए साक्षरता परियोजनाओं, स्त्रियों और लड़कियों के लिए शिक्षण और प्रशिक्षण, सामाजिक कल्याण को बढ़ावा देने के लिए क्षमताएं विकसित करने के उद्देश्य से संचालित कार्यक्रमों और उत्तर-माध्यमिक शिक्षा कार्यक्रमों की प्रस्तुति, पाठ्यक्रमों का विकास, या शिक्षक प्रशिक्षण उपलब्ध कराना जैसे विषयों का भी समावेश है। इसके अतिरिक्त, पूरी दुनिया में सैकड़ों बहाई-प्रेरित शैक्षणिक विद्यालयों की स्थापना की गई है। उनका रूप और आकार चाहे जो भी हो, इन सभी शैक्षणिक उपक्रमों का मुख्य उद्देश्य है मनुष्य में निहित क्षमता को प्रकट करना - पीढ़ी-दर-पीढ़ी लोगों को हृदय और मस्तिष्क के उन गुणों के विकास में सहायता देना जो उन्हें अपने आस-पास की दुनिया को समझने और समाज को बेहतर बनाने में योगदान देने में सक्षम बना सकें।

शिक्षा के प्रति बहाई समुदाय की प्रतिबद्धता के सुफलों में से एक है, 1990 के मध्यकाल से लेकर अबतक, कीब 330 राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थानों के एक वैश्विक नेटवर्क का विकास। प्रशिक्षण संस्थान की संकल्पना एक ऐसी शैक्षणिक एजेंसी के रूप में की गई है जिसका उद्देश्य व्यक्तियों को अपने समुदायों की सेवा के लिए आवश्यक आध्यात्मिक अंतर्दृष्टियां और व्यावहारिक कुशलताएं अर्जित करने

में सहायता देना है। दसियां हजारों स्थानों पर, जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से लोगों के समूह अध्ययन, क्रिया और समीक्षा की एक भागीदारी-मूलक प्रक्रिया में शामिल होते हैं जिसका उद्देश्य उनके समुदायों के आध्यात्मिक जीवन को समृद्ध बनाना है। प्रशिक्षण संस्थान के पाठ्यक्रम व्यक्ति को बहाई समुदाय द्वारा बहाई लेखों के अन्वेषण और समाज की प्रगति में योगदान देने के क्रम में अपने अनुभव से सीखी गई बातों के बारे में संवाद आरंभ करने में सहायता देते हैं। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण रूप से, इन पाठ्यक्रमों का उद्देश्य व्यक्ति को सीखने की इस प्रक्रिया और प्रासंगिक ज्ञान के सृजन एवं प्रसार के कार्य में शामिल करना है।

दुनिया के ज्यादातर हिस्सों में, जब व्यक्तियों के समूह इस शैक्षणिक प्रक्रिया में शामिल होते हैं और सबकी भलाई के उद्देश्य से सेवा के कार्य आरंभ करते हैं तो जो सबसे पहला प्रश्न उभरता है वह है यह सुनिश्चित करना कि उनके समुदाय के बच्चों और किशोरों के लिए अच्छी अकादमिक शिक्षा सुलभ हो। एक-एक छात्र के लिए व्यक्तिगत ट्यूटोरियल सहायता से लेकर सरल साक्षरता कक्षाओं और होमवर्क में सहायता तथा आगे के अध्ययन के लिए साथियों के समूह तक, विविध प्रकार के अनौपचारिक कार्यक्रमलाप शुरू किए गए हैं। बढ़ती हुई संख्या में अनेक स्थानों पर, ट्यूटोरियल सहायता की प्रदायगी के लिए आगे की संरचना के विकास में सहायता देने तथा समुदाय के अंतर्गत इस प्रकार के कार्य में रुचि रखने वाले स्वयंसेवकों को आकर्षित करने से सम्बंधित और भी अधिक स्थायित्वपूर्ण कार्यक्रमलाप सहज रूप से प्रतिफलित हुए हैं। समुदाय के सभी युवाओं के कल्याण के लिए सामूहिक रूप से कार्य करने में शिक्षकों और शैक्षणिक संस्थानों के साथ सहयोग करने के लिए स्थानीय बहाई संस्थाओं ने भी कदम उठाए हैं।

इस प्रकार के अनौपचारिक प्रयासों से भी आगे बढ़कर, स्कूलों की स्थापना विकास के क्षेत्र में बहाइयों द्वारा प्राप्त किए गए अनुभव की एक महत्वपूर्ण विशेषता रही है जिसका इतिहास ईरान में बहाई धर्म के



भारत

आरंभिक काल से जुड़ा हुआ है और जो बाद के वर्षों में दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में फलीभूत होती आई है। पृष्ठ 40-42 में ऐसे शैक्षणिक उपक्रमों के कुछ उदाहरण दिए गए हैं। इसके अतिरिक्त, वर्ष 2000 के आरंभ से ही, अफ्रीका में सामुदायिक विद्यालयों को प्रोत्साहित करने की दिशा में कार्यरत अनेक बहाई-प्रेरित संगठनों के अनुभव के माध्यम से एक कार्यविधि उभर कर सामने आई है। ऐसे ही एक संगठन के प्रयासों के बारे में पृष्ठ 32-33 पर चर्चा की गई है और उस प्रायद्वीप में सीखने की एक सामूहिक प्रक्रिया के माध्यम से परिष्कृत इस कार्यविधि के विभिन्न तत्वों का वर्णन पृष्ठ संख्या 83 पर किया गया है। समाज में शिक्षकों द्वारा निभाई जाने वाली महत्वपूर्ण भूमिका को देखते हुए और इस बात को ध्यान में रखकर कि युवा पीढ़ी के शिक्षण में उनका योगदान कितना अपरिहार्य है, शिक्षक प्रशिक्षण एक ऐसा विषय है जो इन सभी औपचारिक शैक्षणिक पहलों में पिरोया गया है – युगांडा के संगठन के उदाहरण के माध्यम से, पृष्ठ संख्या 46 पर इस विषय पर प्रकाश डाला गया है। पिछले कुछ दशकों में तृतीयक शिक्षा के क्षेत्र में भी अनुभव का लगाचार संचय हुआ है। उत्तर-माध्यमिक कार्यक्रम पेश करने वाले विश्वविद्यालयों और संगठनों के कुछ उदाहरण पृष्ठ संख्या 47 पर हैं।

शैक्षणिक प्रयासों के इस व्यापक दायरे में, उन प्रयासों का विशेष स्थान है जिनका उद्देश्य समाज की बेहतरी में योगदान देने के लिए युवाओं की क्षमता के निर्माण के बारे में सीखना है। हालांकि वे शिक्षा के व्यापक विषय के दायरे में आते हैं किंतु फिर भी उन पर पृष्ठ 48 से आरंभ होने वाले एक अनुवर्ती खंड में प्रकाश डाला गया है।



ब्राज़ील



थाइलैंड



फिलीपींस

चुनिन्दा शैक्षणिक पहल

ट्यूटोरियल सेंटर, डॉमिनिकन गणराज्य

कोरोना वायरस महामारी के कारण लगे लॉक-डाउन की अवधि में, डॉमिनिकन गणराज्य के सान जुआन प्रांत में व्यक्तियों के एक समूह ने समुदाय के बच्चों की पढ़ाई-लिखाई सम्बंधी जरूरतों को पूरा करने में मदद के लिए एक परियोजना आरंभ की। 'फ्लोरेस प्रोजेक्ट' नामक यह परियोजना 5 से 11 आयुवर्गों के करीब 40 बच्चों को अपनी सेवा प्रदान करती है और इस कार्य के लिए वह समुदाय के उन शिक्षकों और स्वयंसेवकों पर निर्भर है जो साक्षरता, गणित, अंग्रेजी और कला सहित व्यापक विषयों में शिक्षकीय सहायता उपलब्ध कराते हैं।

किंडरगार्टेन्स के लिए सहायता, मंगोलिया

1993 में स्थापित मंगोलियन विकास केन्द्र ऐसे कार्यक्रमों का संचालन करता है जिनके माध्यम से गुणवत्तापूर्ण आध्यात्मिक एवं बौद्धिक प्री-प्राथमरी शिक्षा की आवश्यकता को पूरा किया जाता है। शिक्षण की गुणवत्ता को मजबूत बनाने के लिए, यह संगठन सरकारी किंडरगार्टेन्स में शिक्षकों को सहायता उपलब्ध कराता है। स्वाभाविक रूप से, इससे माता-पिताओं और प्राचार्यों के प्रशिक्षण सहित अन्य अतिरिक्त

कार्यदिशाओं के लिए भी मार्ग प्रशस्त हुए हैं। 2022 की स्थिति में, यह संगठन पूरे मंगोलिया में 29 किंडरगार्टेन्स के शिक्षकों के साथ कार्य कर रहा था और 4,500 से भी अधिक बच्चों तक पहुंच प्राप्त कर रहा था। मंगोलियाई समाज में बच्चों की शिक्षा के विषय पर परिसंवाद में योगदान देने हेतु अवसरों के प्रायोजन के लिए, सेंटर ने देश भर के स्कूलों और अधिकारियों के साथ भी सहयोग किया है।

छात्रावास, थाइलैंड

कैरेन नामक प्रजातीय समूह से आने वाले उन छात्रों के लिए जो आस-पास के क्षेत्रों में लेकिन घर से स्कूल आने-जाने की दृष्टि से बहुत दूर रहते हैं, ओमकोइ (थाइलैंड) में एक छात्रावास का संचालन किया जाता है। छात्रावास में करीब 50 छात्र रहते हैं जहां उनके आध्यात्मिक और बौद्धिक कल्याण पर ध्यान दिया जाता है और उनके द्वारा विद्यालय में प्राप्त की जा रही शिक्षा के पूरक के रूप में एक प्रशिक्षण कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया जाता है। उनकी अकादमिक शिक्षा में सहायता देने के अलावा, यह कार्यक्रम उन्हें आस-पास के गांवों और पड़ोसी समुदायों की सेवा के अवसरों से भी जोड़ता है। चूंकि यह छात्रावास करीब दो दशकों से संचालित है, अतः विश्वविद्यालय की शिक्षा पाने के लिए वहां से चले जाने वाले कई भूतपूर्व छात्र इस परियोजना में सहायता देने वापस भी आए।

साक्षरता, फिलीपींस

1991 में, देश के जनसमूहों की शिक्षा में सहायता देने के लिए, फिलीपींस में 'डॉनब्रेकर्स फाउंडेशन' की स्थापना की गई। पिछले एक दशक से भी अधिक समय से, यह सामुदायिक विद्यालयों को प्रोत्साहन देने के माध्यम से बच्चों के कल्याण को पोषित करने में शिक्षकों को सहायता देता आ रहा है और अपने समुदायों को बेहतर बनाने में योगदान देने के लिए युवाओं की क्षमता के निर्माण के बारे में सीख रहा है। इसके प्रयासों में जनजातीय 'मांग्यान' जनसमूह में साक्षरता बढ़ाने के बारे में सीखना भी शामिल है। इसकी कार्यविधि का एक हिस्सा है युवाओं और नौजवानों को नैतिक शिक्षा पाठ्यक्रम के अध्ययन में शामिल करना जिसका उद्देश्य भाषा-क्षमता को बेहतर बनाना और उन्हें जटिलता के बढ़ते स्तर पर अपने गांवों में शैक्षणिक गतिविधियों के संचालन में सहायता करना है। एक गांव में, समुदाय द्वारा स्थानीय सम्मेलनों के साथ-साथ प्रशिक्षण-रथल के रूप में एक सामान्य सुविधा का निर्माण किया जा रहा है ताकि शैक्षणिक कार्यक्रमों में शामिल होने के लिए युवा लोगों की यात्रा की दूरी कम हो सके।

साक्षरता, घाना

1990 के दशक के मध्य में, घाना के बहाई समुदाय ने देश के कई क्षेत्रों में "एनलाइटनिंग द हार्ट्स" नामक एक नैतिक



घाना



संयुक्त राज्य

शिक्षा एवं साक्षरता अभियान शुरू किया। इस अनुभव की प्रभावशीलता के कारण 2001 में ओलिंगा फाउंडेशन फॉर ह्यूमन डेवलपमेंट की स्थापना हुई जिसने इस अभियान को पब्लिक स्कूलों के छात्रों तक व्यापक बना दिया। यह संगठन ग्रामीण क्षेत्रों में अपर प्राथमरी छात्रों के बीच व्याप्त उच्च निरक्षरता दर के निराकरण के लिए जिला शिक्षा कार्यालयों के साथ सहयोग करता है। नौ महीने की निर्धारित अवधि में स्थानीय भाषा में पढ़ने-लिखने के छात्रों के कौशल को बेहतर बनाने में सहायता करने के लिए शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जाता है। साक्षरता निर्देश के लिए संगठन की कार्यप्रणाली पर आधारित प्रशिक्षण प्राप्त करने के अलावा, शिक्षक उन सामग्रियों का भी अध्ययन करते हैं जिनका उद्देश्य उनकी नैतिक सामर्थ्य का निर्माण करना और शिक्षण के प्रति उनके दृष्टिकोण में सुधार लाना है। उक्त कार्यक्रम के प्रभाव से, कई स्कूलों में शारीरिक दंड के मामले पूरी तरह से समाप्त हो गए हैं और लड़कियों की शिक्षा-सम्बंधी जरूरतों पर ज्यादा ध्यान दिया जाने लगा है।

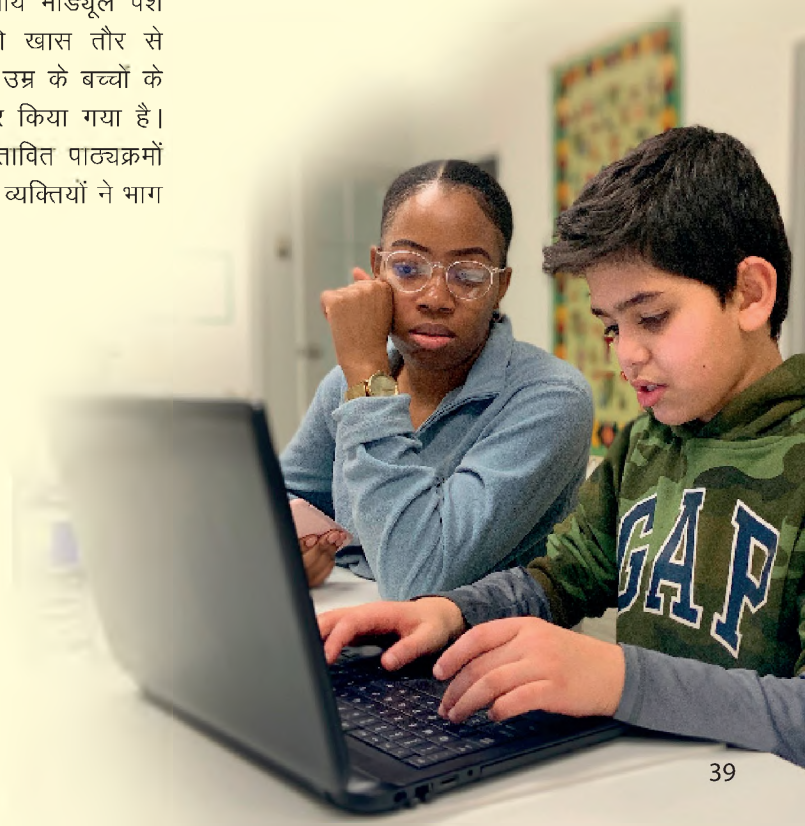
माता-पिता की शिक्षा, संयुक्त राज्य

संयुक्त राज्य अमेरिका में वर्ष 2000 में 'पैरेंट युनिवर्सिटी' की स्थापना 'सवाना' क्षेत्र के निम्न आय वाले इलाकों में रहने वाले परिवारों को अपने बच्चों की शिक्षा का और

अधिक स्वामित्व ग्रहण करने और स्थानीय जनसमूह के सामने आने वाली कुछ सामाजिक समस्याओं — जैसे गरीबी और शिक्षा के औपचारिक अवसरों की अपेक्षाकृत कम सुलभता — को दूर करने में सहायता देने के उद्देश्य से की गई थी। यह संगठन माता-पिता के साथ-साथ विस्तारित परिवार के अन्य सदस्यों के लिए विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रम प्रस्तुत करता है जिनसे उन्हें अपने बच्चों की शिक्षा के लिए अनुकूल वातावरण बनाने के लिए जरूरी ज्ञान और कौशल प्राप्त होता है। पैरेंट युनिवर्सिटी ने अभी हाल ही में "अर्ली लर्निंग कॉलेज" नामक एक नया बहु-सत्रीय मॉड्यूल पेश करना शुरू किया है जो खास तौर से पांच वर्ष और उससे कम उम्र के बच्चों के माता-पिता के लिए तैयार किया गया है। पैरेंट युनिवर्सिटी द्वारा प्रस्तावित पाठ्यक्रमों में अब तक लगभग 3,000 व्यक्तियों ने भाग लिया है।

“बच्चों का शिक्षण और प्रशिक्षण मानवजाति के अत्यंत प्रशंसनीय कार्यों में से एक है ...”

— अब्दुल-बहा



विद्यालय

विकास के क्षेत्र में, स्कूलों की स्थापना बहाई अनुभव की एक महत्वपूर्ण विशेषता रही है। वर्तमान समय में, पूरी दुनिया में 800 से भी अधिक बहाई-प्रेरित अकादमिक विद्यालय संचालित किए जा रहे हैं। इनमें से आधे से भी ज्यादा अफ्रीका में हैं, करीब 200 एशिया में, लगभग 100 ऑस्ट्रेलेशिया में और कुछ दर्जन अमेरिकाज और यूरोप में हैं। शिक्षा के ये केंद्र विभिन्न प्रकार के परिवेशों में स्थापित हैं और वे दसियों बच्चों की संख्या वाले साधारण किंडरगार्टन्स से लेकर हजारों बच्चों को आरंभिक एवं माध्यमिक स्तरों की शिक्षा प्रदान करने वाले बड़े-बड़े स्कूलों की श्रेणियों में आते हैं। इन सबका उद्देश्य अकादमिक उत्कृष्टता प्राप्त करना, नैतिक मूल्यों और आध्यात्मिक सिद्धान्तों के प्रयोग के माध्यम से समुदाय की सेवा पर विशेष जोर देना और वे जिस समाज में कार्य कर रहे हैं उसकी खास आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयास करना है। दुनिया के अलग-अलग हिस्सों से प्राप्त कुछ उदाहरण यह दर्शाते हैं कि ये स्कूल इन आदर्शों को व्यावहारिक रूप देने के प्रयास में किस प्रकार जुटे हुए हैं।

“सभी महान सेवाओं में सबसे अधिक श्रेष्ठ है बच्चों की शिक्षा और विभिन्न विज्ञानों, शिल्पों और कलाओं को बढ़ावा देना।”

- अब्दुल-बहा

ब्राज़ील की राजधानी, ब्राज़ीलिया, में स्थित 'स्कूल ऑफ दि नेशन्स' नर्सरी से लेकर 12वीं कक्षा तक के करीब 850 विद्यार्थियों को अंग्रेज़ी और पुर्तगाली में शिक्षा प्रदान करता है। विद्यालय कार्यक्रम का केन्द्रीय विषय सामुदायिक सेवा है। स्कूल के कर्मचारी और छात्र दोनों ही उच्च आदर्शों को अपने काम में साकार करने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। अपना उदाहरण प्रस्तुत करके, यह विद्यालय शहर के अनेक किंडरगार्टन्स को सहायता उपलब्ध कराता है, अपने परिवेश को सुन्दर बनाने में उनकी मदद करता है और उनके शैक्षणिक गतिविधियों को समृद्ध बनाता है।

पश्चिम अफ्रीका में, **नियामी (नाइजर)** में स्थित 'लाइसेइ इनॉक ओलिंगा' लगभग 450 विद्यार्थियों को माध्यमिक शिक्षा प्रदान करने के माध्यम से प्री-स्कूल उपलब्ध कराता है। इसे उस देश की सबसे पहली अकादमिक संस्थाओं में से एक माने जाने के अलावा, इस स्कूल ने ऐसे कई तरीके खोज निकाले हैं जिनसे वह अपने प्रयासों का विस्तार अपने छात्रों के दायरे से आगे बढ़कर भी कर सकता है। उदाहरण के लिए, उसने शहर के अन्य स्कूलों के शिक्षकों को प्रशिक्षण देकर उनके साथ सहयोग करने में अनुभव प्राप्त किया है और अभी बिल्कुल हाल ही में वह ऐसे तौर-तरीकों के बारे में विचार कर रहा है जिनसे वह देश के ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यालयों की स्थापना में



सहायता दे सकता है जहां गुणावत्तापूर्ण औपचारिक शिक्षा तक लोगों को सीमित पहुंच हासिल है।

कराची (पाकिस्तान) में 'न्यू डे' नामक स्कूल की स्थापना 1978 में मात्र तीन छात्रों के साथ की गई थी। अब यह स्कूल 700 से भी अधिक छात्रों की संख्या के साथ एक सम्पूर्ण प्राथमिक एवं माध्यमिक कार्यक्रम उपलब्ध कराता है। छात्रों का प्रथम समूह वर्ष 1991 में माध्यमिक शिक्षा मंडल द्वारा आयोजित लोक परीक्षा में शामिल हुआ और तब से लेकर अब तक स्कूल ने अकादमिक उपलब्धि का अपना विशेष कीर्तिमान कायम रखा है। आरंभिक बाल्यावरस्था से लेकर माध्यमिक विद्यालय तक संचालित इसका नैतिक विकास कार्यक्रम छात्रों के बीच मानवता की सेवा की भावना का संचार करता है।

टोंगा में, 'दि ओशन ऑफ लाइट इंटरनेशनल स्कूल' लगभग 400 छात्रों को प्री-टर्शियरी (पूर्व-तृतीयक) ग्रेड के स्तर प्रदान करता है। उसका उद्देश्य ऐसे व्यक्तियों को तैयार करना है जो न केवल अकादमिक रूप से उत्कृष्ट हों बल्कि जिनमें ऐसी आदर्श आदतें और आध्यात्मिक गुण भी हों जिनका उपयोग उनके स्थानीय समुदायों और वृहत्तर समाज की सेवा के लिए किया जा सके। माता-पिताओं का सहयोग प्राप्त करने से भी बढ़कर, इस विद्यालय की कार्य-पद्धति के कारण उसे देश के शिक्षामंत्री से भी सरकारी मान्यता प्राप्त हुई है।

अकादमिक एवं नैतिक शिक्षा को एकीकृत करने का प्रयास

बहुत ही साधारण स्तर से शुरुआत करते हुए, **मकाऊ** का 'स्कूल ऑफ दि नेशन्स' 1988 में सात शिक्षकों और पांच विद्यार्थियों के साथ आरंभ में एक अपार्टमेंट के बाहर चालू हुआ। वर्तमान समय में यह किंडरगार्टन से लेकर हाई स्कूल तक 600 से भी

अधिक छात्रों को शिक्षा दे रहा है। बाद के वर्षों में यह विद्यालय उच्च कोटि की अकादमिक शिक्षा प्रदान करने के लिए मशहूर हुआ और उसके चरित्र विकास कार्यक्रम के लिए उसे राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय दोनों ही स्तरों पर पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

स्कूल की स्थापना के समय से ही, उसके संस्थापकों ने ऐसे शैक्षणिक तरीके की आवश्यकता को पहचाना जो छात्रों की बौद्धिक क्षमताओं का विकास करने के साथ-साथ उनके नैतिक एवं आध्यात्मिक आधार को भी मजबूत बनाए जो उन्हें जीवन भर मार्गदर्शन प्रदान कर सकें। नैतिक शिक्षा को वहां पृथक् कक्षा के रूप में नहीं देखा जाता, बल्कि स्कूल का ध्यान यह सुनिश्चित करने पर केन्द्रित रहता है कि दूसरों के प्रति दया, अपने समुदाय की सेवा, ईमानदारी, उदारता, एकता और सदभाव जैसे सिद्धान्तों सहित नैतिक शिक्षा के तत्वों को शैक्षणिक निर्देश के सभी पहलुओं में परोसा जाए। ऐसे छात्रों को तैयार करने पर जोर देते हुए जो अपने समाज की भलाई और प्रगति में योगदान दे सकें, यह विद्यालय पाठ्यक्रम के एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में सेवा परियोजनाओं का भी समावेश करता है। अध्ययन एवं व्यावहारिक सेवाओं के माध्यम से, विद्यालय के कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को स्थानीय जरूरतों की पहचान करना सीखने में मदद देना और अपने समुदाय की भौतिक एवं सामाजिक वारसविकता को बेहतर बनाने वाली परियोजनाओं में सहभागी बनाना है। स्कूल के कर्मचारियों के बीच अध्ययन, क्रिया और समीक्षा की पद्धति स्कूल को अपने अनुभवों से सीखने और समयानुसार अपने कार्य में सुधार लाने में सक्षम बनती है। साथ ही यह स्कूल अपने आस-पास के अन्य स्कूलों के साथ मिलकर भी कार्य करता है और उन्हें विज्ञान और धर्म के बीच समन्वय, मानवजाति की एकता और सत्य की स्वतंत्र खोज जैसी विशेष अवधारणाओं के अन्वेषण के लिए आमंत्रित करता है, जो कि उनके कार्य-संचालन और साथ ही उनके पाठ्यक्रम की विषयवस्तु की गुणवत्ता बढ़ाने में खास तौर से प्रभावी साबित हुए हैं।

सीख के प्रवाह को सहज बनाने के लिए नेटवर्क

विगत वर्षों में, ऐसे समान विचारधारा के विद्यालयों को स्थानीय से लेकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक एक-दूसरे से सीखने में मदद देने के लिए, संयुक्त राज्य में नैतिक शिक्षा की कक्षाएं प्रस्तुत करने वाले एक शिक्षक और उनमें भाग लेने वाले बच्चों के माता-पिताओं के बीच वार्तालापों के परिणामस्वरूप माइक्रो स्कूलों का एक नेटवर्क शुरू हुआ।

मकाउ

एक होम-स्कूल समूह में कुछेक बच्चों से प्रारंभ करते हुए, इन प्रयासों को क्रमिक रूप से औपचारिक रूप दिया गया और किंडरगार्टन से लेकर हाई स्कूल तक कक्षाएं उपलब्ध कराने वाले एक बहाई-प्रेरित प्रायवेट स्कूल को लाइसेंस दिया गया। इस आरंभिक प्रयास के संस्थापकों ने पास-पड़ोस के समुदायों और साथ ही माइक्रो-स्कूल मॉडल के बारे में सीखने में रुचि रखने वाले स्थानीय समूहों के साथ सम्बंध विकसित किए। इस नेटवर्क की स्थापना ने व्यक्तियों को ऐसे शिक्षकों की पहचान करने में सहायता दी जो स्वयं अपने माइक्रो-स्कूल आरंभ कर सकते थे और इस कार्य में शामिल व्यक्तियों को एक-दूसरे के अनुभवों से सीखने में सक्षम बनाया। इन स्कूलों के कार्य-संचालन की विधि और उनके मिशन के केंद्र में यह विश्वास है कि अपने समुदाय की सेवा और मानवजाति की एकता मानव की प्रकृति के मूलभूत पहलु हैं। समाज के भीतर जातीय पूर्वाग्रह पर विजय पाने के प्रयास भी स्कूलों के कार्यों का एक विशाल पहलु है।

कांगो गणराज्य के प्वायंट-नॉयर शहर में, ग्यारह बहाई-प्रेरित सामुदायिक विद्यालयों के बीच एक सहयोगात्मक नेटवर्क उभर कर सामने आया (अगला पृष्ठ देखें) क्योंकि इन स्कूलों को आरंभ करने वालों ने समीक्षा और परामर्श के लिए अपनी नियमित मुलाकातें जारी रखीं। शिक्षकों और प्रबंधन समितियों को शामिल करने वाले इस नेटवर्क के माध्यम से, ये विद्यालय शिक्षा में सुसंगति सुनिश्चित करने के लिए अपने बीच अंतर्दृष्टियों के आदान-प्रदान और संसाधनों के प्रवाह को सहज बनाने में सक्षम हुए हैं। शिक्षक और प्रशासक उस क्षेत्र में उभरते हुए शैक्षणिक परिसंवादों में योगदान देना भी सीख रहे हैं।



भारत में, देश भर के 20 स्कूलों का एक समूह पंचगणी के न्यू एरा हाई स्कूल द्वारा प्रायोजित नियमित सेमिनारों के लिए एकजुट हुआ है ताकि उच्च गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के क्षेत्र में वे जो कुछ भी सीखते आए हैं उन्हें व्यवहार कर सकें - खास तौर पर इस संदर्भ में कि ऐसे युवाओं को कैसे तैयार करें जो अपनी शैक्षणिक उत्कृष्टता और समाज के प्रति सेवा की भावना के लिए जाने जाएं। उनके विचार-विमर्श बहाई शिक्षाओं में निहित आदर्शों को पाठ्यक्रम और स्कूल के काम-काज में क्रियान्वित करने के लिए आवश्यक विभिन्न संस्थात्मक क्षमताओं के इर्द-गिर्द केन्द्रित होते हैं। इस प्रक्रिया का एक परिणाम यह सामने आया है कि इनमें से कई स्कूल स्वयं अपने राज्यों में स्कूलों के नेटवर्क में योगदान देने के लिए प्रेरित हुए हैं।

महाद्वितीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तरों पर, बहाई अंतर्राष्ट्रीय विकास संगठन ने भी स्कूल समूहों को एक साथ लाने के लिए सम्मिलनों का आयोजन किया है ताकि वे शिक्षकों की पहचान और उन्हें प्रशिक्षित करने, पाठ्यक्रमों में आध्यात्मिक अवधारणाओं को पिरोने, माता-पिताओं और वृहत्तर समुदाय के साथ स्कूल के सम्बंधों को बेहतर बनाने तथा सरकार एवं नागरिक समाज के साथ मजबूत सम्बंध स्थापित करने जैसे सीखने-समझने के क्षेत्रों में नई खोज करें।

सामुदायिक विद्यालयों को बढ़ावा देना

सामुदायिक विद्यालयों को बढ़ावा देने के बारे में सीखने वाले विकास संगठनों की सहायता के माध्यम से, अफ्रीका, एशिया और प्रशांत महाद्वीपों के बहाई-प्रेरित विद्यालयों का एक बड़ा अनुपात उभर कर सामने आया है, जिनमें से कुछ का उल्लेख पिछले खंड में किया जा चुका है। सरोकार का एक



संयुक्त अरब अमीरात

प्रबल विषय जिसके प्रति अनुक्रिया करने के लिए दुनिया भर के अनेक बहाई समुदायों ने प्रयास किया है वह है ग्री-प्रायमरी और प्रायमरी स्कूल स्तरों पर, जहां राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली की पहुंच सीमित है, शैक्षणिक निर्देश का विस्तार। वर्ष 2000 के आरंभ से ही, उपरोक्त क्षेत्रों में बहाई-प्रेरित एजेन्सियों की एक सतत बढ़ती हुई संख्या गांवों और शहरों में सामुदायिक विद्यालयों की संख्या बढ़ाने की दिशा में काम करती आ रही है (इस कार्यक्रम के इतिहास के बारे में और अधिक जानकारी के लिए, पृष्ठ 83 देखें)। वर्तमान समय में, सामुदायिक विद्यालयों की स्थापना को 22 देशों में संगठनों द्वारा सहायता दी जा रही है। सामूहिक रूप से, ये एजेन्सियां 575 स्कूलों में करीब 2000 शिक्षकों के साथ सहयोग कर रही हैं और इस प्रकार वे 43,000 छात्रों तक अपनी पहुंच कायम कर रही हैं।

किसी विद्यालय का जैविक विकास

मुख्य रूप से स्थानीय रूप से उपलब्ध संसाधनों पर निर्भर होते हुए, सामुदायिक विद्यालय अवसर ग्री-स्कूल स्तर पर एकल कक्षा से आरंभ होते हैं। स्थानीय क्षेत्र की परिस्थितियों के अनुसार उनका क्रमिक रूप से विकास होता है और धीरे-धीरे प्राथमिक विद्यालय के अंतिम वर्ष तक और कुछ मामलों में प्राथमिक स्तर से भी आगे उन्नत होते हुए, वे और भी अधिक शिक्षकों और ग्रेड स्तरों को शामिल करते चले जाते हैं।

लगातार जारी शिक्षक प्रशिक्षण

सामुदायिक विद्यालयों को बढ़ावा देने वाले संगठनों के कार्य के मूल में है शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का विकास जिससे अपने-अपने समुदायों में बच्चों को ग्री-प्रायमरी एवं प्रायमरी शैक्षणिक निर्देशों की प्रस्तुति के लिए युवाओं और वयस्कों की क्षमता के निर्माण में मदद मिलती है। ये संगठन बहाई शिक्षाओं में निहित ऐसे शिक्षकों को तैयार करने की संकल्पना से अनुप्राणित हैं जिन्हें “अपने आचरण के उच्च आदर्शों और सामान्य उत्कृष्टता के कारण विशिष्टता” हासिल है और जो “विज्ञान एवं कलाओं के सम्पूर्ण ज्ञान से सम्पन्न विद्वान और शिक्षाविद” हैं। शिक्षकों के प्रशिक्षण के तौर-तरीकों में शिक्षकों के लिए प्रासंगिक विषयवस्तु के अध्ययन तथा कक्षा में वे जो भी अनुभव प्राप्त कर रहे हैं उनके बारे में दूसरों के साथ मिलकर समीक्षा करने के नियमित अवसरों का सृजन करके सिद्धान्त और प्रयोग को समाहित करने का प्रयास किया जाता है।



नेपाल

एक नायक के रूप में समुदाय

सामुदायिक विद्यालयों को प्रोत्साहित करने वाले संगठनों की एक बुनियादी धारणा यह रही है कि अपने समाज में रहने वाली युवा पीढ़ियों को शिक्षा प्रदान करने में स्थानीय समुदाय नायकों के रूप में अपनी भूमिका निभा सकते हैं। इस सम्बंध में, अनुभव यह रेखांकित करता है कि शिक्षा की प्रक्रिया के इर्द-गिर्द समुदायों में स्वामित्व की भावना होनी चाहिए और उन्हें विद्यालय की स्थापना में सहायता देनी चाहिए।

इस प्रकार संगठनों का बहुत सारा प्रयास समुदायों को यह सहायता देने पर संकेन्द्रित है कि वे अपने बच्चों की शिक्षा के लिए अपनी आकांक्षाओं की तलाश करें और साथ ही उन्हें यह मदद देने पर कि वे इस बात पर विचार करें कि इस अनिवार्य दायित्व को पूरा करने का जिम्मा कैसे उठा सकते हैं। जब इस महत्वपूर्ण दायित्व के इर्द-गिर्द जागरूकता का विकास हो जाता है तो उनके स्थानीय क्षेत्रों के दायरे में ऐसे व्यक्तियों की पहचान की जाती है जिन्हें युवा पीढ़ियों को शिक्षित करने की जिम्मेदारी दी जा सकती है। जब विद्यालयों की स्थापना हो जाती है तो समुदाय के सदस्य विद्यालय-शुल्क के भुगतान के अलावा भी विविध तरीकों से इन विद्यालयों के पोषण के लिए अपनी प्रतिबद्धता झलकाते हैं। उदाहरण के लिए, कई व्यक्तियों ने छात्रों और शिक्षकों के लिए भोजन की व्यवस्था की है, जमीन का दान किया है, कक्षाओं के निर्माण में सहयोग दिया है और विद्यालय की कृषिभूमि के रखरखाव का जिम्मा लिया है।

ऊपर के खंड में जिन उदाहरणों का उल्लेख किया गया है उन्हें शामिल करते हुए, दुनिया के विभिन्न

क्षेत्रों में जो अनुभव प्राप्त किए गए हैं वे उस संभावना की एक झलक दिखाते हैं जो तब मौजूद होती है जब बच्चों की शिक्षा की चिंता रखने वाले विभिन्न नायकों – विद्यालय, शिक्षकों, माता-पिताओं और वृहत्तर समुदाय – के बीच पारस्परिकता और आपसी सहयोग स्थापित किया जाता है। शिक्षक को विषयवस्तु के केवल एक उदासीन प्रदाता के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि बच्चों के आध्यात्मिक और बौद्धिक विकास तथा किसी समुदाय की समग्र प्रगति में वह अन्य सहायकों के साथ एक अपरिहार्य नायक हो सकता है। बच्चों को विभिन्न विषयों में ज्ञान अर्जित करने में सहायता देने के अलावा, शिक्षक किसी भी समुदाय में रखने की एक संस्कृति को पोषित कर सकते हैं, दूसरों के प्रति सेवा की भावना का विकास कर सकते हैं और प्रेम, एकता एवं विश्वासपात्रता जैसे सिद्धान्तों के प्रयोग को बढ़ावा दे सकते हैं। किसी जनसमूह के जीवन के एक अंतर्भूत अंग के रूप में, कोई भी सामुदायिक विद्यालय जैसे-जैसे शक्ति ग्रहण करता है, वैसे-वैसे वह समुदाय के विभिन्न पहलुओं में ज्यादा विचारशीलता के साथ योगदान करना सीख सकता है। अवसर सरल तरीकों से तथा अपने द्वारा प्रदान की जाने वाली शिक्षा के एक सहज विस्तार के रूप में, सामुदायिक विद्यालय, उदाहरण के तौर पर, स्थानीय खाद्य उत्पादन और स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों में सुव्यवस्थित कदम उठाना आरंभ कर सकता है और पुस्तकालय की स्थापना जैसे माध्यमों से ज्ञान के व्यापक दायरे तक पहुंच उपलब्ध करा सकता है।

“यह विद्यालय एक महत्वपूर्ण एवं अपरिहार्य संस्थाओं में से एक है जो वास्तव में मानवजाति के भवन को सहारा और सुरक्षा प्रदान करता है।”

– अब्दुल-बहा

संक्षेप में: समाज के जीवन में सामुदायिक विद्यालय

एस्वैटिनी

पिछले एक दशक से भी अधिक समय से, सेटसेम्बिसो सेबुन्ये फाउंडेशन एस्वैटिनी में सामुदायिक विद्यालयों को सहायता देता आ रहा है। आरंभ में इसने ऐसे स्थानों की पहचान करने में मदद की जहाँ सामुदायिक विद्यालयों की स्थापना के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ मौजूद थीं, लेकिन समय बीतने के साथ, कई नए समुदाय स्वयं ही इस संगठन से सम्पर्क करने लगे। ऐसे ही एक स्थान पर, होहो क्षेत्र के म्कोलो गांव के निवासियों ने एक संभावित शिक्षक द्वारा, जिसकी पहचान उस जनसमूह ने स्वयं ही की थी, संगठन के माध्यम से प्रस्तावित एक शिक्षक प्रशिक्षण में भाग लेने के लिए निवेदन के साथ फाउंडेशन से सम्पर्क किया।

जब वह व्यक्ति प्रशिक्षण प्राप्त कर रहा था तब समुदाय ने गांव के मुखिया द्वारा दान की गई जमीन पर एक कक्षा का निर्माण करना आरंभ किया। स्थानीय अग्रणी लोगों के लिए आयोजित एक सम्मेलन में, सभी लोगों को योगदान देने के लिए प्रोत्साहित किया गया। समुदाय में रहने वाले राजमिस्त्रियों और इलेक्ट्रीशियनों ने अपनी-अपनी कुशलताओं की पेशकश की। अनेक लोगों, खास तौर पर युवाओं ने, पानी एकत्रित करने और संरचना तैयार करने के कार्य में स्वयंसेवा दी जबकि अन्य लोगों ने कार्य में जुटे लोगों के लिए खाना बनाया। जब म्कोलो डी-स्कूल स्थापित हो गया तो समुदाय ने बच्चों के लिए भोजन उपलब्ध कराके और शिक्षक के वेतन में सहायता देकर स्कूल को सहयोग देना जारी रखा। उन्होंने कई रूपों में शिक्षक के प्रति अपनी सराहना व्यक्त की और सतत इस बात के

लिए अपना सरोकार प्रकट किया कि उनके समुदाय के नौजवान सदस्यों को समग्र शिक्षा प्राप्त होती रहे।

इंडोनेशिया

इंडोनेशिया में सामुदायिक विद्यालयों के कार्य के माध्यम से, अपने-अपने स्थानों पर शिक्षा-प्रक्रियाओं में निरंतर विभिन्न नायक संलग्न हो रहे हैं। अनेक स्थानों पर, किशोर बच्चों की शिक्षा को हमेशा ग्राम शासन के दायित्व से घनिष्ठ रूप से सम्बंधित करके नहीं देखा जाता था, लेकिन समय बीतने के साथ शिक्षकों, विद्यालयों और स्थानीय शासन के बीच के सम्बंध मजबूत हुए हैं। एक ऐसी पद्धति का उभरना आरंभ हो गया है जहाँ शिक्षक समुदाय की उन्नति सम्बंधी प्रक्रियाओं में सक्रिय रूप से शामिल हो रहे हैं और स्थानीय शासन के सदस्य स्कूलों के क्रियाकलापों में अपनी भागीदारी निभा रहे हैं। शिक्षा विभाग के सदस्यों ने शिक्षक-प्रशिक्षण सेमिनारों में बढ़-चढ़कर भाग लिया है और स्थानीय समुदाय एवं शासन को शामिल करने वाले अतिरिक्त अवसरों ने डी-स्कूल शिक्षा एवं गांव में क्षमता के विकास के इर्द-गिर्द परामर्श, योजना-निर्माण और क्रिया के लिए अवसर उत्पन्न किए हैं। इसी तरह, माता-पिता भी दिन-प्रतिदिन अपने बच्चों की शिक्षा के कार्य में संलग्न हो रहे हैं। शिक्षा की प्रक्रियाओं से माता-पिताओं के सम्बंध को और अधिक प्रोत्साहित करने के लिए स्थानीय शासन के सहयोग से उनके लिए सेमिनारों का आयोजन किया जा रहा है। कुछ उदाहरणों में, शिक्षा की प्रकृति और महत्ता के बारे में विचार करने में सहायता देने के लिए सामग्रियाँ तैयार की गई हैं जिनके अंतर्गत माता-पिता की भूमिका तथा शिक्षा के बारे में और अधिक समग्र अवधारणाओं का समावेश किया गया है।



मलारी



इंडोनेशिया



तंज़ानिया

मलावी

मलावी के अनेक स्थानों के निवासियों ने सामुदायिक विद्यालयों के अस्तित्व को कायम रखने और उनके सतत विकास के बारे में परामर्श जारी रखने का रीझा उठाया है जिसके अंतर्गत शिक्षकों का कल्याण और छात्रों का समग्र स्वास्थ्य भी शामिल है। विद्यालय प्रबंधन समितियों की सहायता से, अनेक समुदायों ने बच्चों का भोजन उपलब्ध कराने के लिए विद्यालयों में बगीचों का विकास किया है। जहां कहीं भी सभी छात्रों की जरूरतों को पूरा करने के लिए बगीचों के विकास के लिए पर्याप्त भूखंड उपलब्ध नहीं हैं, वहां परिवार एवं समुदाय के अन्य सदस्य स्कूल की मदद के लिए अवसर मकई, सोयाबीन या मूंगफली का योगदान करते हैं। इस भागीदारी में पूरा समुदाय शामिल होता है, न कि केवल वे लोग जिनके बच्चे इन सामुदायिक विद्यालयों में पढ़ते हैं। संस्थाओं के स्तर पर, गांव के विकास पर ध्यान देने वाले मौजूदा सामुदायिक समूह विद्यालयों की प्रगति के बारे में विचार करने के लिए प्रबंधन समितियों के साथ एकजुट हुए हैं। विद्यालयों के प्रभाव का विस्तार आस-पास के क्षेत्रों में भी होने लगा है। उदाहरण के लिए, शिक्षक अन्य विद्यालयों के ऐसे छात्रों को अतिरिक्त ट्यूटोरियल कक्षा उपलब्ध कराते हैं जिन्हें अतिरिक्त सहायता की जरूरत है। इसके अलावा, शिक्षकों को सेवाकातीन प्रशिक्षण उपलब्ध कराके तथा टी-स्कूल शिक्षा तक पहुंच बढ़ाने के उपायों को प्रोत्साहित करके गांवों में नौजवानों की शिक्षा को पोषित करने के लिए, देश में सामुदायिक विद्यालयों को सहायता देने वाले संगठन, बैम्बिनो फाउंडेशन, ने स्थानीय शासन, समान विचारधारा वाले अन्य संगठनों एवं अन्य विद्यालयों के साथ मिलकर भी

काम किया है।

चैड

चैड के ग्वेरा क्षेत्र में शिक्षकों और समुदाय के बीच सहयोग के कारण आरंभिक बाल्यावस्था शिक्षा के महत्व के बारे में जागरूकता का उत्थान हुआ। 'एल ईकोल नॉवेले विज़न' नामक एक सामुदायिक विद्यालय में जिसे 'फाउंडेशन इलम' नाम के एक बहाई-प्रेरित संगठन से सहायता प्राप्त है, शिक्षकों और माता-पिताओं के बीच मित्रता के बंधन को मजबूत करने के काम ने विद्यालय को हर किसी के लिए ज्ञान का एक केंद्र बना दिया है। फ्रेंच भाषा पढ़ना और लिखना सीखने के लिए, समुदाय में माता-पिताओं और अन्य वयस्कों, खास तौर पर महिलाओं, के लिए एक साक्षरता पाठ्यक्रम आयोजित किया गया है। साथ ही, फाउंडेशन ने सामुदायिक विद्यालय के निकट एक भूखंड पर बगीचे की स्थापना के लिए एक कृषि कार्यक्रम में अनेक समुदायों के कई सदस्यों का प्रशिक्षण भी आरंभ किया है। इसके अलावा, जब कोरोना वायरस महामारी से उत्पन्न स्वास्थ्य संकट के कारण ज्यादातर स्कूल बंद हो गए तो सामुदायिक विद्यालयों के शिक्षकों ने बच्चों को बौद्धिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा प्रदान करने तथा जहां वे रहते हैं उन स्थानों के माता-पिताओं के साथ बन्धन को और अधिक मजबूत बनाने के नए तौर-तरीके ढूंढ निकाले। साथ ही, महामारी के बारे में लोगों को विश्वसनीय जानकारी उपलब्ध कराने और रोकथाम के उपायों के बारे में भी उन्होंने सहायता प्रदान की।

सामुदायिक विद्यालयों के बारे में कुछ और

मध्य अफ्रीकी गणराज्य: फाउंडेशन एहदियेह ("विकास संगठन" के अंतर्गत पृ. 32)

कांगो गणराज्य: नेटवर्क ऑफ कम्युनिटी स्कूल ("विद्यालय" के अंतर्गत पृ. 41)

कांगो जनताधिक गणराज्य: फाउंडेशन इरफान-कॉनैसैंस ("कृषि" के अंतर्गत पृ. 63)

कांगो जनताधिक गणराज्य: ग्रैंडे डी'एस्पॉयर ("स्वास्थ्य" के अंतर्गत पृ. 64)

सीखने को सुरक्षित करना सामुदायिक विद्यालय (पृ. 83)

गहन रूप में: शिक्षक-प्रशिक्षण

एक विषय जो शिक्षा के सभी क्षेत्रों में व्याप्त है वह है शिक्षक-प्रशिक्षण - चाहे वह समुदायों को स्वयं अपने स्कूलों की स्थापना में मदद देने के प्रसंग में हो, ज्यादा बड़े बहाई-प्रेरित स्कूलों में शिक्षकों के सतत जारी विकास में सहायता देने, या सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षकों को पूरक प्रशिक्षण देने के संदर्भ में।

युगांडा में 'किमान्या-न्गोयो फाउंडेशन फॉर साइंस एंड एडुकेशन' 2007 से ही देश के पूर्वी क्षेत्र के अनेक जिलों में सक्रिय है। उसका फोकस उन कार्यक्रमों पर है जो सामुदायिक जीवन के विभिन्न पहलुओं को उन्नत बनाने के लिए युवाओं और वयस्कों में क्षमता का निर्माण करते हैं। अपने सतत जारी प्रयासों के विस्तार के रूप में, इस संगठन ने 2014 में उन जिलों में जहां वह कार्य कर रहा था प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के विकास के बारे में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के इरादे से एक प्रारम्भिक अध्ययन आरंभ किया। तीन-वर्षीय आरंभिक चरण में विभिन्न सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों द्वारा 'सामाजिक क्रिया की तैयारी कार्यक्रम' (देखें पृ. 56-58) के चुनिन्दा पाठों का अध्ययन किया गया। इस अवधि के दौरान, कुछ प्रतिभागी शिक्षकों ने शिक्षाशास्त्र (पेडागॉजी) तथा उनका कार्य वैज्ञानिक प्रविधि के अनुरूप कैसे हो सकता है जैसे विषयों पर विचार करना आरंभ कर दिया। वे जिन विचारों का अध्ययन कर रहे थे उनके आलोक में उन्होंने राष्ट्रीय पाठ्यक्रम को भी परखा और शैक्षणिक उद्देश्यों को पूरा करने में छात्रों की सहायता के लिए उन्होंने ठोस शिक्षण योजनाएं भी तैयार कीं।

समय बीतने के साथ, शिक्षकों और छात्रों के बीच गतिशीलता में एक स्पष्ट बदलाव देखा गया क्योंकि कक्षा का वातावरण अधिक सहभागी हो गया और आपसी रिश्तों में मजबूती आई। शिक्षकों ने छात्रों को पाठ्यक्रम की वैचारिक समझ हासिल करने और रटने तथा याद करने के तौर-तरीकों से आगे बढ़ने में सहायता करने की अधिक क्षमता का प्रदर्शन किया। एक बाहरी शैक्षणिक अध्ययन में पाया गया कि भाग लेने वाले स्कूलों में छात्रों के राष्ट्रीय परीक्षा स्कोर में 25 प्रतिशत अंक की वृद्धि हुई। कार्यक्रम का दूसरा चरण, जो 2018 में शुरू हुआ, ने अपनी पहुँच बढ़ाई और इसके प्रभाव के बारे में प्रश्नों को अधिक व्यापक रूप से संबोधित किया। उदाहरण के लिए, फाउंडेशन ने इस बात पर ध्यान देना शुरू किया कि यदि किसी स्कूल के भीतर से अधिक संख्या में शिक्षक प्रशिक्षण में शामिल हों तो स्कूल में दी जाने वाली शिक्षा की सुसंगति और गुणवत्ता को कैसे बढ़ाया जा सकता है। इसमें यह जानने का भी प्रयास किया गया कि पहले से अधिक भागीदारी स्कूल और समुदाय दोनों में परिवर्तन लाने में कैसे योगदान दे सकती है।

वर्षों से इस प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण तत्व रहा है शिक्षा अधिकारियों का सक्रिय समर्थन। उनमें से कई ने प्रशिक्षण केंद्रों का दौरा किया है, सेमिनारों के लिए प्रशासकों को जुटाया है, फाउंडेशन के स्नातक समारोहों में भाग लिया है और फाउंडेशन को अन्य अवसरों पर आमंत्रित किया है। कुछ शिक्षक देश में शिक्षा के लिए एक साझा दृष्टिकोण के बारे में बातचीत में शामिल होकर सरकार के सदस्यों के साथ सम्बंध विकसित करने की दिशा में भी आगे बढ़े हैं। इन प्रयासों के सकारात्मक योगदान के आधार पर, फाउंडेशन प्रशिक्षण को अन्य क्षेत्रों में विस्तारित करने की संभावनाएं परख रहा है और उसने छात्रों के परिवारों के लिए लघु पाठ्यक्रम विकसित करना शुरू कर दिया है। वह देश में शिक्षा के बारे में परिसंवाद के साथ-साथ बड़े पैमाने पर देश में शैक्षणिक प्रणाली की उन्नति में योगदान देने के लिए विभिन्न साधन भी ढूँढ रहा है।



“...यह आशा की जाती है कि कृपा के बादलों से उमड़ती फुहारों के माध्यम से, तुम लोग शिक्षक बनोगे; कि तुम ऐसे ज्ञान के उद्यान में फूलों और सुवासित बूटियों की तरह खिलोगे जिसका सम्बंध मस्तिष्क से भी है और हृदय से भी...”

- अब्दुल-बहा

तृतीयक शिक्षा परियोजनाएं

30 से अधिक बहाई या बहाई-प्रेरित एजेंसियां हैं जो उत्तर-माध्यमिक या तृतीयक शिक्षा प्रदान करती हैं जिनमें से कुछ कॉलेज या विश्वविद्यालय के रूप में पंजीकृत हैं। इनमें से अधिकांश विश्वविद्यालय के छात्रों और स्नातकों के लिए विशिष्ट पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं या शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए, **मलावी** में लिलोंगे विश्वविद्यालय स्नातक, स्नातकोत्तर और पीएचडी कार्यक्रम प्रदान करता है, शिक्षकों के लिए आगे का प्रशिक्षण प्रदान करता है और प्रारंभिक बचपन की शिक्षा के बारे में अनुसंधान और परिसंवाद को बढ़ावा देने का समर्थन करता है। कुछ एजेंसियां अन्य विश्वविद्यालयों के सहयोग से कार्यक्रम पेश करती हैं। उदाहरण के लिए, **गायना** में स्कूल ऑफ द नेशंस **यूनाइटेड किंगडम** के विश्वविद्यालयों के सहयोग से मान्यता प्राप्त तृतीयक शिक्षा कार्यक्रम प्रदान करता है। **मकाऊ** में स्कूल ऑफ द नेशंस मकाऊ विश्वविद्यालय में शिक्षा के छात्रों के लिए एक इंटरनशिप कार्यक्रम प्रदान करता है। **भारत** में बहाई अकादमी वैल्यू एडुकेशन पर विभिन्न पाठ्यक्रम पेश करने के लिए महाराष्ट्र के कुछ छह विश्वविद्यालयों और कई अन्य संबद्ध कॉलेजों के साथ सहयोग करती है और इस विषय से सम्बंधित परिसंवादों में भाग लेती है। अन्य एजेंसियां इच्छुक व्यक्तियों और संस्थानों को पाठ्यक्रम की पेशकश कर रही हैं, जिनमें **कनाडा** में लैजोस लर्निंग और **अर्जेंटीना** में यूनिवर्सिडैड डे लास नैसिओन्स, इंटेग्रेसिओन, डेसरोलो वाई एम्बिएंट (UNIDA) शामिल हैं।

गहन रूप में: आध्यात्मिक सिद्धान्तों से प्रेरित एक विशेषीकृत स्नातकोत्तर कार्यक्रम

बोलीविया में नूर विश्वविद्यालय एक ऐसी एजेंसी है जिसने तीन दशकों में अपनी वित्तीय और प्रशासनिक क्षमता विकसित करने के लिए काम किया है और शिक्षा तथा सामाजिक क्रिया के क्षेत्रों में आध्यात्मिक सिद्धान्तों को लागू करने के तरीकों की व्यवस्थित रूप से खोज की है। विश्वविद्यालय सामुदायिक सेवा, सामाजिक न्याय और मानव विविधता के प्रति सम्मान पर जोर देते हुए बुनियादी नैतिक सिद्धान्तों के शिक्षण के साथ अकादमिक ज्ञान के एकीकरण को बढ़ावा देता है।

कोलंबिया में FUNDAEC के सहयोग से 2017 में विकसित किए गए इसके विशेष मास्टर कार्यक्रमों में से एक बहाई समुदाय के प्रयासों का मार्गदर्शन करने वाले विकासशील वैचारिक ढांचे के आलोक में सामाजिक और आर्थिक विकास पर केंद्रित है। शोध और विकास परियोजनाओं एवं संस्थानों के प्रबंधन के क्षेत्रों पर केंद्रित, इस कार्यक्रम का उद्देश्य लैटिन अमेरिका में विकास और प्रशासन में सेवा करने के लिए उच्च प्रशिक्षित लोगों की आवश्यकता को संबोधित करना और इन क्षेत्रों में अपने सैद्धांतिक और व्यावहारिक ज्ञान को गहन बनाने के लिए विभिन्न विषयों के पेशेवरों की आकांक्षाओं का प्रत्युत्तर देना है। हालांकि यह कार्यक्रम अभी भी अपने संचालन की आरंभिक अवस्था में है, किंतु उसने स्नातकोत्तर कार्यक्रम की प्रकृति की झलक दिखाया आरंभ कर दिया है जो लैटिन अमेरिका के संदर्भ में, जो कि विज्ञान और धर्म दोनों के ज्ञान का संयोजन करता है, वृहत विकास परियोजनाओं को संचालित करने के लिए व्यक्तियों की क्षमता का विकास करता है।

अपनी विशेष डिग्री के अलावा, विश्वविद्यालय प्रबंधन, प्रशासन, लेखा परीक्षा, कानून, शिक्षण, विपणन, परामर्श और कोचिंग, सामाजिक और आर्थिक विकास और सार्वजनिक स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों में डिप्लोमा, स्नातक और स्नातकोत्तर कार्यक्रम उपलब्ध कराता है। वर्ष 2022 तक 3,000 से भी अधिक छात्रों को विश्वविद्यालय के स्नातक और स्नातकोत्तर कार्यक्रमों में नामांकित किया गया था, जिसमें देश के सैकड़ों ग्रामीण समुदायों के शिक्षक और सरकारी प्रशासक भी शामिल थे।



युवाओं की क्षमता की निर्मुक्ति

अगर विकास को किसी जनसमूह द्वारा अपनी आध्यात्मिक एवं भौतिक प्रगति का दायित्व उठा सकने की क्षमता के रूप में देखा जाए तो युवा जनों का सशक्तीकरण विशेष महत्व ग्रहण करता है।

“एक समय के बाद वह युवावस्था में प्रवेश करता है ... निरीक्षण करने की उसकी क्षमताएं व्यापक और गहन होती हैं; उसकी मेधावी शक्तियां प्रशिक्षित और जागृत होती हैं; बचपन की सीमाएं और वातावरण उसकी शक्तियों और उपलब्धियों को अब सीमित नहीं रखा पातीं।”

- अब्दुल-बहा

बहाई लेखों में युवावस्था की अवधि को जीवन के वसंत काल - “जीवन के सर्वोत्तम समय” - के रूप में वर्णित किया गया है। इस अवधि में, युवाओं को उत्तरोत्तर ज्ञान, योग्यताएं, गुण और कौशल हासिल करने की आवश्यकता होगी जो उन्हें उस दुनिया के लिए तैयार करेंगे जो उन्हें विरासत में मिलेगी। उनकी सामाजिक स्थितियां चाहे जो भी हों, युवाओं में ऊर्जा, आदर्शवाद और दुनिया के कल्याण में योगदान देने की इच्छा होती है।

विगत वर्षों में, दुनिया भर के बहाई समुदायों और संस्थाओं ने उन शैक्षिक प्रक्रियाओं के बारे में जानने का प्रयास किया है जो युवाओं को दोहरे नैतिक उद्देश्य का अनुसरण करने में सक्षम बनाएंगी - अर्थात् स्वयं अपने विकास को प्रोत्साहित करने और समाज के उत्थान में योगदान देने में। परिणामस्वरूप अनेक नई पहलें उभर कर सामने आई हैं जिनमें नैतिक शिक्षा के प्रयास, ट्यूटोरियल सहायता प्रदान करने वाली परियोजनाएं, सामुदायिक सेवा के किरां न किरां क्षेत्र में विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम, उच्च शिक्षा के लिए सहायता प्रदान करने वाले संगठन और उच्च शैक्षिक प्रशिक्षण प्रदान करने वाले औपचारिक माध्यमिक और तृतीयक संस्थान शामिल हैं। युवा लोगों की विशाल क्षमता का पता लगाने की इच्छा से प्रेरित, इस रीखने की प्रक्रिया के केंद्र में उन विषय-सामग्रियों और तौर-तरीकों को परखना है जो युवाओं को अपने आसपास की दुनिया का विश्लेषण करने और उसकी स्थितियों को बेहतर बनाने के लिए कदम उठाते हुए, मानवता की बौद्धिक और आध्यात्मिक विरासत से प्रेरित होने में सक्षम बनाते हैं।

एक ओर जहां पिछले खंड में युवाओं की भागीदारी वाले औपचारिक शैक्षणिक संस्थाओं के कुछ उदाहरण शामिल किए गए हैं, वहीं दूसरी ओर आगे के पृष्ठ

उन परियोजनाओं और कार्यक्रमों की एक विस्तृत शृंखला को दर्शाते हैं जिन्होंने युवाओं के आध्यात्मिक और बौद्धिक विकास में योगदान देने का प्रयास किया है। पृष्ठ 50 और 51 पर दिए गए उदाहरण औपचारिक और अनौपचारिक पहलों का एक छोटा सा नमूना प्रस्तुत करते हैं, जो ऐसे विभिन्न समुदायों में उभरे हैं जहां युवाओं को उनके शैक्षिक और व्यावसायिक पथों में सहायता देने पर ध्यान केंद्रित किया गया है। ऐसे प्रयासों के अलावा, कुछ वे कार्यक्रम भी हैं जो दुनिया भर में कई बहाई-प्रेरित संगठनों के प्रयासों के माध्यम से पिछले कुछ वर्षों में उभर कर सामने आए हैं और जिनसे अधिक व्यापक रूप से प्रेरणा ग्रहण की जा रही है।

पृष्ठ 52 से 55 तक 12 से 15 आयुवर्ग के नवयुवाओं के नैतिक सशक्तीकरण के एक कार्यक्रम पर चर्चा की गई है। यह एक ऐसा आयुवर्ग है जो प्रत्येक समुदाय के लिए एक विशाल प्रतिभा-सम्पन्न समूह का प्रतिनिधित्व करता है। पृष्ठ 56 से 58 तक, बड़ी उम्र के युवाओं के लिए एक सुदृढ़ शैक्षणिक कार्यक्रम का वर्णन किया गया है जिसका उद्देश्य “सामुदायिक कल्याण प्रवर्तकों” को प्रोत्साहित करना है जिन्हें उनके समुदायों के समग्र कल्याण के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य और खाद्य उत्पादन जैसे क्षेत्रों में सामूहिक कार्य करने और योगदान देने की क्षमता विकसित करने में सहायता दी जाती है। वास्तव में, इस प्रकाशन में चित्रित सामाजिक क्रिया सम्बंधी प्रयासों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा शैक्षणिक प्रक्रियाओं में शामिल युवा लोगों के समूहों की पहल से उत्पन्न हुआ है जिनमें उनकी अंतर्निहित क्षमताओं की पहचान की गई है, जो उनकी महान आकांक्षाओं को पूरा करने में सहायक हैं और जो उनकी ऊर्जा को समाज को बेहतर दिशा में ले जाने में सहायता देते हैं।



कोलंबिया



बेल्जियम



ब्राज़ील



कंबोडिया



ज़ाम्बिया

कुछ चुनिन्दा पहलें

विभिन्न वास्तविकताओं में, समुदाय और संस्थाएं युवाओं को ऐसी शिक्षा प्राप्त करने में सहायता करने के तौर-तरीके ढूंढ रहे हैं जो उन्हें समाज के लिए सार्थक सेवा का जीवन जीने में सक्षम बना सकें। कई स्थानों पर, युवाओं के समूह इस सम्बंध में एक-दूसरे को सहायता देते हैं, कुछ मामलों में वे स्थायी परियोजनाओं के निर्माण की ओर अग्रसर होते हैं, जैसे कि भारत में सामुदायिक शिक्षा केंद्र जो कि पृष्ठ 24 से 25 पर चित्रित है। नीचे अन्य औपचारिक एवं अनौपचारिक प्रयासों का चयन किया गया है जो दुनिया भर के कुछ समुदायों में युवाओं के बौद्धिक विकास में योगदान दे रहे हैं और कुछ मामलों में उन्हें पेशेवर मार्ग की पहचान करने और आगे बढ़ने में मदद कर रहे हैं।

मलेशिया में किशोरों के लिए ट्यूटोरियल केंद्र

मलेशिया के एक मोहल्ले में, कुछ मित्रों ने यह निरीक्षण आरंभ किया कि 12 से 15 वर्ष की आयु के बच्चों के बीच साक्षरता और गणितीय एवं वैज्ञानिक ज्ञान के बीच एक खाई है। यह देखते हुए कि किररी भी युवा व्यक्ति के शैक्षणिक पथ में यह अवधि कितनी महत्वपूर्ण है, समुदाय में माता-पिता और उनके पड़ोसियों से परामर्श किया गया और स्कूल के बाद एक ट्यूशन सेंटर का विचार सामने आया। रीखने के लिए अनुकूल अवसर उपलब्ध कराने के लिए सामग्रियों का संकलन किया गया और सक्षम शिक्षकों की तलाश की गई। शिक्षकों और सामग्रियों के साथ-साथ किराये पर एक उपयुक्त भवन के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करने की व्यवस्था की गई जिसके तहत जो लोग ट्यूशन के लिए भुगतान कर सकते थे उन्हें भुगतान करना था लेकिन जो असमर्थ थे उन्हें वित्तीय सहायता दी जानी थी। इसमें शामिल मित्रगण अब रीख रहे हैं कि उस क्षेत्र के अधिक से अधिक युवाओं को ट्यूशन सेंटर में अपनी सेवाएं देने में कैसे सक्षम बनाया जाए। वे यह भी रीख रहे हैं कि विभिन्न पृष्ठभूमियों से आने वाले सभी प्रतिभागियों, विशेषकर ऐतिहासिक रूप से हाशिए पर रहने वाले



समुदायों से आने वाले प्रतिभागियों, के बीच सम्बंधों को कैसे मजबूत बनाया जाए।

दक्षिण अफ्रिका में युवाओं के लिए समुदाय-आधारित ट्यूटोरियल सहायता

माहिकेंग (दक्षिण अफ्रिका) के एक मोहल्ले में, विश्वव्यापी कोरोना वायरस महामारी के कारण रीखने की प्रक्रिया पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभावों के प्रत्युत्तर के रूप में, समुदाय के लोगों के एक समूह ने, एक स्थानीय अधिकारी और गांव के मुखिया के सहयोग से, एक दैनिक कार्यक्रम की व्यवस्था की जिसका उद्देश्य छात्रों को उनके शैक्षणिक परिणामों को बेहतर बनाने और आध्यात्मिक सिद्धान्तों एवं समाज की सेवा से सम्बंधित सामग्रियों का अध्ययन करने में सहायता करना था। इस तरह की शैक्षणिक सामग्री की पहचान करने पर

ध्यान केन्द्रित किया गया जो युवाओं की औपचारिक स्कूली शिक्षा के साथ-साथ समुदाय में शिक्षकों की सहायता पर निर्भरता को प्रभावी ढंग से पूरा करती हो। यद्यपि यह युवाओं को आध्यात्मिक और बौद्धिक रूप से आगे बढ़ने में सहायता देने का एक मामूली प्रयास था लेकिन इन कदमों ने बड़ी संख्या में लोगों को अपने जीवन में पहले से अधिक सुसंगति महसूस करने में सहायता दी क्योंकि उन्होंने यह जाना कि वे किस प्रकार अपने काम और सेवा के माध्यम से अपने समुदाय की प्रगति में योगदान देना जारी रख सकते हैं।

नीदरलैंड्स में शैक्षणिक पथ पर युवाओं को सहायता देने का कार्य

रीडेन (नीदरलैंड) में युवाओं और युवा पेशेवरों के एक समूह ने अपने पड़ोसी समूह में व्याप्त अन्याय और शिक्षा तक असमान पहुंच के प्रणालीगत स्वरूपों पर विचार किया जो कई युवाओं के लिए रोजगार और आय-सृजन की संभावनाओं को सीमित कर देते हैं। कई वर्षों में, क्रिया और समीक्षा की वह प्रक्रिया, जिसमें वे युवाओं और उनके परिवारों के साथ मिलकर शामिल हुए थे, औपचारिक हो गई और ब्रेकवेल इंस्टीट्यूट नामक एक संगठन स्थापित किया गया। इस विकास ने समूह को परिवारों को सहायता देने के लिए सामुदायिक केंद्रों, संगठनों



दक्षिण अफ्रीका



कनाडा

और एक मस्जिद सहित स्थानीय एजेंसियों के साथ अधिक प्रभावी ढंग से सहयोग करने की सुविधा दी। युवाओं को सहायता देने के बारे में जानने के निरंतर प्रयासों से शैक्षणिक सामग्रियों का क्रमिक विकास हुआ है जो युवाओं को अपने समाज की बेहतरी के लिए अपनी प्रतिभा को प्रणालीबद्ध करने के तरीकों की पहचान करने और अध्ययन तथा अपनी महान आकांक्षाओं के अनुरूप कार्य के लिए संभावित रास्ते तलाशने में सहायता देती हैं।

ज़ाम्बिया में तृतीयक शिक्षा के लिए स्कॉलरशिप

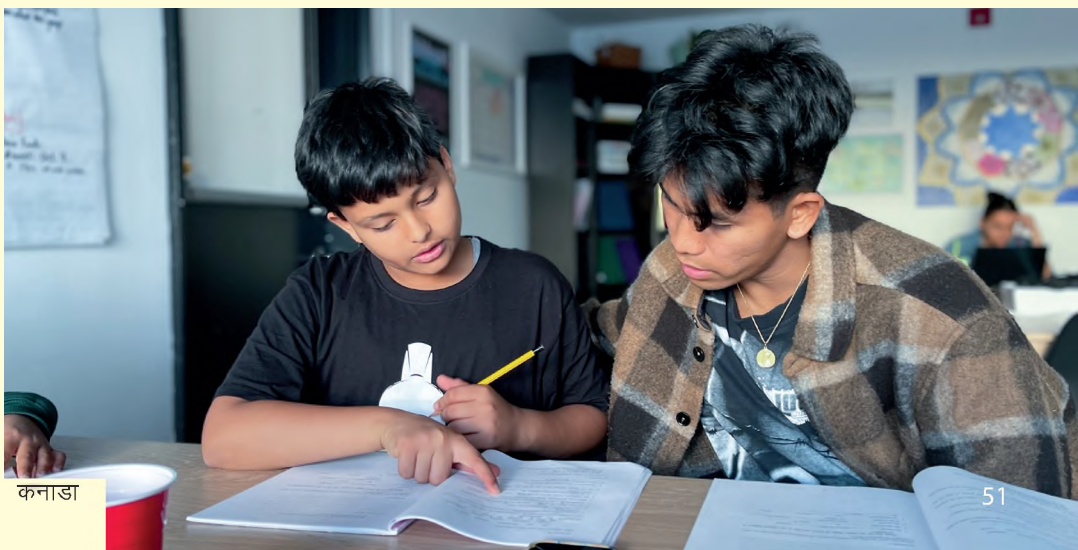
ज़ाम्बिया में, बहाई समुदाय पिछले कुछ दशकों से यह रीख रहा है कि उन युवाओं को कैसे सहयोग दिया जाए जो अपनी अकादमिक शिक्षा से सम्बंधित बाधाओं का सामना कर रहे हैं। कई युवाओं को, विशेष रूप से देश के ग्रामीण क्षेत्रों में, उच्च शिक्षा प्राप्त करने में सक्षम होने के लिए पर्याप्त धन जुटाने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है। एक व्यक्तिगत पहल के रूप में शुरुआत करते हुए, कई व्यक्तियों ने चंद युवाओं को आर्थिक रूप से सहयोग देना आरंभ किया ताकि वे बहाई समुदाय द्वारा प्रस्तुत विभिन्न कार्यक्रमों में अपनी भागीदारी के माध्यम से पहले से ही प्राप्त की जा रही आध्यात्मिक शिक्षा के

साथ-साथ अकादमिक शिक्षा से भी अधिक से अधिक लाभान्वित हो सकें। इन प्रयासों को सुव्यवस्थित करने के लिए शिक्षा के लिए एक कोष स्थापित किया गया। समय के साथ, 'लोमथुन्जी फाउंडेशन' की स्थापना कोष को और अधिक औपचारिक बनाने के साथ-साथ युवाओं को व्यक्तिगत विकास और समाज की उन्नति में उनके योगदान से सम्बंधित अच्छे विकल्प चुनने की क्षमता बढ़ाने में मदद करने के साधन के रूप में की गई थी। अंततः वित्तीय सहायता की आवश्यकता वाले युवाओं की मदद के लिए एक औपचारिक छात्रवृत्ति कार्यक्रम सामने आया। इस सहायता के अलावा, फाउंडेशन मार्गदर्शन और परामर्श सेवाएं भी प्रदान करता है और युवाओं को स्कूलों से जोड़ता है। यह सरकार और नागरिक समाज के कार्यक्रमों के माध्यम से दी जाने वाली मौजूदा सहायता की तलाश में युवाओं का भी साथ निभा रहा है क्योंकि वे अपनी आगे की शिक्षा का स्वामित्व ग्रहण करने के लिए अपने कौशल का विकास कर रहे हैं।

कनाडा और संयुक्त राज्य में सहयोगात्मक क्रिया शोध

संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा में, चार बहाई-प्रेरित संगठन — दि सेंटर फॉर स्टडीज़ इन कम्युनिटी प्रोग्रेस, कोहेरेंट डेवलपमेंट रिसर्च इंस्टीट्यूट (CDRI), कोलिडी लर्निंग फाउंडेशन और वडर्सवेल एसोसिएशन फॉर कम्युनिटी लर्निंग — ने प्रयास के साझा क्षेत्रों के इर्द-गिर्द सहयोगात्मक क्रिया शोध की एक प्रक्रिया शुरू की है। यह नेटवर्क अंतर्दृष्टियों के आदान-प्रदान, दृष्टिकोणों को साझा करने

और युवाओं के जीवन पर असर डालने वाली और उनके दृष्टिकोणों तथा उनके द्वारा चुने गए विकल्पों को प्रभावित करने वाली समाज की विभिन्न शक्तियों के बारे में समझ को बढ़ाने के लिए समय-समय पर समीक्षा के अवसरों का आयोजन करता है। युवाओं को इन वास्तविकताओं को समझने और प्रेरणा के गहरे स्रोतों से जुड़ने में सहायता करने के लिए, संगठनों का नेटवर्क यह रीख रहा है कि किस प्रकार युवा तेजी से कुछ ऐसी क्षमताएं, कौशल, दृष्टिकोण और विश्वास विकसित कर सकते हैं जो उनकी महान आकांक्षाओं को पूरा करने में मदद कर सकें। संगठन यह भी रीख रहे हैं कि युवाओं को सेवा के एक ऐसे जीवन के हिरसे के रूप में जिसमें सभी घटक-तत्व एक-दूसरे से जुड़े हों और एक-दूसरे को समृद्ध बनाते हों, शिक्षा, कार्य और पारिवारिक जीवन के इर्द-गिर्द उनके द्वारा चुने गए विकल्पों को देखने में कैसे सहायता की जाए। व्यावहारिक रूप में, युवाओं की सहायता के लिए बनाई गई कार्यनीतियों में दैनिक शैक्षणिक ट्यूटोरियल सहायता, छात्रवृत्ति आवेदन सहायता, अधिक गहन अध्ययन के लिए शिविरों के आयोजन, निगरानी, कैरियर मार्गदर्शन और इंटरनशिप, तथा साथ ही शिक्षा के उद्देश्य और नौकरी जैसे विषयों में अन्वेषण के लिए सामुदायिक सेवा परियोजनाएं और पारिवारिक कार्यशालाएं शामिल हैं।



कनाडा

किशोरों का नैतिक एवं आध्यात्मिक सशक्तीकरण

12 से 15 वर्ष की आयु के बीच की अवधि किसी भी व्यक्ति के जीवन में एक विशेष समय की परिचायक है, क्योंकि इन वर्षों के दौरान वह बचपन को पीछे छोड़ आता है और गहन परिवर्तन के दौर से गुजर रहा होता है। इस आयुवर्ग के व्यक्तियों को अक्सर “किशोर” कहा जाता है क्योंकि अभी उन्होंने युवावस्था को प्राप्त नहीं किया है। किशोरों को ऐसी गतिविधियों में शामिल करना जो उनकी क्षमताओं को बढ़ाने और उन्हें अपने समुदायों के मामलों में प्रभावी ढंग से भाग लेने के लिए तैयार करने का प्रयास करती हैं, कई वर्षों से बहाई समुदाय के लिए रीखने का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र रहा है। किशोर आध्यात्मिक सशक्तीकरण कार्यक्रम, जिसे दुनिया के विभिन्न हिस्सों में कई संस्थानों और एजेंसियों के प्रयासों के माध्यम से विकसित किया गया है (देखें पृष्ठ 82), इस रीखने की प्रक्रिया के सुफलों में से एक है। यह कार्यक्रम इस मान्यता पर आधारित है कि किशोरावस्था की छोटी किंतु महत्वपूर्ण अवधि एक परिवर्तन के समय की परिचायक है जिसके दौरान व्यक्ति और समाज के बारे में उन विचारों का निर्माण होता है जो उस व्यक्ति के शेष जीवन को आकार देते हैं। एक ओर जहां कुछ अवधारणाएं किशोरावस्था की एक निराशापूर्ण चित्र पेश करती हैं और जीवन के इस चरण को कठिनाइयों और संकट से भरा मानती हैं, वहीं दूसरी ओर बहाई शिक्षाओं की मान्यता यह है कि नौजवान लोग एक बेहतर समाज के निर्माण के अमूल्य नायक हैं। अतः इस कार्यक्रम का उद्देश्य किशोरों को उनकी क्षमता के प्रति जागरूक बनाना, उनकी प्रतिभा को विकसित

करना और उनकी क्षमताओं और ऊर्जा को मानवता की सेवा की ओर उन्मुख करना है।

यह कार्यक्रम एक “किशोर समूह” के दायरे में चलाया जाता है जो अपने सदस्यों के लिए आपसी सहयोग और गहन मित्रता के वातावरण के रूप में कार्य करता है। “अनुप्रेरक” के रूप में काम करने वाले बड़ी उम्र के युवाओं द्वारा निर्देशित, ये किशोर नैतिक और आध्यात्मिक अवधारणाओं पर आधारित सामग्री-समूह का अध्ययन करते हैं। युवाओं को वैज्ञानिक तरीके से वास्तविकता को परखने में मदद देने की दृष्टि से, इनमें से कुछ सामग्रियां गणित और विज्ञान के क्षेत्रों को भी शामिल करती हैं। बहाई धर्म से प्रेरित होने के बावजूद, यह कार्यक्रम विषयों की खोज धार्मिक निर्देश के तरीके से नहीं करता। अध्ययन के अलावा, ये समूह कलात्मक गतिविधियों में संलग्न होते हैं और अपने समुदायों की बेहतरी के लिए समूहों द्वारा स्वयं तैयार की गई सेवा परियोजनाओं को अंजाम देते हैं। कुल मिलाकर, यह कार्यक्रम किशोरों की विस्तारित होती हुई चेतना को यथार्थ की खोज में संलग्न करना चाहता है जो उन्हें समाज में काम कर रही रचनात्मक और विनाशकारी शक्तियों को पहचानने और हर स्थिति में अंतर्निहित आध्यात्मिक वास्तविकता को समझने में मदद देती है। इसका उद्देश्य युवाओं को अच्छी समझ के साथ पढ़ने और विचारों को स्पष्टता एवं वाकपटुता से व्यक्त करने की सामर्थ्य प्रदान करना है। शुद्ध कर्मों के साथ-साथ सकारात्मक शब्दों और विचारों की आवश्यकता पर जोर दिया गया है।

यह कार्यक्रम 180 से भी अधिक देशों में प्रशिक्षण संस्थानों और संगठनों के एक नेटवर्क द्वारा चलाया जा रहा है, जिसमें 35,000 से अधिक समूहों में 300,000 से अधिक किशोर शामिल हैं।

कार्यक्रम में शामिल युवाओं के शब्द इस आयु वर्ग की क्षमता की झलक पेश करते हैं – उनकी परोपकारिता, न्याय का तीव्र बोध, ब्रह्मांड के बारे में जानने की उत्सुकता और अपने समुदायों में सकारात्मक परिवर्तन के कारक बनने की इच्छा। अगले पृष्ठ पर दी गई टिप्पणियां सभी महाद्वीपों के किशोरों से आई हैं।



दुनिया भर के नौजवानों के परिप्रेक्ष्य

यूरोप

“सभी परिवर्तन ला सकते हैं और सभी को ऐसा करना ही चाहिए, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कोई कार्य कितना छोटा हो सकता है – पड़ोसियों के लिए केक बनाना, किसी मित्र के कुत्तों को साथ लाना, इस कठिन समय में नैतिक समर्थन प्रदान करना, यहां तक कि एक मित्र के रूप में केवल अपनी आवाज उठाना – ये सब ऐसे कार्य हैं जो न केवल समुदाय या शहर, बल्कि पूरी मानवता को विश्व की एकता के एक कदम और करीब ला सकते हैं। लोग एक-दूसरे के साथ रहने के लिए बने हैं ... यदि हम सबके लिए समृद्धि और कल्याण चाहते हैं तो हमें एकता की आवश्यकता है। किसी पुरानी चीज़ के टुकड़ों को जोड़कर हम बिल्कुल नई चीज़ बना सकते हैं। हम उस दुनिया को साथ ला सकते हैं जहां से हम इतनी दूर आए हैं, उसके सर्वोत्तम हिस्से लेकर उन्हें अपनी सामान्य इच्छा-शक्ति से फिर से जोड़ सकते हैं और एक नया समाज बना सकते हैं जिसमें किसी को भी बाहर रखे बिना सभी खुश हो सकते हैं।

लैटिन अमेरिका

“एक कारक जो हमारे जीवन की अनेक दुविधाओं में हमारी मदद करता है, वह है यह सुनना और समझना सीखना कि दूसरा व्यक्ति क्या कह रहा है। यह मेरे लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि रही है – किसी भी प्रकार के पूर्वाग्रह के बिना सुनने में सक्षम होना, ऐसी कोई बात नहीं जो मैं दूसरे व्यक्ति के खिलाफ सोचता हूं, बल्कि उसकी बात को समझने में सक्षम होना। मुझे लगता है कि यह एक ऐसी बात है जिसकी बहुत से लोगों को ज़रूरत है और यह एक ऐसी बात है जिसकी मुझे भी ज़रूरत थी।”

आस्ट्रेलेशिया

“हमें चीजों को सीखने के लिए आध्यात्मिक गुणों की भी आवश्यकता है। यदि किसी में विनम्रता नहीं है तो वे सोच सकते हैं कि वे पहले से ही सब कुछ जानते हैं और यह उन्हें सीखने से रोकेंगे। लेकिन अगर कोई विनम्र है तो वह हमेशा दूसरों से चीजें सीखने की कोशिश करता है।”



भारत

अफ्रीका

“हम एक समूह के रूप में एक साथ सीखना, अपनी प्रतिभाओं और अपने आध्यात्मिक और बौद्धिक गुणों को खोजना और विकसित करना पसंद करते हैं। एक समृद्ध शब्दावली विकसित करना महत्वपूर्ण है। हमें गांव और दुनिया भर में समुदाय के अन्य सदस्यों के साथ बेहतर बातचीत और सहयोग करना सीखना होगा। हमारे माता-पिता हमारे प्रयासों की सराहना करते हैं और हमें प्रोत्साहित करते हैं, खासकर जब वे हमारी परोपकारिता को देखना शुरू करते हैं। सेवा करने की हमारी इच्छा के कारण, हम घर में मददगार बनने का प्रयास करते हैं और अपने समुदाय की मदद के लिए परियोजनाएं भी चलाते हैं। हम अपने समूह में स्वयं से पूछते हैं कि क्या हमने उस सप्ताह कुछ सेवा की थी और यह किस प्रकार की सेवा थी। इससे हमें खुशी मिलती है।”

उत्तरी अमेरिका

“मुझे लगता है कि विज्ञान का उपयोग दुनिया को एक बेहतर स्थान बनाने में मदद करने के लिए किया जाता है, जैसे कि हमारी किताबों में से एक पात्र कहता है, ‘मैं विज्ञान का अध्ययन करूंगा, फिर मैं दुनिया की भलाई के लिए काम करूंगा।’ उदाहरण के लिए, वह कह रही है कि वह वापस आएगी और अपने गांव की प्रगति के लिए काम करेगी। वैज्ञानिक किसी प्रश्न का उत्तर पाने से पहले निरीक्षण करते हैं

और विज्ञान का उपयोग समुदायों, लोगों और दुनिया की मदद के लिए किया जाना चाहिए।

एशिया

“हमें एकता के साथ रहना चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि कोई तथाकथित ऊंची जाति का है और आप तथाकथित निचली जाति के हैं तो ऊंची जाति के लोग आपको अपने घर में पैर नहीं रखने देंगे। लेकिन मैं इस तरह नहीं सोचता। मुझे लगता है कि वे मेरे घर आए हैं, इसलिए उन्हें मेरे साथ बैठना चाहिए, मेरे साथ प्रार्थना करनी चाहिए।’ जैसाकि हम किशोर कार्यक्रम की किताबों में पढ़ते हैं, हमें एकता में रहना चाहिए ताकि सभी पूर्वाग्रह समाप्त हो जाएं।” “इस गांव से शुरुआत करके हम गांव, फिर राज्य, देश और दुनिया में शांति लाएंगे और इस तरह हम एकजुट होंगे और सद्भाव से रहेंगे।”



केनरी द्वीपसमूह

समुदाय के जीवन में किशोरों का योगदान

कंबोडिया में किशोरों के एक समूह ने इस बात पर परामर्श किया कि वे अपने परिवार के उन सदस्यों की मदद कैसे करें जो अपनी आजीविका के साधन खो देने के बाद से आर्थिक संघर्ष कर रहे थे। इस समस्या को संबोधित करने के लिए, उन्होंने सबसे पहले अपने समुदाय की जीवन-पद्धति का अवलोकन किया। परिणाम के रूप में जो एक समीक्षा उभरकर सामने आई वह यह थी कि उनके गांव में कुछ परिवारों के पास संतरे के पेड़ थे जो साल में केवल एक बार ही फल देते थे और जब कटाई का मौसम खत्म हो जाता था, तो अगली फसल तक आय बहुत कम हो जाती थी। इस चुनौती का जवाब देने के लिए, युवाओं ने विभिन्न फसलों की जांच की और निर्णय लिया कि संतरे के पेड़ों के पूरक के रूप में साथ ही साथ विभिन्न प्रकार की फसलें उगाई जा सकती थीं।

मित्रों के समूह ने अपने गांव में समुदाय के सदस्यों से परामर्श किया, जिसमें माता-पिता और अन्य किसान भी शामिल थे, जिन्होंने दीज बाने और पौधे रोपने में सहायता की पेशकश की। युवाओं को पता चला कि बैंगन, केला, नारियल और खीरे समेत अन्य चीजें साथ-साथ अच्छी तरह उग सकती हैं। समय के साथ, संतरे के पेड़ों के साथ उगाई गई फसलों की एक उत्पादक श्रेणी तैयार हो गई और उस समूह के माता-पिता सामुदायिक समारोहों में पौधरोपण के अनुभव साझा करने के लिए एकजुट हुए। इन शुरुआती प्रयासों को गांव के अन्य लोगों ने भी देखा, जिन्होंने सफल खेती की उन्हीं तकनीकों को लागू करना सीखा। जैसे ही समुदाय ने इस उपाय के फायदे देखे, उसके सदस्यों ने अपने इलाके में स्वयं अपने योगदान पर विचार किया और किशोरों को प्रोत्साहित करने के तरीकों पर विचार करते हुए युवाओं द्वारा निर्भाई जाने वाली महत्वपूर्ण भूमिका की भी सराहना की।

कनाडा में, किशोरों के आध्यात्मिक सशक्तीकरण कार्यक्रम की सामग्रियों के अध्ययन से प्रेरित होकर, जिसमें दुनिया के प्राकृतिक संसाधनों के मूल्य को समझने



ब्राजील

के लिए प्रोत्साहित किया गया था, युवाओं के एक समूह ने अपने पड़ोस में पानी के स्थायित्वपूर्ण उपयोग का समर्थन करने के लिए कदम उठाने का फैसला किया। सही-सही अवलोकन करने की आवश्यकता को पहचानते हुए, उन्होंने यह समझने के लिए विभिन्न समुदाय के सदस्यों और स्थानीय व्यवसायों के साथ बातचीत की कि उनके इलाके में पानी का उपयोग कैसे किया जा रहा है। इन विचार-विमर्शों के आधार पर, उन्होंने उन तरीकों पर शोध किया जिनसे पानी का संरक्षण किया जा सकता है और पानी के रिसाव की पहचान कैसे की जा सकती है। उन्होंने अपने निष्कर्षों के साथ पर्चे और पोस्टर बनाए और बातचीत जारी रखने के लिए समुदाय के सदस्यों के पास वापस गए। युवाओं के माता-पिता ने ध्यान दिया कि उनके समुदाय के सामने आने वाली चुनौती के प्रति वैज्ञानिक और आध्यात्मिक सिद्धांतों को लागू करने के प्रयास की इस प्रक्रिया ने उनके बच्चों में सीखने के प्रति प्रेम को बढ़ाने में मदद की।

कांगो जनतांत्रिक गणराज्य में, युवाओं के एक समूह ने एक प्राकृतिक जलस्रोत के महत्व के बारे में विचार किया जो स्थानीय समुदाय के लिए खाना पकाने, कपड़े और बर्तन धोने तथा स्नान करने के लिए पानी

के स्रोत के रूप में कार्य करता था। उन्हें एहसास हुआ कि बहुत ज्यादा उपयोग के बाद काफी मात्रा में वीचड़ जमा हो रहा था और जंगली घास और टूट जलस्रोत की ओर जाने वाले रास्ते में बाधाएं पैदा कर रहे थे। अपने समूह के एक सत्र के दौरान, 35 किशोरों ने समुदाय की सेवा के रूप में उस जलस्रोत की स्थिति में सुधार लाने का निर्णय लिया। माता-पिता और पड़ोस के निवासियों के साथ मिलकर व्यवस्था की गई जिन्होंने फावड़े, कूड़ेदान, रोक और अन्य वस्तुओं की आपूर्ति में योगदान दिया। निवासियों ने एक बड़े लक्ष्य की दिशा में समुदाय को एकजुट करने में युवाओं की पहल की सराहना की और पीने के पानी की सुलभता सुनिश्चित करने के इस प्रयास के दीर्घकालिक प्रभाव को समझा। निवासियों के बीच अधिक सुसंगत जल-आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए जलस्रोत के रखरखाव के लिए एक मासिक प्रणाली भी तैयार की गई।

औपचारिक परिवेशों में सेवा के लिए क्षमता-निर्माण: विद्यालयों में किशोर कार्यक्रम

दुनिया के अनेक स्थानों में, किशोरों के आध्यात्मिक सशक्तीकरण कार्यक्रम को ऐसे शैक्षणिक विद्यालयों द्वारा अपनाया गया है जिन्होंने अपने छात्रों के नैतिक सशक्तीकरण में योगदान देने और समाज की सेवा करने की उनकी क्षमता के विकास के लिए कार्यक्रम उपलब्ध कराया है।

किरिबाती में, जहां ऊटन मरावा एजुकेशनल इंस्टीट्यूट पब्लिक स्कूलों में यह कार्यक्रम प्रस्तुत कर रहा है, वहां नित बढ़ती हुई संख्या में शिक्षकों, प्रधानाध्यापकों और अभिभावकों ने बताया है कि कैसे कार्यक्रम के प्रतिभागियों ने स्वयं को स्पष्टता के साथ व्यवहार करने की अपनी क्षमता को सशक्त किया है, अपने शैक्षणिक कार्य-प्रदर्शन को बेहतर बनाया है और अपने चरित्र के विकास को उन्नत किया है। स्कूलों में बड़ी उम्र के युवा अपने किशोर युवा साथियों के समूहों के लिए अनुप्रेरक के रूप में अपनी सेवा पेश कर रहे हैं और इस प्रक्रिया में उन्होंने सेवा के लिए स्वयं अपनी क्षमता का विकास किया है। इस संगठन को विभिन्न अवसरों पर शिक्षा मंत्रालय द्वारा आयोजित

औपचारिक समारोहों में छात्रों के लिए एक ऐसा वातावरण तैयार करने के महत्व पर बोलने के लिए आमंत्रित किया गया है जो आपसी सहयोग को बढ़ावा देते हैं और शैक्षणिक प्रगति एवं नैतिक सशक्तीकरण को सुदृढ़ करते हैं।

न्यूजीलैंड में, 'प्रॉस्पेरेटी फाउंडेशन' स्कूली शिक्षा के सातवें वर्ष के छात्रों के साथ किशोर समूहों के निर्माण के लिए पब्लिक स्कूलों के साथ सहयोग करता है और अपने से कम उम्र के युवाओं की सेवा के लिए हाई स्कूलों में युवाओं का साथ निभाता है। इन प्रयासों के कारण इस विशिष्ट आयुवर्ग को सहारा देने में माता-पिता और शिक्षकों की भागीदारी के सम्बंध में और अधिक अंतर्दृष्टि प्राप्त हो रही है। विद्यालयीन परिवेश में भाग लेने वाले युवाओं के परिवार पूरे स्कूली वर्ष और छुट्टियों की अवधि में आसपास के इलाकों में होने वाली सामुदायिक-निर्माण गतिविधियों से भी जुड़े हुए हैं।

तजाकिस्तान में, एजुकेशन साइंस एडवांसमेंट फाउंडेशन नामक एक गैर सरकारी संगठन की सहायता से 2007 से ही स्कूलों में किशोरों का आध्यात्मिक सशक्तीकरण कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाता रहा है। बाद के वर्षों में, किशोर समूहों द्वारा

इन परिवेशों में कई सेवा परियोजनाएं भी चलाई गई हैं, जैसे कि वृक्षारोपण, सड़कों की सफाई और एक गांव में सड़क-संकेतों को स्थापित करने के लिए समुदाय और स्थानीय सरकार के साथ सहयोग करने के प्रयास। इन तथा ऐसी ही अन्य सेवा परियोजनाओं का व्यापक समुदाय पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। यह तथ्य विशेष रूप से महत्वपूर्ण है कि कुछ स्थानों पर क्षेत्र के विभिन्न जातीय समूहों के बीच लंबे समय से चले आ रहे पूर्वाग्रह धीरे-धीरे दूर हो रहे हैं, क्योंकि युवा लोग सामान्य कल्याण के लिए मिलकर काम करने के आधार पर मित्रता के अधिक स्थायी बंधन बनाना सीख रहे हैं। 2022 तक, देश भर के स्कूलों में इस कार्यक्रम में 600 से भी अधिक युवा भाग ले रहे थे।



न्यूजीलैंड

किशोर सेवा परियोजनाओं के बारे में कुछ और

वानुआतु: किशोर पर्यावरण जागरूकता सेवा परियोजनाएं ('पर्यावरण' के अंतर्गत पृ. 67 पर)

स्पेन: किशोरों द्वारा आध्यात्मिक विषयों पर गीत तैयार किया जाना ('कला और मीडिया' के अंतर्गत पृ. 75 पर)

निर्धारित अवधि की गतिविधियां: (विभिन्न उदाहरण पृ. 18-21 पर)।

सामाजिक क्रिया की तैयारी

पिछले कुछ वर्षों में, युवाओं की क्षमता को प्रकट करने के उद्देश्य से दुनिया के विभिन्न हिस्सों में कई संगठन उभरे हैं - ताकि युवाओं को अपने बौद्धिक एवं आध्यात्मिक विकास का दायित्व ग्रहण करने और सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में योगदान देने के लिए उद्देश्य की एक सुदृढ़ भावना विकसित करने में मदद मिल सके। इनमें से एक संगठन, **कोलंबिया** में स्थित **FUNDAEC** (पृष्ठ 30 देखें), देश में युवाओं की शैक्षणिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए क्रिया और शोध की सतत जारी प्रक्रिया में पिछले चार दशकों से भी अधिक समय से लगा हुआ है। सामाजिक क्रिया की तैयारी (PSA) कार्यक्रम इस प्रयास के परिणामों में से एक है। कार्यक्रम एक क्षेत्र के भीतर नित्य बढ़ती हुई संख्या में उच्च दक्षता-सम्पन्न व्यक्तियों को तैयार करने का प्रयास करता है, जो सामुदायिक जीवन की विशेष प्रक्रियाओं को आगे बढ़ाने के लिए आध्यात्मिक सिद्धांतों के साथ वैज्ञानिक ज्ञान को लागू करने में सक्षम हों। कार्यक्रम की चौहत्तर निर्देश इकाइयों को अध्ययन के तीन स्तरों में विभाजित किया गया है। पहला स्तर, जिसमें अध्ययन की पच्चीस इकाइयां शामिल हैं, "सामुदायिक कल्याण प्रवर्तक" नामक पदनाम की ओर ले जाता है। अगले दो स्तर समुदायों के सुदृढ़ विकास में सहायता के लिए युवाओं की क्षमता बढ़ाने का प्रयास करते हैं। कई देशों में जहां पूरे कार्यक्रम को सरकार द्वारा माध्यमिक शिक्षा के लिए पूरी तरह से मान्यता प्राप्त विकल्प के रूप में स्वीकृति दी गई है, इसे "सिरतेमा डि अप्रेंडिजाजे ट्यूटोरियल" (देखें पृष्ठ 58-59) के नाम से जाना जाता है।

PSA पाठ्यक्रम "गतिविधि के एक विशेष क्षेत्र के भीतर और एक स्पष्ट उद्देश्य के अनुसार प्रभावी ढंग से संचालित और कार्य करने की विकसित क्षमता" के विकास के इर्द-गिर्द आयोजित किया जाता है। कार्यक्रम बनाने वाली इकाइयां प्रतिभागियों को शिक्षा, कृषि, स्वास्थ्य और पर्यावरण संरक्षण सहित भाषा, गणित, विज्ञान और सामुदायिक जीवन की प्रक्रियाओं के क्षेत्रों में एक या अधिक सामर्थ्यों हासिल करने में मदद करती हैं। प्रत्येक इकाई का उद्देश्य प्रतिभागियों को सम्बंधित अवधारणाओं में शिक्षित करके, प्रासंगिक जानकारी प्रस्तुत करते हुए और सम्बंधित कौशल और क्षमताओं के समूह के साथ-साथ अभिवृत्ति और आध्यात्मिक गुणों को मजबूत करके अपने क्षेत्र की सेवा करने में सक्षम बनाना है। पाठ्यक्रम विकास के आधार के रूप में विषयगत ज्ञान के पारंपरिक रूप से स्वीकृत विभाजन का उपयोग करने के बजाय, FUNDAEC शैक्षणिक सामग्री तैयार करने के लिए

ज्ञान के संसार से प्रासंगिक तत्वों को एकीकृत करने का प्रयास करता है जो कि छात्रों को वर्तमान समाज के रूपांतरण के लिए काम करने के लिए तैयार करते हैं।

यह कार्यक्रम ट्यूटोरियल प्रकृति का है - अर्थात् इसे एक ट्यूटर की सहायता से स्थानीय परिवेश में छोटे-छोटे समूहों में संचालित किया जाता है। ट्यूटर पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से छात्रों का मार्गदर्शन करते हैं, प्रश्न उठाते हैं और उत्तर खोजने में मदद करते हैं, अस्पष्ट मामलों को स्पष्ट करते हैं, वास्तविक जीवन के अनुभव के बारे में समीक्षा को प्रोत्साहित करते हैं और प्रयोगों तथा सामाजिक क्रिया की निगरानी करते हैं। वे व्याख्यान या निर्देश नहीं देते और न ही वे केवल समूह चर्चा के सूत्रधार हैं। ट्यूटोरियल तरीका छात्रों को समाज में शामिल होने और सकारात्मक गतिविधियों तथा समुदाय की सेवा दोनों में भाग लेने को सहज बनाता है। इसके अलावा, यह समय के लोचपूर्ण प्रबंधन की अनुमति देता है।

पिछले डेढ़ दशक में, कई देशों में बहाई-प्रेरित संगठन सामुदायिक कल्याण प्रवर्तकों को तैयार करने के लिए PSA कार्यक्रम के पहले स्तर पर काम करना सीख रहे हैं। इसके कार्यान्वयन के बारे में सीखने के प्रवाह को सुविधाजनक बनाने के लिए संरचनाओं के उभार के साथ-साथ इस कार्यक्रम को अन्य देशों में कैसे प्रस्तुत किया गया है, इसके बारे में अतिरिक्त विवरण पृष्ठ 84 पर "सीखने का सुव्यवस्थीकरण" खंड में उल्लेख किया गया है। आगे के अनुच्छेदों में विभिन्न संदर्भों में सामुदायिक कल्याण प्रवर्तकों द्वारा विकसित की जा रही सामर्थ्यों और उनके समुदायों की उन्नति को सहारा देने के लिए किए जा रहे कार्यों के प्रकार के बारे में कुछ अंतर्दृष्टियां प्रदान की गई हैं।

सामुदायिक कल्याण प्रवर्तकों के योगदान

पूर्वी कैमरून के कुछ गांवों में, 'इमर्जेंस फाउंडेशन फॉर एजुकेशन एंड डेवलपमेंट' नामक संगठन PSA कार्यक्रम के अध्ययन से लाभान्वित होने के लिए बड़ी संख्या में व्यक्तियों की सहायता करना सीख रहा है। क्षेत्र के विभिन्न समुदायों और संस्थानों ने भी कार्यक्रम के स्नातकों के अनुभवों से प्रेरणा लेना शुरू कर दिया है, जिन्होंने स्वास्थ्य, पर्यावरण, संघर्ष के समाधान और आर्थिक समृद्धि से सम्बंधित अनेक सरोकारों को संबोधित करते हुए स्वयं अपने विकास की पहल आरंभ कर दी है।

इनमें से कई स्नातकों ने तब से अपने कार्यों को संरचित एवं व्यवस्थित बनाने के लिए 'एसोसिएशन डेस

प्रोमोटर्स 'डी बिऍन-एत्रे कम्प्युनैटेयर' (APROBEC) नामक एक सहकारी समिति का गठन किया है। यह सहकारी समिति देश के पूर्वी क्षेत्र के चार इलाकों में, जिन्हें इकाइयों या 'युनिट्स' के नाम से जाना जाता है, कई परियोजनाओं में सहयोग देती है और PSA की विषय-सामग्रियों के निरंतर अध्ययन के लिए सेमिनार आयोजित करने के साथ-साथ प्रत्येक इकाई में कार्यक्रम के रनातकों के लिए सम्मिलनों का आयोजन करने में भी शामिल रही है। ये सम्मिलन अंतर्दृष्टियों का आदान-प्रदान करने, रनातकों को समान कार्य में संलग्न अन्य लोगों के साथ जोड़ने और प्रत्येक इकाई के भीतर उभरती विभिन्न परियोजनाओं का प्रलेखन करने के लिए उपयोगी अवसर साबित हुए हैं। केटे शहर में सक्रिय समूहों में से एक सामुदायिक युवा केंद्र से अपनी गतिविधियां चला रहा है और क्षेत्र में युवा गतिविधियों के आयोजन में शामिल रहा है। एक ग्रामीण रेडियो स्टेशन के साथ सहभागिता के माध्यम से यह समूह शिक्षा और पर्यावरण की सुरक्षा सम्बंधी विषयों पर व्यापक परिसंवाद में भी भाग ले रहा है।

विविधता पर आधारित एकता का वातावरण तैयार करने और सामूहिक क्रिया को बढ़ावा देने जैसी विभिन्न सामर्थ्यों को मजबूत करने के माध्यम से, PSA कार्यक्रम पूरा करने वालों को अपने-अपने क्षेत्रों में सामाजिक रूपांतरण में योगदान देने में सहायता मिलती है। उदाहरण के लिए, **कांगो जनताधिक गणराज्य** के लुबुम्बाशी में, सामुदायिक कल्याण प्रवर्तक समय-समय पर ऐसे सम्मेलनों का आयोजन करते रहे हैं जहां परिवारों, स्थानीय अधिकारियों और बहाई संस्थाओं एवं एजेंसियों को उनके समुदायों के सरोकार के विशेष मुद्दों को संबोधित करने के लिए एकजुट किया जाता है। ऐसे ही एक सम्मिलन में पड़ोसी समूह में सुरक्षा का सवाल उठाया गया और यह निर्णय लिया गया कि पांच सड़कों पर स्ट्रीट लाइट के लिए बिजली उपलब्ध कराने हेतु कदम उठाए जाएं। अपने समुदायों की बेहतरी के लिए प्रतिभागियों की प्रतिबद्धता पर भरोसा करते हुए, कई परिवारों ने परियोजना को पूरा करने के लिए धन देते हुए अपना समर्थन जताया है। स्थानीय अधिकारियों के साथ निरंतर सहयोग के परिणामस्वरूप, सामुदायिक कल्याण प्रवर्तकों ने कुछ पड़ोसी समूहों में सलाहकार निकायों के रूप में कार्य करना शुरू कर दिया है और जब समुदाय की प्रगति में योगदान देने के उद्देश्य से परियोजनाओं पर विचार किया जाता है तो उनके दृष्टिकोण जानने की कोशिश की जाती है।

भोजन, स्वास्थ्य और शिक्षा से सम्बंधित क्षेत्रों में अन्य सामर्थ्यों ने भी समुदाय कल्याण प्रवर्तकों को उस समुदाय की स्थितियों के अनुसार सेवा प्रदान



कोस्टा रिका



वानुआतु

करने में सहायता की है जिसमें वे रहते हैं। इन वर्षों में, तालमांका (कोस्टा रिका) – देश का एक हिस्सा जहां कृषि लोगों के जीवन का केंद्र है – में कार्यक्रम में भाग लेने वालों ने छोटे खेतों पर खाद्य उत्पादन के बारे में सीखना शुरू किया। विशेष रूप से, प्रतिभागियों ने उच्च पैदावार प्राप्त करने, स्वदेशी फसलों की रक्षा करने और पोषण की विविधता बढ़ाने के बारे में जानकारी हासिल करने की कोशिश की। इन प्रयासों ने कई परिवारों को अपने स्वयं के प्लॉट स्थापित करने के लिए प्रेरित किया, जिससे वे फसलों के उत्पादक बन सके, अतिरिक्त आय अर्जित कर सकें और इस क्षेत्र में ज्ञान के सृजन में भाग ले सकें। क्षेत्र में फसलों की विविधता बढ़ने पर, सम्मिलन आयोजित किए गए जहां परिवारों ने अपनी उपज, बीज और अंतर्दृष्टियां साझा कीं और इस प्रकार एक सामान्य उद्देश्य की बढ़ती हुई चेतना में अपना योगदान दिया।

इसी प्रकार, युगांडा में कार्यक्रम के प्रतिभागियों ने सामान्य स्वास्थ्य सम्बंधी मुद्दों के विषय में स्थानीय लोगों के साथ बातचीत की एक शृंखला में भाग लिया है और पानी से उत्पन्न होने वाली बीमारियों को अपने गांव में प्रचलित बीमारी के रूप में पहचाना है। स्वच्छ जल आपूर्ति के लिए उपलब्ध ज्ञान, तकनीकी कौशल और भौतिक संसाधनों का आकलन करने के लिए समुदाय के सदस्यों और स्थानीय नेताओं को एक साथ लाने के लिए परामर्श के अवसरों का सृजन किया गया। इन सम्मिलनों में, परियोजना के संगठित सामाजिक एवं पर्यावरणीय प्रभाव पर चर्चा की गई और अनेक सदस्यों ने परियोजना के लिए त्याग की भावना के साथ अपने तकनीकी एवं आर्थिक संसाधनों का दान दिया।

दां महीने के काम के बाद, एक कुएं का निर्माण पूरा हो गया और कई लोगों ने महसूस किया कि अपने

“सभी आशीर्वादों का उद्गम दिव्य है, किंतु किसी की भी तुलना इस बौद्धिक अनुसंधान और शोध से नहीं की जा सकती जो कि अनन्त आनन्द के सुफल उत्पन्न करने वाला शाश्वत उपहार है ... अतः, तुम्हें चाहिए कि विज्ञान और कलाओं (के ज्ञान) को अर्जित करने के लिए तुम अत्यंत उत्कण्ठित प्रयास करो।”

– अब्दुल-बहा



हॉनडयुरस

.... पिछले पृष्ठ से जारी

विकास का रास्ता तय करने में समुदाय की क्षमता काफी बढ़ गई है।

सामुदायिक कल्याण प्रवर्तक स्वयं अपने समुदायों तक शिक्षा की पहुंच बढ़ाने के लिए भी प्रयत्नशील रहते हैं। कार्यक्रम में भागीदारी के माध्यम से प्रतिभागी कैसे अपनी शिक्षा के सक्रिय नायक बन गए हैं इसका एक उदाहरण **एववाडोर** में युवा माताओं के एक समूह में हुए परिवर्तन के माध्यम से देखा जा सकता है। हालांकि कई लोगों ने अभी तक अपनी औपचारिक शिक्षा पूरी नहीं की थी, किंतु ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों के बारे में उनकी बढ़ती हुई समझ प्रोत्साहन का एक स्रोत बन गई जिसने उन्हें अपनी पढ़ाई में आगे बढ़ने में सक्षम बनाया। कार्यक्रम के माध्यम से आगे बढ़ते हुए, वे एक-दूसरे को अपनी शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित करने लगे। जब तक समूह ने कार्यक्रम की उपलब्ध सामग्रियों का अध्ययन पूरा किया, तब तक कई लोगों ने औपचारिक शैक्षणिक डिग्री भी प्राप्त कर ली थी। युवा माताओं की गतिविधियों ने समुदाय में बच्चों की आध्यात्मिक शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए भी प्रेरणा दी और अन्य महिलाओं के समूहों को अपनी सामर्थ्य को मजबूत करने के लिए प्रेरित किया।

SAT प्रोग्राम, हॉनडयुरस

कई देशों में, FUNDAEC द्वारा विकसित पाठ्य-सामग्री को माध्यमिक शिक्षा के लिए पूर्णतः मान्यता प्राप्त विकल्प के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। इन संदर्भों में, कार्यक्रम को "सिस्टेमा डे अप्रेंडिजाजे ट्यूटोरियल" (SAT) नाम से जाना जाता है। इस अनुभव का एक उदाहरण हॉनडयुरस से प्राप्त होता है जहां 'एसोसिएशन बयान' पिछले तीन दशकों से भी अधिक समय से इस कार्यक्रम को क्रियान्वित करता आ रहा है। एक ओर जहां अपनी स्थापना के शुरुआती वर्षों में संगठन 'ग्रेसियस ए डिओस' विभाग में ग्रामीण स्वास्थ्य में सहभागी था, वहीं 1990 के दशक के मध्य में इसने अपना ध्यान शिक्षा के क्षेत्र की ओर उन्मुख किया। यह देखते हुए कि क्षेत्र में केवल प्राथमिक स्तर की स्कूली शिक्षा प्रस्तुत की जाती थी – एक ऐसा कारक जिसने क्षेत्र में मानव संसाधनों के विकास को सीमित कर दिया था – कोलंबिया में अपने कार्यक्रमों की प्रभावशीलता के बारे में जानने के बाद, इस संगठन ने FUNDAEC के साथ सहयोग करना आरंभ किया।

आरंभिक चरण में, यह कार्यक्रम 'ग्रेसियस ए डिओस' और कोलोन विभागों के 12 गांवों में पेश किया गया था। इस पहले चरण के परिणाम न केवल स्थानीय समुदायों के लिए सकारात्मक साबित हुए बल्कि शिक्षाधिकारियों ने इसे देश के ग्रामीण क्षेत्रों में माध्यमिक शिक्षा के लिए एक प्रभावी विकल्प के रूप में भी देखा। धीरे-धीरे, सरकार और विभिन्न नायकों के सहयोग से, कार्यक्रम को और अधिक संख्या में



नगरपालिका क्षेत्रों में प्रस्तुत किया गया। समय के साथ, 'एसोसिएशन बयान' के प्रयासों के माध्यम से प्रदान की गई शिक्षा प्रणाली को शिक्षा की गुणवत्ता और सामुदायिक जीवन में इसके योगदान दोनों के लिए राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त हुई। वर्तमान में, यह संगठन शिक्षा मंत्रालय से कानूनी मान्यता के साथ हॉनडयुरस के 18 विभागों में से 12 में SAT कार्यक्रम प्रस्तुत करता है और इसे एक बहुक्षेत्रीय मॉडल के तहत कार्यान्वित किया जाता है जिसमें समुदाय, सामाजिक संगठन और राज्य सभी शामिल होते हैं। सरकार इस कार्यक्रम का 90 प्रतिशत वित्तपोषण करती है जिसमें ट्यूटर्स का वेतन भी शामिल है।

हॉनडयुरस में SAT कार्यक्रम के अनुभव को संयुक्त राज्य अमेरिका में स्थित एक गैर-लाभकारी नीति संगठन, ब्रकिंग्स इंस्टीट्यूशन, जैसी विभिन्न संस्थाओं द्वारा रेखांकित किया गया है जो इस बात का उदाहरण है कि शिक्षा के लिए नए दृष्टिकोणों को कैसे संकल्पित, रूपरेखित और प्रसारित किया जा सकता है। संस्थान के अनुसार, SAT कार्यक्रम "एक शैक्षणिक क्रांति को उत्प्रेरित कर रहा है।" संस्थान में काम करने वाले एक लेखक ने गौर किया कि "यह उन कौशलों पर ध्यान केंद्रित करता है जो पारंपरिक शैक्षणिक कौशल से परे हैं, जैसे कि नैतिकता और चारित्रिक विकास और यह सीखने की क्रिया को कहीं अधिक व्यापक मानता है।" साथ ही, सामुदायिक सेवा को इसके मूल पाठ्यक्रम के एक हिस्से के रूप में शामिल किया गया है। निर्देश की प्रकृति पर टिप्पणी करते हुए, संस्थान ने इस बात पर प्रकाश

डाला है कि कार्यक्रम की प्रस्तुति में कठोर पदानुक्रम (hierarchy) का न होना एक महत्वपूर्ण अंतर को रेखांकित करता है क्योंकि यह ट्यूटर्स और छात्रों के बीच पारस्परिक सम्मान और विश्वास की संस्कृति का निर्माण करता है। 2018 में, UNICEF द्वारा आयोजित एक वैश्विक सार्वजनिक-निजी भागीदारी, 'जेनरेशन अनलिमिटेड', ने हॉनडयुरस में SAT कार्यक्रम को ग्रामीण क्षेत्रों में उच्च गुणवत्ता वाली माध्यमिक शिक्षा का विस्तार करने और ग्रामीण विकास में योगदान देने के लिए एक अभिनव समाधान के रूप में मान्यता प्रदान की। रेखांकित किए गए निष्कर्षों में एक यह भी था कि हॉनडयुरस के कई गांवों में SAT में भाग लेने वाले युवाओं का परीक्षण स्कोर पड़ोसी पारंपरिक स्कूलों की तुलना में 45 प्रतिशत अधिक था।

माध्यमिक शिक्षा की अदायगी से परे, 'एसोसिएशन बयान' यह सीखने पर भी ध्यान दे रहा है कि SAT कार्यक्रम सामुदायिक जीवन की विभिन्न प्रक्रियाओं के साथ किस प्रकार अभिक्रिया कर रहा है, जैसे कि युवा पीढ़ी की शिक्षा, खाद्य उत्पादन, या उन क्षेत्रों में सामुदायिक स्वास्थ्य जहां बड़ी संख्या में कार्यक्रम के स्नातक निवास करते हैं। यह कार्यक्रम प्रतिवर्ष 8,000 से भी अधिक लोगों के लिए प्रस्तुत किया जाता है और कुल मिलाकर इसकी पहुंच 100,000 से भी अधिक छात्रों तक है। लैटिन अमेरिका के अन्य देशों में, ब्राज़ील, एक्वाडोर, ग्वाटेमाला और निकारागुआ में संगठनों द्वारा औपचारिक शिक्षा प्रणाली के अंतर्गत भी कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया है जिसकी पहुंच कुल मिलाकर 300,000 से अधिक प्रतिभागियों तक है।

PSA प्रतिभागियों से उत्पन्न और गतिविधियां

युगांडा: किमान्या-गोयो फ़ाउंडेशन ("कृषि" के अंतर्गत पृ. 62 देखें)

ज़ाम्बिया: इनशिंडो फ़ाउंडेशन ("कृषि" के अंतर्गत पृ. 62)

वानुआतु: संरक्षित क्षेत्रों का निर्माण करते समूह ("पर्यावरण" के अंतर्गत पृ. 67)

पापुआ न्यू गायना: अनौपचारिक ग्रामीण बैंक की स्थापना करते समूह ("आर्थिक जीवन" के अंतर्गत पृ. 69)

सीखने का सुव्यवस्थीकरण: सामाजिक क्रिया की तैयारी (पृ. 84)

कृषि

बहाई शिक्षाओं में कृषि को सामुदायिक जीवन के केंद्र में रखा गया है और इस बात पर जोर दिया गया है कि इस क्षेत्र की उन्नति पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। अब्दुल-बहा कहते हैं कि “समुदाय का मूलभूत आधार कृषि है, भूमि की जोताई। सबको उत्पादक होना चाहिए।”

“जहां तक संभव हो सके, कृषि विज्ञान में निपुण होने का प्रयास करो, क्योंकि दिव्य शिक्षाओं के अनुसार, विज्ञानों का अर्जन और कलाओं में पारंगत होने को उपासना के कार्य माना जाता है।”

- अब्दुल-बहा

पिछले कई दशकों में, कृषि विकास में योगदान देने के लिए इन शिक्षाओं से प्रेरित कई पहलें और परियोजनाएं सामने आई हैं। ग्रामीण और शहरी दोनों परिवेशों में, व्यक्तियों के समूहों ने अपने समुदायों में खाद्य सुरक्षा और पोषण को बेहतर बनाने के साथ-साथ परिवारों के लिए आय के सृजन के लिए सामूहिक रूप से फसल उत्पादन या पशुपालन के कार्य आरंभ किए हैं। इनमें से कुछ ने किसानों में क्षमता निर्माण के उद्देश्य से कृषि या सुगठन में तकनीकी प्रशिक्षण देने वाले विद्यालय स्थापित किए हैं, जबकि अन्य ने ग्रामीण किसान समूहों की रचना की है।

वेनेजुएला में, चुनौतीपूर्ण आर्थिक परिस्थितियों और भोजन की कमी के प्रत्युत्तर के रूप में, परिवार-समूहों और उनके मित्रों ने अनेक क्षेत्रों में प्रारम्भिक खेती परियोजनाएं शुरू कीं। इस विधि में प्रारंभ में विभिन्न समुदायों के सदस्यों के साथ परामर्श शामिल था। सामुदायिक भूमि के अलावा घरों में ‘परिवार सब्जी उद्यान’ स्थापित करने के लिए कदम उठाए गए और धीरे-धीरे इस पहल को लगभग 10 स्थानों तक विस्तारित किया गया। जैसे-जैसे ये प्रयास आगे बढ़े, पड़ोसियों के लिए अच्छी कृषि पद्धतियों से सम्बंधित अनुभव साझा करके एक-दूसरे के साथ मिलकर सीखने के अवसर सामने आए। इस तरह की पारस्परिक क्रिया से परिवारों और मित्रों के बीच प्रेम और एकता की भावना बढ़ाने में भी मदद मिली। समय के साथ, ये आरंभिक परियोजनाएं ग्रामीण क्षेत्रों से आगे बढ़कर शहरी क्षेत्रों में लगभग 100 औगन उद्यानों को शामिल करने के लिए विस्तारित हुई। उसके बाद बातचीत और पारस्परिक क्रियाओं के साथ स्थानीय संस्थाओं की सहायता से सामूहिक क्रिया की पूरक कार्य की रेखाओं का भी उदय हुआ, जैसे परिवारों द्वारा अपने समुदाय के लिए पेय जल का स्रोत ढूँढना, महामारी के दौरान बच्चों की शिक्षा के लिए वैकल्पिक साधन तलाशना और आर्थिक विकास के लिए अन्य छोटी-छोटी परियोजनाओं को आरंभ करना।

मॉरीशस में, समुदाय में सभी लोगों के लिए पौष्टिक जैविक सब्जियों को सुलभ बनाने की आवश्यकता की

पहचान करने वाले एक युगल द्वारा एक गैर-लाभकारी कृषि शिक्षण केंद्र की स्थापना की गई। स्थानीय खाद्य प्रणालियों को मजबूत करके भोजन की समान आपूर्ति में आने वाली बाधाओं को दूर करने के उद्देश्य से एक कृषि केंद्र की स्थापना की गई। इस संगठन की एक उल्लेखनीय पहल रही है सामुदायिक विकास की ओर उन्मुख कृषि-सामाजिक उद्यमों के लिए उद्यम कुशलता का विकास और जैविक कृषि सम्बंधी प्रशिक्षण में 150 युवाओं को भागीदार बनाना। इन युवाओं की गतिविधियों में शामिल हैं सामुदायिक उद्यानों की स्थापना और घर पर स्वयं अपने लिए सब्जियों की आपूर्ति बढ़ाना ताकि उनके रहन-सहन की लागत कम हो सके। यह संगठन अपने काम में स्थानीय समुदायों को शामिल करने का प्रयास करता है और उसे सार्वजनिक अनुदानों के माध्यम से अपने कार्यक्रमों के लिए समर्थन प्राप्त हुआ है।

शहरी परिवेशों में, स्थानीय पहलों ने सामुदायिक विकास के साधन के रूप में और समाज में व्याप्त गंभीर चिंताओं के प्रत्युत्तर के रूप में, कृषि के बारे में सीखने का भी बढ़ावा दिया है। युनाइटेड किंगडम में, शुरुआत में युवा लोगों के एक समूह द्वारा अपने पड़ोस में एक साझा सब्जी भूखंड के साथ-साथ पर्याप्त हरा-भरा स्थान बनाने के लिए एक सामुदायिक उद्यान स्थापित किया गया। कई वर्षों में, इस पहल के कारण पड़ोसियों का नियमित एकत्रीकरण होने लगा, जो स्वाभाविक रूप से आपसी मेलजोल बढ़ाने के लिए उद्यान में इकट्ठे होते थे। कोरोना वायरस महामारी के कारण लगे प्रतिबंधों की अवधि के दौरान, उद्यान खाद्य-आपूर्ति की जरूरत वाले परिवारों को सहारा देने की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण सामुदायिक स्थल बन गया। उद्यान में लकड़ी से बनी एक झोपड़ी तैयार की गई थी जो एक सामुदायिक केंद्र के रूप में काम आती थी और जहां पड़ोसियों के लिए गैर-नाशवान खाद्य वस्तुओं की आपूर्ति और किताबें आसानी से उपलब्ध कराई जा सकती थीं।

कनाडा के टोरंटो में घर के पिछले हिस्से के छिन्नोद्धार और उन्हें पोषक तत्वों से भरपूर और जैविक किस्म की मौसमी सब्जियां उगाने के स्थानों



में परिवर्तित करने के लिए एक शहरी कृषि पहल की स्थापना की गई थी। यह प्रयास शहर के उस हिस्से के लिए उपयोगी है जिसे “खाद्य रेगिस्तान” माना जाता है, जहां निवासियों को किराने की दुकानों तक आसानी से पहुंच प्राप्त नहीं है। पड़ोस में रहने वाले युवा भी पास के खेत में काम में सहभागी हुए हैं और किशोरों को पोषण एवं खेती सम्बंधी विषय-सामग्रियों के अध्ययन में शामिल किया गया है। बैकयार्ड के अलावा, फसलें ग्रीनहाउस में भी उगाई जाती हैं और ये ग्रीनहाउस युवाओं के लिए कृषि विज्ञान में अपनी अभिरुचि बढ़ाने के लिए भी खुले हुए हैं।

सिंगापुर में, अपने समुदाय की सेवा करने के तरीके की तलाश में जुटे व्यक्तियों का एक समूह बागवानी के माध्यम से पड़ोसियों के साथ सम्बंधों को बढ़ावा देने की दृष्टि से पार्क के एक हिस्से का उपयोग करने के लिए राष्ट्रीय उद्यान बोर्ड के पास पहुंचा। बोर्ड द्वारा उन्हें एक प्रीस्कूल से जोड़ा गया जिसे जर्जर हो चुके बगीचे के प्रबंधन के लिए स्वयंसेवकों की आवश्यकता थी। समूह द्वारा एक प्रस्ताव तैयार किए जाने के बाद, स्कूल ने बगीचे के लिए तथा पानी की सुलभता के लिए कुछ धनराशि का योगदान दिया और बोर्ड ने बीज और मिट्टी का इंतजाम किया।

वह बात जो शुरू से ही जो महत्वपूर्ण थी वह थी समूह और स्कूल के बीच विचार की एकता जिसमें युवा पीढ़ी को स्थायित्व सम्बंधी सिद्धान्तों से जोड़ना, खाद्य उत्पादन के बारे में समझ विकसित करना और इस प्रयास के इर्द-गिर्द सामूहिक रूप से काम करने के लिए पड़ोस के सदस्यों को एकजुट करना शामिल था। इस पूरी प्रक्रिया के दौरान, समूह ने स्थायित्वपूर्ण वृक्षरोपण के सिद्धान्तों को काम में लाया, कार की रीसाइकल टायरों और बोतलों को मेड के रूप में, गिरे हुए पेड़ों के तूटों को बगीचे के स्टूल के रूप में, कागज के कचरे और गीली घास के लिए पुराने गट्टे के बक्से और खाद बनाने के लिए घरेलू रसोई के कचरे का उपयोग किया। कई लोगों ने यह बात साझा की है कि बगीचे ने समुदाय के भीतर विश्वास की एक वृहत्तर भावना को जन्म दिया है और यह मित्रता एवं विविधता का एक ऐसा स्थान बन गया है जहां विभिन्न पृष्ठभूमियों के युवा और पुरानी पीढ़ियों के लोग कहानियों और अंतर्दृष्टियों के आदान-प्रदान के लिए इकट्ठे होते हैं। नौ महीनों के भीतर, इस पहल में शामिल होने वाले व्यक्तियों की संख्या 15 से बढ़कर लगभग 60 तक पहुंच गई।

भारत में एक बहाई-प्रेरित कृषि उपक्रम के प्रतिभागी स्थानीय कृषि के लिए कौशल विकास करते हुए

अफ्रीका में कृषि के बारे में सीखने का काम: कुछ झलकियाँ

उप-सहारा अफ्रीका में, जहाँ लगभग दो-तिहाई आबादी पूर्ण या अंशकालिक आधार पर खेती के काम में जुटी हुई है, पिछले दशकों ने कृषि के क्षेत्र में आध्यात्मिक शिक्षाओं और वैज्ञानिक ज्ञान के अनुप्रयोग के बारे में सीखने के लिए विशेष रूप से समृद्ध अवसर प्रदान किए हैं। पृष्ठ 85 पर इस महाद्वीप में किसानों के साथ मिलकर कृषि अनुसंधान में जुटे बहाई विकास संगठनों की बढ़ती हुई संख्या के बीच सीखने की प्रक्रिया के सुव्यवस्थीकरण का वर्णन किया गया है। नीचे सतत रूप से जारी कुछ क्रियाओं की झलकियाँ प्रस्तुत की गई हैं।

युगांडा में, 'किमान्या-न्गेयो फाउंडेशन फॉर साइंस एंड एडुकेशन' ने सामाजिक क्रिया कार्यक्रम की तैयारी में भाग लेने वालों के लिए एक कृषि अनुसंधान फार्म की स्थापना की है (देखें पृ. 56-58) ताकि वे अपने अध्ययन से प्राप्त ज्ञान और क्षमताओं को क्रियान्वित कर सकें। युवाओं का एक समूह एक ऐसे पाठ का अध्ययन कर रहा है जो उन्हें अच्छी तरह से संसूचित तकनीकी विकल्प चुनने में सहायता करता है। उन्होंने रसायनिक उर्वरकों और बीटनाशकों के उच्च उपयोग के साथ मकई के एकधान्य को

बढ़ावा देने वाले एक बड़े संगठन से प्राप्त प्रस्ताव पर सावधानीपूर्वक विचार किया। प्रस्तावित प्रणाली के दीर्घकालिक आर्थिक और पर्यावरणीय प्रभावों को पहचानते हुए उन्होंने विनम्रता से मना कर दिया और कृषि के क्षेत्र में ज्यादा स्थायित्वपूर्ण तरीकों पर ध्यान केंद्रित करना जारी रखा जो समुदाय की जरूरतों को अधिक प्रभावी ढंग से पूरा कर सके।

ज़ाम्बिया में, इनशिंडो फाउंडेशन छोटे खेतों में स्थायित्वपूर्ण खाद्य उत्पादन के बारे में विषय-सामग्रियों के अध्ययन में 500 से भी अधिक किसानों को शामिल करता रहा है। फाउंडेशन ने ऑगन उद्यानों को बढ़ावा देने वाले एक अभियान का भी समर्थन किया है और सामुदायिक कृषि केंद्र शुरू किया है। उस केंद्र में, जिसे स्थानीय सरकार के सहयोग से निर्मित किया गया था, एक बीज बैंक और समुदाय के उपयोग के लिए सुलभ एक साधारण प्रयोगशाला भी शामिल है। यह केंद्र अध्ययन, अंतर्दृष्टियों के आदान-प्रदान और कृषि तकनीकों से जुड़े प्रयोगों के लिए अवसर उपलब्ध करता है।

कांगो जनताधिक गणराज्य के अनेक गांवों में, सामुदायिक कृषि समूहों का गठन किया गया है जो खाद्य उत्पादन के अपने उपक्रमों में सामूहिक रूप से कुछ सिद्धान्तों — जैसे आपसी सहयोग, परामर्श



और सेवा – को लागू करने का प्रयत्न करते हैं। कई सामुदायिक विद्यालयों में, वहां के शिक्षक कृषि शिक्षा को सुदृढ़ बनाने में सक्षम हुए हैं और उन्होंने विद्यालय के लिए खाद्य उत्पादन के सरल भूखंडों की स्थापना की है या उन्हें बेहतर बनाया है। कुछ मामलों में, समुदाय में बातचीत के दायरे का काफी आगे तक विस्तार हुआ है जिससे पारिवारिक कृषि पद्धतियों को बेहतर बनाया जा सका है। युवाओं के लिए सामाजिक क्रिया के लिए क्षमता निर्माण करने वाले शैक्षणिक कार्यक्रमों से भी इस क्षेत्र में रुचि बढ़ी है और छोटी कृषि सम्बंधी पहलें उभर कर सामने आई हैं।

इन प्रक्रियाओं के आधार पर, फाउंडेशन इरफ़ान–कॉनैसंस, जिसने 2007 से देश के किवु क्षेत्र में सामुदायिक स्कूलों की स्थापना को बढ़ावा दिया है, ने 2016 में अपने शिक्षक–प्रशिक्षण सेमिनारों में कृषि सम्बंधी विषय–सामग्री को शामिल करना आरंभ किया। इसके माध्यम से, इस संगठन ने खाद्य उत्पादन और पोषण के विषय में शिक्षकों और अभिभावकों की वैज्ञानिक सामर्थ्यों का विकास करने का उद्देश्य रखा है। लगातार जारी विजिट्स के साथ–साथ, इस तरह के प्रशिक्षण ने उन शिक्षकों की भी सहायता की है जो आम तौर पर अपनी घरेलू आय बढ़ाने के लिए किसानों के रूप में काम करते हैं। कुछ सामुदायिक स्कूलों में जहां पर्याप्त संसाधन हैं, छात्रों के लिए भोजन उगाने और उन्हें अपने परिवारों के साथ खाद्य उत्पादन के बारे में सीखने के लिए जगह प्रदान करने के लिए भूखंड स्थापित किए गए हैं। शिक्षकों के प्रशिक्षण के दायरे को व्यापक बनाने के इन प्रारंभिक प्रयासों से, बड़ी संख्या में आँगन उद्यान अस्तित्व में आए हैं और क्षेत्र के एक गांव में एक बीज बैंक स्थापित किया गया है जो लगभग 1,500 किसानों को अपनी सेवा प्रदान कर रहा है।

गोमा के अधिक शहरी परिप्रेक्ष्य में, शिक्षकों ने अपने छात्रों के परिवारों के सहयोग से आँगन उद्यान की स्थापना में सहयोग दिया है। इनमें से कई शिक्षकों ने देखा है कि बगीचे का प्रबंधन और पोषण करना सीखने की प्रक्रिया ने उनके छात्रों के धैर्य, दृढ़

संकल्प और उदारता को कैसे विकसित किया है। इसमें शामिल अन्य लोगों ने भी आँगन उद्यान वाले पड़ोस में परिवारों के बीच पारस्परिक क्रिया की प्रकृति में बदलाव देखा है। कुछ उदाहरणों में पहले से अधिक सहयोग और सामूहिक प्रयास की झलक दिखाई देती है। उदाहरण के लिए, एक पड़ोस में, छह परिवारों ने औषधीय पौधे और खाद्य फसलें उगाने के लिए मिलकर सहयोग किया। कुछ लोग अपनी उपज स्थानीय बाज़ार में बेचने में सक्षम हुए।

दक्षिण किवु के एनशिम्बी गांव में, एक स्थानीय शिक्षक ने फाउंडेशन इरफ़ान–कॉनैसंस के एक कृषिविज्ञानी के साथ मिलकर खाद्य उत्पादन प्रणालियों में विविधता लाने और एक बीज बैंक स्थापित करने की आवश्यकता के बारे में गांव के मुखिया से बातचीत आरंभ की। शुरुआती बातचीत के परिणामस्वरूप, मुखिया ने 500 से अधिक व्यक्तियों के साथ एक बैठक बुलाई, जिसके परिणामस्वरूप विभिन्न प्रजातियों के बीज और कलमों का उत्पादन करने के लिए भूमि के दो बड़े भूखंड आवंटित किए गए। समुदाय ने बीज बैंक के लिए सामग्री का योगदान देकर परियोजना का स्वामित्व लिया और इसके निर्माण में मदद के लिए एक स्थानीय विकास संगठन को नियुक्त किया। जल्द ही, बीज बैंक के काम को व्यवस्थित करने के लिए विभिन्न समितियों का गठन किया गया – बैठकें आयोजित करने और बैंक के रिकॉर्ड को संभालने के लिए एक प्रबंधन समिति, बीज वितरित करने के लिए एक निगरानी समिति और पहल की अखंडता की रक्षा और यह सुनिश्चित करने के लिए कि वह समुदाय के मूल्यों को प्रतिबिम्बित करे, एक सलाहकार समिति। तब से बीज बैंक के इर्द–गिर्द उपज की बिक्री, पशुपालन और वयस्क साक्षरता से सम्बंधित कई अन्य समूह उभरे हैं। एक वर्ष के दौरान, सदस्यता 25 से बढ़कर 200 हो गई। समुदाय के सदस्यों ने गौर किया है कि इस पहल ने गांव को कुपोषण की चुनौती का प्रत्युत्तर देने में मदद की है और महिलाओं को अधिक से अधिक सामुदायिक परामर्श में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया है।



स्वास्थ्य

बहाई शिक्षाओं में निहित विज्ञान और धर्म के बीच समन्वय के सिद्धान्त ने स्वास्थ्य के क्षेत्र में किए जा रहे अनगिनत प्रयासों की प्रगति को भी प्रेरित किया है। बहाई लेखों में “अच्छे स्वास्थ्य की कृपा” को “महानतम उपहार” की संज्ञा दी गई है और उसे मानवजाति की सेवा के दीर्घ, गरिमामय एवं संतोषप्रद जीवन का साधन माना गया है।



रोमानिया



संयुक्त राज्य

इस क्षेत्र में किए जा रहे बहाई प्रयास सुयोग्य चिकित्सा देखभाल तक पहुंच का विस्तार करने के लिए प्रयत्नशील हैं, जिसमें स्थानीय जनसमूह को उनके समुदायों के शारीरिक, आध्यात्मिक और मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने की क्षमता विकसित करने में सहायता देने पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। ये कार्य विविध रूपों में किए जाते हैं जिनमें अस्पताल, स्वास्थ्य केंद्र और चिकित्सा संघ शामिल हैं। अन्य प्रयासों में स्वास्थ्य को बढ़ावा देने वाली आदतों और प्रथाओं के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए चिकित्सा शिविरों और अभियानों का आयोजन, स्कूलों में स्वास्थ्य-शिक्षा कार्यक्रमों का कार्यान्वयन और सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करने के लिए कार्यक्रमों का विकास शामिल है जो आधारभूत स्तर की जरूरतों और सरकारी एजेंसियों द्वारा उपलब्ध कराई जाने वाली चिकित्सा सेवाओं के बीच अंतर को पाटने में मदद कर सकते हैं। ऐसी सभी पहलों में एक ऐसी संस्कृति के विकास की संकल्पना की जाती है जिसमें व्यक्ति, समुदाय और संस्थाएं स्थानीय स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं की बढ़ती शृंखला के लिए वैज्ञानिक ज्ञान और आध्यात्मिक सिद्धांतों को लागू करने के लिए मिलकर काम करते हैं। समुदायों के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में योगदान देने वाली पहलों के कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं। कोरोना वायरस महामारी के प्रसार के परिणामस्वरूप उभरे कई प्रयासों का वर्णन पृष्ठ 78-79 पर किया गया है।

विभिन्न परिवेशों में, बड़े पैमाने पर समुदाय के सामने खड़ी स्वास्थ्य सम्बंधी चिंताओं के बारे में बातचीत, चाहे वह पोषण से सम्बंधित हो, वैश्विक महामारी से जुड़ी अनिश्चितताओं, या उदाहरण के लिए, समाज में शराब के प्रभाव से सम्बंधित — उन सबने स्थानीय क्रिया के लिए मार्ग प्रशस्त किया है। हजारों इलाकों में युवा लोगों के समूहों ने स्वास्थ्य सम्बंधी जानकारी प्रसारित करने के लिए स्थान बनाए हैं, जैसे कि कनाडा और फ्रांस में पोषण या मानसिक स्वास्थ्य के बारे में जागरूकता अभियान या फिलीपींस में शराब के हानिकारक प्रभावों पर चर्चा करने के लिए सामुदायिक सभाएं। पूरे अफ्रीका में सामुदायिक स्कूलों में काम

करने वाले शिक्षकों ने अपनी कक्षाओं और परिवारों के साथ बातचीत में स्वास्थ्य शिक्षा को शामिल किया है। माता-पिता के समूहों ने सज्जियां और अन्य फसलें उगाने के लिए सामुदायिक फार्म स्थापित किए हैं जो छात्रों या पूरे पड़ोस की पोषण संबंधी जरूरतों को पूरा करने में मदद कर सकते हैं। जॉर्डन और अरब क्षेत्र के अन्य हिस्सों में, स्वास्थ्य पेशेवरों ने प्रासंगिक स्वास्थ्य मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाने और किसी भी बीमारी से रीढ़ित व्यक्तियों से परामर्श करने के लिए अपने स्वयं के समुदायों में कार्यशालाओं और सेमिनारों की व्यवस्था की है।

कुछ पहलें अधिक औपचारिक और सतत हो गई हैं। उदाहरण के लिए, रोमानिया में, इनोवार्सी सोशल रेजिना मारिया फाउंडेशन ने स्वास्थ्य टीम तक पहुंच के बिना लोगों को कम वीमट पर या निःशुल्क रूप से उच्च गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के लिए बुखारेस्ट शहर में दो स्वास्थ्य केंद्र स्थापित किए हैं। स्वास्थ्य केंद्र के भीतर सेवाएं प्रदान करने के अलावा, एक मेडिकल टीम मीजों के घर का तब दौरा भी करती है जब वे अकेले होते हैं या इतने बीमार होते हैं कि क्लीनिक नहीं जा सकते। टीम ने यूक्रेन के शरणार्थियों को व्यापक सेवाएं भी प्रदान की हैं। कांगो जनतांत्रिक गणराज्य में, ग्रेन री-एस्पेयर नामक संगठन का उदय जनसमूह की स्वास्थ्य आवश्यकताओं के प्रत्युत्तर के रूप में हुआ और उसने समुदायों के भीतर स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए तीन कार्य की रेखाएं तैयार की हैं। पहले में शिक्षकों को स्वास्थ्य के बारे में परिवारों के साथ बातचीत करने और यह रखने के लिए प्रशिक्षण देना शामिल है कि अपने स्कूलों में स्वच्छतापूर्ण वातावरण और बुनियादी चिकित्सा आपूर्ति तक पहुंच कैसे प्रदान की जाए। इसके अतिरिक्त, संगठन अपने काम में विज्ञान और आध्यात्मिक सिद्धांतों के बीच सामंजस्य लाने के लिए क्लीनिकों के साथ काम करता है — उदाहरण के लिए, वे जिन मीजों की सेवा करते हैं उनकी देखभाल की गुणवत्ता और उनके साथ व्यवहार को बेहतर बनाने के साधन के रूप में मानव की अच्छाई के बारे में स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं की समझ को मजबूत करना। अंत में, संगठन सामुदायिक स्वास्थ्य शिक्षकों



“उन्हें उन चीजों का भी अध्ययन करने दें जिनसे शरीर की तंदुरुस्ती और उसका शारीरिक स्वास्थ्य पोषित हो सके और यह कि अपने बच्चों को रोगों से कैसे बचाया जाए।”

— अब्दुल-बहा

को तैयार करने पर ध्यान देता है जो बाह्य रोगी सहायता प्रदान करके, बीमार व्यक्तियों की देखभाल करके और उनके घरों में विजिट करके समुदाय के भीतर क्लीनिकों के कार्य को पूर्णता प्रदान कर सकते हैं और उन्हें ज्यादा समृद्ध कर सकते हैं।

सामुदायिक स्वास्थ्य शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए भारत के उत्तर प्रदेश में 'फाउंडेशन फॉर द एडवांसमेंट ऑफ साइंस' के माध्यम से भी प्रयास किए जा रहे हैं। संगठन मुख्य रूप से कार्य के दो क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। सबसे पहले, यह प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल के बारे में ज्ञान बढ़ाने और समुदाय में स्वास्थ्य के बारे में बातचीत को सशक्त बनाने के बारे में सीख रहा है। इस संबंध में, पोषण, स्वच्छता और अनावश्यक दवाओं से परहेज जैसे विषयों को संबोधित करते हुए सामग्री विकसित की गई है और परिवारों के समूहों के बीच प्रार्थना सभाओं सहित विभिन्न सामुदायिक स्थानों में इसका अध्ययन किया जा रहा है। और दूसरा क्षेत्र, संगठन स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने के लिए समुदाय की क्षमता को मजबूत करने के लिए कदम उठा रहा है। इसमें अपने पड़ोस में बुनियादी स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं की पहचान करने और अपने इलाकों में मौजूदा स्वास्थ्य सेवाओं का समर्थन करने के तरीके खोजने के लिए समुदाय के सदस्यों के बीच क्षमता निर्माण करने के

लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम तैयार करना शामिल है। क्षेत्र में स्वास्थ्य आंकड़ों के विश्लेषण के साथ-साथ समुदाय की जरूरतों को बेहतर ढंग से समझने के इन प्रयासों के शुरुआती शोध, पांच साल से कम उम्र के बच्चों के लिए स्वास्थ्य देखभाल को बढ़ावा देने के लिए अधिक मानव संसाधनों की आवश्यकता पर प्रकाश डाल रहे हैं। इस संबंध में, समुदायों में इच्छुक युवाओं को इस आवश्यकता को पूरा करने वाले औपचारिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की पहचान करने और उनमें भाग लेने में सहायता करने के प्रयास चल रहे हैं।



ज़ाम्बिया



ऊपर: वानुआतु
दाहिने कोने में: आइसलैंड

पर्यावरण

उन विभिन्न स्थानों पर जहां बहाई लोग रहते हैं, व्यक्ति और समुदाय यह सीख रहे हैं कि इस विश्वास को व्यावहारिक अभिव्यक्ति कैसे प्रदान की जाए कि मानवजाति का प्राकृतिक विश्व से एक सहज सम्बंध है। बहाउल्लाह लिखते हैं कि “प्रकृति ईश्वर की इच्छा और इस परिवर्तनशील संसार में और उसके माध्यम से उस इच्छा की अभिव्यक्ति है।” इस प्रकाश में देखने पर, प्राकृतिक संसार एक धरोहर है जिसके लिए मानव-परिवार के सभी सदस्य उत्तरदायी हैं।

पर्यावरण के स्थायित्व में योगदान देने के प्रयास अनेक रूपों में हैं क्योंकि विविध प्रकार के समूह यह रीखा रहे हैं कि पर्यावरण के साथ अधिक सामंजस्यपूर्ण तरीकों से प्रगति को कैसे पुनःपरिभाषित किया जाए – चाहे यह कार्य समुदायों में जीवन की स्थायी पद्धति विकसित करने के लिए क्षमता-निर्माण के माध्यम से हो या ऐसे दृष्टिकोणों और ऐसी आदतों की तलाश और उन्हें विकसित करने के माध्यम से जो वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के लिए पृथ्वी के प्रबंधन में योगदान दे सकें।

युवा लोग कई समुदाय-आधारित पर्यावरणीय पहलों में अग्रणी मोर्चे पर हैं। हर साल, दुनिया भर के विभिन्न समुदायों में युवा लोग (पृ. 19 और 54 देखें) प्राकृतिक पर्यावरण के कुछ पक्षों पर पारस्परिक क्रिया करने वाली हज़ारों सरल परियोजनाएं तैयार कर रहे हैं और उन्हें क्रियान्वित कर रहे हैं। चाहे **एक्वाडोर** और **केन्या** में पारिस्थितिक जागरूकता अभियान के रूप में हो, **बहरीन** और **नेपाल** में वृक्षारोपण कार्य के रूप में, **कोस्टा रिका** और **ब्राजील** में नदी-सफाई परियोजनाओं के रूप में, या **संयुक्त राज्य अमेरिका** और **भारत** में पीसायविलिंग प्रणाली को बेहतर बनाने

के लिए स्थानीय समुदायों और एजेंसियों के साथ सहयोगात्मक प्रयासों के रूप में। इन सभी जगहों पर, इस तरह के सरल कार्यकलाप पृथ्वी के संसाधनों के संरक्षण की अनिवार्यता के प्रति युवा पीढ़ी की बढ़ती हुई जागरूकता के सूचक हैं।

कई स्थानों पर पर्यावरण के क्षेत्र में स्थायित्वपूर्ण परियोजनाएं भी स्थापित की गई हैं। **आइसलैंड** में व्यक्तियों का एक समूह ‘स्कोगर पुनर्वनीकरण परियोजना’ के माध्यम से वृक्षारोपण के नैतिक आयामों के बारे में बातचीत करना रीखा रहा है, जिसे पहली बार 1990 के दशक में देश में वनों की कटाई और मिट्टी के कटाव की महत्वपूर्ण चुनौती के प्रत्युत्तर में आरंभ किया गया था। इस परियोजना ने बहाई समुदाय को सरकार के पर्यावरण मंत्रालय – जो इस पहल के लिए पौधे, तकनीकी सलाह और वित्तीय योगदान प्रदान करता है – के तहत आइसलैंडिक वन सेवा; मृदा संरक्षण सेवा – जो उर्वरकों का योगदान करती है; और पड़ोसी कृषक समुदाय के सदस्य सहित व्यापक समाज में विभिन्न संस्थाओं के सम्पर्क में लाया है। विश्वविद्यालयों के साथ प्रारंभिक बातचीत में बहु-उपयोग वानिकी के लिए

एक अध्ययन स्थल के रूप में भूमि का उपयोग करने की संभावना भी तलाशी जा रही है। हाल ही में, संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) की 'फेथ फॉर अर्थ' (पृथ्वी के प्रति आस्था) पहल के हिस्से के रूप में वृक्षरोपण के आध्यात्मिक उद्देश्यों के इर्द-गिर्द अन्य धार्मिक संगठनों के साथ एक संवाद शुरू हुआ है, जिसका उद्देश्य "विकास के स्थायित्वपूर्ण लक्ष्य को हासिल करने के लिए स्थायी और पुनर्सर्जक विकास हेतु अंतर-धार्मिक सहयोग की नींव रखना" है।

स्थानीय पारिस्थितिकी की पुनर्बहाली के लिए समग्र-सामाजिक दृष्टिकोण

यद्यपि वे अभी प्रारंभिक अवस्था में ही हैं किंतु ऐसे विवरण सामने आ रहे हैं कि कैसे पूरा समुदाय पर्यावरण के पक्ष में साथ मिलकर सहयोग करना सीख रहा है। समय के साथ उनके प्रयासों में जटिलता भी आ रही है। **वानुआतु** के तन्ना द्वीप का एक उदाहरण ऐसी सामूहिक क्रिया के माध्यम से उत्पन्न होने वाली संभावनाओं की एक झलक प्रस्तुत करता है। सामाजिक क्रिया के क्षेत्र में अन्य कई प्रयासों की तरह, आरंभिक स्पर्दन उन युवाओं के समूहों के माध्यम से सामने आया जो स्थानीय बहाई-प्रेरित संगठन के सहयोग से स्थानीय पर्यावरण के बारे में परामर्श कर रहे थे। सामूहिक अध्ययन के माध्यम से वे जो ज्ञान प्राप्त कर रहे थे, उसके प्रकाश में, कुछ युवाओं ने अपने समुदायों के भीतर पर्यावरण जागरूकता पर कार्यशालाओं का आयोजन किया।

किशोरों द्वारा संचालित इन कार्यशालाओं और अन्य अनौपचारिक परियोजनाओं के परिणामस्वरूप, छह समुदायों ने, अपने गांव के नेताओं के सक्रिय समर्थन से, पानी के एक स्रोत के आसपास के क्षेत्र को संरक्षित क्षेत्र के रूप में निर्धारित करने का निर्णय लिया, जहां संरक्षण के उद्देश्यों के अलावा अन्य कोई मानवीय गतिविधि नहीं हो सकती है। दो समुदायों ने पौधों की उन प्रजातियों को दोबारा रोपने का फैसला किया जो विलुप्त होने की कगार पर हैं। अन्य चार समुदायों ने, समुद्री जीवन की रक्षा के महत्व और अत्यधिक मछली पकड़ने के खतरों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए किशोरों की सेवा परियोजनाओं से प्रेरित होकर, लैंगून की रक्षा के लिए कदम उठाने का फैसला किया। जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से किशोरों द्वारा किए गए सामान्य प्रयासों के माध्यम से, ग्रामप्रधान मौजूदा मुद्दों पर परामर्श करने के लिए सामुदायिक सम्मेलन आयोजित करने के लिए प्रेरित हुए। युवाओं के लिए पर्यावरण के प्रति गहरी समझ पैदा करने के लिए वानिवी (फॉरेस्ट्री) के लिए कदम उठाए गए। काफी समय के बाद, वह समुद्री जीवन फिर से बहाल होने लगा जिसे विलुप्त मान लिया गया था।

यद्यपि इस क्षेत्र को पुनर्सृजित करने के प्रयास अतीत में भी किए गए थे किंतु इन पहलों के बारे में जो बात थोड़ी अलग-सी लगती थी वह थी सामूहिक दृष्टि जिसे प्रोत्साहित किया गया था और प्रयासों की परिकल्पना तैयार करने और उनका स्वामित्व ग्रहण करने में समुदाय की भूमिका। कई सदस्यों ने गौर किया कि जब उन्होंने अपने समुदाय की प्रगति के लिए आध्यात्मिक पहलू पर विचार करना आरंभ किया — जिसमें पर्यावरण की देखभाल के महत्व पर विचार करना और अत्यधिक भौतिकवाद और प्रतिस्पर्धा के दुष्परिणामों को समझना शामिल है जिनके कारण अस्थायित्वपूर्ण कार्यप्रथाएं जाती हैं — तो उन्हें लगा कि लैंगून और उसके आसपास के क्षेत्र की रक्षा करना उनकी नैतिक जिम्मेदारी है। जैसे-जैसे किशोर और युवा अपने से अधिक उम्र के लोगों की अंतर्दृष्टियों और सहायता का लाभ उठाते गए, रीढ़ियां एक-दूसरे से जुड़ती चली गईं और जिन प्रजातियों को कभी केवल कुछ ही लोग जानते थे, उनका अनुभव और उनकी समझ अब नई रीढ़ियों को भी होने लगा था। इन प्रयासों के केंद्र में थी व्यक्तियों, स्थानीय संस्थाओं और ग्रामप्रधानों तथा स्वयं समुदायों के बीच गतिशील एवं सामंजस्यपूर्ण अन्तरक्रिया।

इस द्वीप पर संरक्षण सम्बंधी अन्य पहलों में शामिल हैं पूरे द्वीप में — भूमि और समुद्री क्षेत्र दोनों में — अतिरिक्त संरक्षित क्षेत्र स्थापित करने के लिए समितियों का गठन; कोरल रीफ्स की पुनर्बहाली; बगीचों के चारों ओर वृक्षरोपण के लिए नर्सरी की स्थापना, जिनमें से कुछ चक्रवातों से सुरक्षा का स्रोत रहे हैं; और एकल-उपयोग वाले प्लास्टिक के निपटान के लिए क्षेत्रों का निर्धारण। युवाओं और युवा वयस्कों के समूह भी लकड़ी काटने की गैर-स्थायित्वपूर्ण कार्यप्रथाओं का समाधान करने, स्वच्छ पानी को संरक्षित करने, द्वीप पर लुप्तप्राय प्रजातियों को पुनर्बहाल करने और मिट्टी के कटाव के बारे में अनुक्रिया करने के तौर-तरीकों को बेहतर ढंग से समझने की कोशिश कर रहे हैं।

“इस धरती का सम्पूर्ण विस्तार सबकी अपनी ही मातृभूमि है और सबका एक ही घर। तुम्हारे लिए यही सुयोग्य है कि तुम व्यर्थ का अभिमान त्याग दो जो अलगाव का जन्म देता है और अपने हृदय को उस पर केन्द्रित करो जिससे सद्भाव सुनिश्चित हो सके।”

— अब्दुल-बहा



आर्थिक जीवन

बहाई धर्म के मूलभूत सिद्धान्तों में से एक है न्यायपूर्ण आर्थिक प्रणालियों और हर किसी के, चाहे उनके जो भी संसाधन हों, स्वैच्छिक प्रयास के माध्यम से अत्यधिक अमीरी और अत्यधिक गरीबी की समाप्ति।

सभी जगह बहाई लोगों को यह सीखाने के लिए आमंत्रित किया जाता है कि एकता और न्याय को बढ़ावा देने वाले तौर-तरीकों और दृष्टिकोणों को लागू करने के साथ-साथ उदारता, विश्वासपात्रता और आर्थिक मामलों में अखंडता जैसे आध्यात्मिक सिद्धान्तों और अवधारणाओं के प्रयोग के माध्यम से सामूहिक समृद्धि को कैसे आगे बढ़ाया जाए। उन कार्यकलापों के कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं जिन्होंने आर्थिक गतिविधि के उच्च उद्देश्य के बारे में सीखने और परिवारों और समुदायों के आर्थिक जीवन को समृद्ध बनाने में, भले ही मामूली रूप से ही सही, किसी न किसी तरीके से योगदान दिया है।

व्यक्तिगत स्तर पर, बहाई लोग विभिन्न आर्थिक विकल्पों, जैसे कि वे जो उनके व्यावसायिक उद्यमों से सम्बंधित हैं, पर शिक्षाओं के निहितार्थ के बारे में जानने का प्रयास कर रहे हैं। कई लोगों ने अपने सहकर्मियों के बीच आपसी समर्थन और सहायता की संस्कृति को बढ़ावा देने और यह सुनिश्चित करने के लिए भी कदम उठाए हैं कि उनके व्यवसाय से होने वाला मुनाफा सभी कर्मचारियों के बीच उचित रूप से वितरित हो।

कोस्टा रिका में, इन सिद्धान्तों और मूल्यों के प्रयोग के माध्यम से, प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में एक निजी कम्पनी ने एक सामाजिक उपक्रम के रूप में अपनी नवकल्पना का सृजन किया। इस तरह की संकल्पना ने उसे नए क्षेत्रों के उपक्रम में अपनी आय का उपयोग करने में सक्षम बनाया, जैसे कि विज्ञान शिक्षा, मधुमक्खी पालन, ऊर्जा कौशल और शहरी कृषि के लिए प्रौद्योगिकी पर विभिन्न सरकारी एजेंसियों के साथ सहयोग। यूरोप में, 'एथिकल बिजनेस बिल्डिंग द फ्यूचर' (EBBF) नामक एक बहाई-प्रेरित एजेंसी ने विभिन्न व्यावसायिक उद्यमों में शामिल व्यक्तियों और समूहों के लिए अपने कार्यस्थलों पर न्याय और स्थायित्व सहित अन्य प्रासंगिक सिद्धान्तों के अनुप्रयोग के बारे में प्राप्त अंतर्दृष्टियों पर चर्चा करने के लिए अवसर का सृजन किया है।

आपसी सहयोग की पहलें

समुदाय-निर्माण के संदर्भ में, कई स्थानों पर व्यक्तियों के समूह विशिष्ट आवश्यकताओं को संबोधित करने के हेतु सीखने के लिए साथ आ रहे हैं। बहाई लेखों

के सम्बंधित उद्धरणों सहित प्रासंगिक सामग्रियों का एक साथ अध्ययन करने की आदत विकसित करने के बाद, उन्होंने अपने सामूहिक जीवन के एक पहलू को बेहतर बनाने के उद्देश्य से सरल सामाजिक या आर्थिक पहल शुरू की है। अध्ययन, परामर्श, क्रिया और समीक्षा के एक पैटर्न के बाद, इनमें से कुछ कार्यकलापों का दायरा समय के साथ बढ़ता गया और व्यापक समुदाय पर उसका महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। विशेष रूप से उन क्षेत्रों में जहां आपसी सहयोग, विश्वासपात्रता और सीखने की मुद्रा जैसे गुण और दृष्टिकोण समुदाय की संस्कृति का हिस्सा बनते हैं, बचत समूहों और सामुदायिक बैंकों से लेकर महिला या किसान संघों तक विभिन्न प्रकार की सहकारी समितियों सहित विविध कार्यकलाप स्वाभाविक रूप से उभरे हैं।

अफ्रीका के कई समुदायों में, ज्ञान और संसाधनों को साझा करने पर जोर देने वाली कृषि सहकारी समितियों ने प्राथमिक और माध्यमिक उत्पादन दोनों में महत्वपूर्ण सुधार लाने में मदद की है। सामूहिक क्रिया में शामिल होने की बढ़ती क्षमता के साथ बेहतर पैदावार ने आय-सृजन सम्बंधी अनेक परियोजनाओं के उद्भव को प्रेरित किया है जिन्होंने परिवारों के भौतिक कल्याण में योगदान दिया है। उदाहरण के लिए, **कांगो जनताधिक गणराज्य** में किसानों के एक समूह ने समुदाय में खाद्य सम्बंधी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अन्य खाद्य फसलों की खेती के अलावा, जूस का उत्पादन करने और बेचने के लिए नकदी फसल के रूप में चुकंदर की खेती शुरू की। उन्होंने अपने स्वयं के आटे की पिसाई के लिए एक बुनियादी पिसाई मशीन खरीदने के लिए अपने संसाधन जुटाए जिससे डोनट्स का उत्पादन हुआ जो तब से पड़ोसी शहरों और गांवों में लोकप्रिय हो गए हैं। समुदाय की जरूरतों के प्रति सजग रहने वाला समूह इन उत्पादों की बिजली से प्राप्त धन का उपयोग स्कूल की आपूर्ति खरीदने और अन्य सामुदायिक जरूरतों को पूरा करने में करने में सक्षम रहा है।

ग्यांमार के एक गांव में, चक्रवात के बाद स्थानीय किसानों और विक्रेताओं को सामग्री सहायता प्रदान करने के लिए एक स्थानीय बहाई संस्था के तत्वावधान में एक सूक्ष्मवित्तीय (माइक्रोफाइनेंस) परियोजना शुरू की गई थी। परियोजना की देखरेख करने और उन

“धन-सम्पत्ति को मानवता की सेवा करनी चाहिये। इसका उपयोग आध्यात्मिक सिद्धान्तों के अनुरूप होना चाहिये; प्रणालियों को उन आध्यात्मिक सिद्धान्तों की रोशनी में ही बनाना चाहिये।”

– विश्व न्याय मंदिर

मामलों में स्थानीय संस्थानों की सहायता लेने के लिए एक तीन-सदस्यीय टास्क फोर्स का गठन किया गया था जिन्हें वे हल करने में असमर्थ थे, जैसे कि ऐसे मामले जब व्यक्तियों को अपने ऋण चुकाने में बहुत अधिक समय लगा। माइक्रोफाइनांस परियोजना का विस्तार बाद में आसपास के गांवों के व्यक्तियों तक कर दिया गया।

संयुक्त राज्य अमेरिका के एक पड़ोस में, कई युवाओं के प्रयासों से वित्तीय साक्षरता के लिए एक अवसर उभर कर सामने आया है। यह अवसर, जिसे सम्बंधित विशेषज्ञता वाले समुदाय के कुछ व्यक्तियों द्वारा भी समर्थित किया जाता है, ने युवाओं को वित्तीय प्रश्नों से निपटने में व्यावहारिक सहायता प्रदान करने में मदद की है। विभिन्न पृष्ठभूमियों से आने वाले युवाओं के माता-पिता भी अपने बच्चों के साथ इसमें शामिल होते हैं जिससे पड़ोस में मजबूत रिश्तों में योगदान होता है और विभिन्न विषयों पर पीढ़ियों के बीच सार्थक बातचीत होती है।

बहाई-प्रेरित कार्यक्रम

हालांकि अनेक बहाई शैक्षणिक कार्यक्रम प्रत्यक्ष रूप से स्थानीय अर्थ-व्यवस्थाओं को मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित नहीं करते हैं किंतु उन्होंने व्यक्तियों की आजीविका कमाने की क्षमता निर्मित करने में भी मदद की है क्योंकि वे अपने समुदायों की उन्नति में योगदान देने का प्रयास करते हैं। **कोलंबिया** में, FUNDAEC के 'सपोर्टिंग कम्युनिटी लीडर्स' प्रोग्राम ने देश के ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले युवाओं को समाज में योगदान देने के उद्देश्य से किसी न किसी व्यापार या पेशे से सम्बंधित रास्ता चुनने और आगे बढ़ाने में सहायता की है। युवा लोग प्रशिक्षुता (अप्रेंटिसशिप) और तकनीकी या स्नातक डिग्री कार्यक्रमों में भाग लेते हैं और कुछ को उत्पादन परियोजना या छोटा व्यवसाय शुरू करके उद्यमिता का मार्ग अपनाने में सहायता की जाती है। **पापुआ न्यू गायना** में, शैक्षणिक गतिविधियों में लगे व्यक्तियों के समूह जो सामाजिक क्रिया के लिए अपनी क्षमता का निर्माण करते हैं, उन्होंने अपने समुदायों में बेहतर आर्थिक स्थिति के लिए कई पहल की हैं। ऐसे ही एक समूह ने समुदाय के सदस्यों के बीच उनकी बचत और खर्च करने की आदतों के बारे में एक सर्वेक्षण किया, जिसके परिणामस्वरूप अंततः एक अनौपचारिक ग्रामीण बैंक का निर्माण हुआ। बैंक ने बचत की सुविधा प्रदान करके शुरुआत की और 50 लोगों द्वारा अपनी धनराशि जमा करने के बाद, यह उधार देने के तरीकों पर विचार करने लगा और ऐसे ऋणों को उपयोगी कार्यों में परिवर्तित किया। इस समूह द्वारा की गई बातचीत

से प्रेरित होकर, कई समुदायों के परिवारों ने वनीला और कॉफी की स्थानीय किस्मों का उत्पादन बढ़ाकर बैंक में योगदान देने वाली राशि को बढ़ाना शुरू कर दिया, जिन्हें एक स्थानीय व्यवसाय की सहायता से देश भर में पैक किया और बेचा जाता है। ये अतिरिक्त फसलें उपजीविका (सर्वाइवेंस) फसलों के साथ उगाई जा रही हैं जो समुदाय के भीतर बेहतर पोषण में योगदान दे सकती हैं।

विशिष्ट कार्यक्रम जो समय के साथ अधिक व्यवस्थित हो गए हैं, उन्होंने कई इलाकों में आर्थिक गतिविधि के किसी न किसी पहलू में भी योगदान दिया है। उदाहरण के लिए, **नेपाल** में बहाई-प्रेरित संगठन शिक्षा, पाठ्यक्रम और प्रशिक्षण एसोसिएट्स (ECTA) ने दो दशक पहले एक सामुदायिक बैंकिंग कार्यक्रम विकसित किया था। कार्यक्रम के अंतर्गत 10 से 30 व्यक्तियों के समूहों को प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है जो छोटी-छोटी रकम बचाना सीखकर अपना स्वयं का सामुदायिक बैंक बना सकते हैं और बैंक सदस्यों को उचित व्याज दर पर मामूली ऋण उपलब्ध करा सकते हैं। बैंकों का प्रबंधन पूरी तरह से सदस्यों द्वारा स्वयं किया जाता है और अर्जित व्याज को प्रत्येक के पास बचत में मौजूद राशि के अनुसार आनुपातिक रूप से विभाजित किया जाता है। इसके अलावा, लाभ का एक हिस्सा बड़े पैमाने पर समुदाय के लाभ के लिए सामाजिक और आर्थिक विकास कोष में लगाया जाता है। बैंक अपने सदस्यों को अच्छे वित्तीय प्रबंधन के कौशल सीखाने का अवसर प्रदान करते हैं और उन्हें अपना व्यवसाय स्थापित करने या विस्तारित करने में सहायता करते हैं।

दुनिया के अन्य हिस्सों में, मुख्य रूप से अफ्रीका और लैटिन अमेरिका में कई संगठनों ने इस कार्यक्रम को विभिन्न परिवेशों में लागू किया है। इनमें से एक है **हॉन्ड्युरस** में 'एसोसिएशन बयान' जो 70 से अधिक बैंकों को सहयोग देता है। कालक्रम में लगातार बचत करके, युवा लोग अपनी शिक्षा जारी रखने या अपने समुदायों के भीतर आजीविका का साधन अपनाने में सक्षम हुए हैं, जिससे कुछ हद तक उन दबावों से राहत मिली है जो हॉन्ड्युरस के ग्रामीण क्षेत्रों में युवाओं को दूर जाने के लिए बाध्य करते हैं। इनमें से कुछ बैंकिंग समूह अपने विकास कोष के समर्थन के माध्यम से निश्चित अवधि की विभिन्न सामुदायिक विकास पहलों को अंजाम देने में भी सक्षम हैं। उदाहरणों में कुआँ खोदना, पुल बनाना, कक्षाओं का निर्माण और पेंटिंग करना, सड़क के किनारे पुलिया स्थापित करना और कृषि प्रयोगों में संलग्न होना शामिल है।



हॉन्ड्युरस

महिलाओं की उन्नति

स्त्री और पुरुष की समानता बहाई धर्म के मूल सिद्धान्तों में से एक है। अब्दुल-बहा ने लिखा है कि “मानवता के संसार के दो डैने हैं - एक स्त्री और दूसरा पुरुष। जब तक ये दोनों डैने समान रूप से विकसित नहीं होंगे तब तक चिड़िया उड़ान नहीं भर सकती।”

कार्य का क्षेत्र चाहे जो भी हो, बहाइयों द्वारा आरंभ की गई सामाजिक क्रिया के हर उदाहरण में यह सुनिश्चित करने के लक्ष्य के प्रति समर्पण निहित है कि महिलाओं और पुरुषों को मानव प्रयास के सभी क्षेत्रों - वैज्ञानिक, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक - में कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ने की अनुमति दी जानी चाहिए। इसके अलावा, कुछ कार्यक्रमों ने विशेष रूप से महिलाओं की उन्नति पर ध्यान केंद्रित किया है, उदाहरण के लिए, महिलाओं और लड़कियों को समाज में अपना उचित स्थान ग्रहण करने में सहायता करने के लिए शिक्षा प्रदान करना, महिलाओं के खिलाफ पूर्वाग्रहों को खत्म करने का प्रयास करना और उनके कल्याण के संरक्षण के लिए तंत्र स्थापित करना।

तृणमूल स्तरों पर, बहाई लोग शैक्षणिक कार्यक्रमों में छात्रों और प्रतिभागियों, शिक्षकों और ट्यूटरों तथा संयोजकों एवं निदेशकों के रूप में महिलाओं और लड़कियों की भागीदारी बढ़ाने का प्रयास करते हैं। इन प्रयासों ने महिलाओं की भूमिका को बढ़ाने और गांवों और पड़ोस में दृष्टिकोण बदलने में योगदान

दिया है। उदाहरण के लिए, **कंबोडिया** के एक इलाके में, लड़कों को स्कूल जाने के लिए प्राथमिकता दी जाती थी और परिणामस्वरूप उन्हें लड़कियों की तुलना में उच्च स्तर की शिक्षा प्राप्त होती थी। कुछ साल पहले, इस क्षेत्र के एक समुदाय में, माध्यमिक विद्यालय में जाने वाली पहली लड़की को एक वरिष्ठ युवा द्वारा किशोर समूह की सुविधा प्रदान करने में सहायता दी गई थी, जिसमें वह एक प्रतिभागी थी (पृ. 52-55)। जब बहाई समुदाय की गतिविधियों के माध्यम से समुदाय में महिलाओं और पुरुषों की अंतर्निहित समानता के बारे में जागरूकता बढ़ी और इस बारे में बड़े पैमाने पर समाज में चेतना का विकास हुआ तो धीरे-धीरे गांव की सभी लड़कियों के लिए औपचारिक शिक्षा प्राप्त करना आम बात हो गई, जिनमें से कई अब तृतीयक शिक्षा प्राप्त की और समुदाय में प्रमुख भूमिकाएं निभाई।

ऐसी लगातार जारी परियोजनाएं भी हैं जिनका उद्देश्य लड़कियों और महिलाओं को उच्च गुणवत्ता वाली अकादमिक शिक्षा प्रदान करना है। **गाम्बिया** में बनानी इंटरनेशनल स्कूल विविध जातीय, सांस्कृतिक और धार्मिक पृष्ठभूमि की युवा महिलाओं को वैश्विक दृष्टि प्राप्त करने के साथ-साथ जिस समुदाय में वे रहते हैं, उसकी जरूरतों को पूरा करने के लिए स्थानीय स्तर पर कार्य करने की क्षमता प्राप्त करने में सहायता करने के लिए माध्यमिक शिक्षा प्रदान करता है। **गाम्बिया** में रटारफिश इंटरनेशनल हाई स्कूल लड़कियों को छात्रवृत्ति और पूरक शिक्षा प्रदान करता है, जिसका उद्देश्य गाम्बिया की लड़कियों को एक उन्नत शिक्षा प्रदान करके सशक्त बनाना है जो मानवता की सेवा पर केंद्रित है। जो युवा महिलाएं इसके कार्यक्रम का हिस्सा हैं उन्हें व्यापार या शिल्प को आगे बढ़ाने और युवा छात्रों को ट्यूशन देने में सहायता दी जाती है। अपने प्रयासों से प्राप्त धन का एक हिस्सा समुदाय के व्यक्तियों को आम भलाई के लिए पहल करने में सहायता करने के लिए उपयोग किया जाता है।

भारत में ग्रामीण महिलाओं के लिए बर्ली विकास संस्थान की स्थापना 1985 में ग्रामीण और आदिवासी



संयुक्त अरब अमीरात



गाम्बिया

महिलाओं को अपने समुदायों में सामाजिक रूपांतरण के नायक बनने के लिए सशक्त बनाने के उद्देश्य से वी गई थी। संस्थान साक्षरता, नैतिक नेतृत्व, पोषण और स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण और आय सृजन सहित क्षेत्रों में पढ़ने और लिखने की सीमित क्षमता वाली 260 महिलाओं को हर साल छह महीने का मुफ्त आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान करता है। यह विस्तार केंद्रों में समान प्रशिक्षण की सुविधा के लिए माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने वाली महिलाओं के एक छोटे समूह की क्षमता भी बनाता है। यह स्वीकार करते हुए कि महिलाओं को सशक्त बनाने की प्रक्रिया के लिए पतियों, माता-पिता, बच्चों, जमीनी स्तर के नेताओं, स्थानीय संस्थानों और समुदाय के अन्य सदस्यों के व्यवहार में बदलाव समान रूप से आवश्यक है, संस्थान पूर्व प्रतिभागियों के गांवों का दौरा करता रहता है और सम्मेलन आयोजित करता है और साथ ही बैठकें एवं अल्पकालिक पाठ्यक्रम।

संस्थान के कार्यक्रम में अब तक मध्य प्रदेश और देश के अन्य हिस्सों के लगभग 800 गांवों की करीब 10,000 महिलाएं हिस्सा ले चुकी हैं।

नागरिक समाज के विभिन्न नायकों के साथ संवाद ने जागरूकता बढ़ाने और संस्कृति में बदलाव में योगदान देने के अवसर के रूप में भी काम किया है। उदाहरण के लिए, **ट्यूनीशिया** में बहाई समुदाय ने महिलाओं की उन्नति पर चर्चा करने और पारिवारिक संरचनाओं के साथ-साथ समाज के सभी क्षेत्रों में सहयोग की संस्कृति को कैसे बढ़ावा दिया जाए, इस पर चर्चा करने के लिए विभिन्न धार्मिक और नागरिक समाज के नेताओं के साथ एक सभा की व्यवस्था की।

ज़ाम्बिया में महिलाओं का सम्मेलन

ज़ाम्बिया के कटुयोला गांव में, एक स्थानीय बहाई संस्था ने महिलाओं की भूमिका से सम्बंधित प्रश्नों की तलाश के लिए एक दो-दिवसीय सम्मेलन का आयोजन किया जिसमें विभिन्न धार्मिक पृष्ठभूमि की लगभग 120 महिलाएं शामिल हुईं। प्रतिभागियों ने बताया कि सम्मेलन का आयोजन करने वाली संस्था के पुरुष सदस्यों के सहयोग से वे बहुत प्रभावित हुईं क्योंकि उन्होंने भोजन पकाने और परोसने जैसी व्यवस्था की ताकि संस्था की महिला सदस्य सम्मेलन में पूर्णता से भाग ले सकें। सहयोग के इस स्तर को कई प्रतिभागियों ने अपने समाज के ऐतिहासिक प्रसंग में अद्वितीय बताया।

जब वे महिलाओं के बारे में बहाई शिक्षाओं के अंशों के साथ-साथ गांव में बच्चों की शिक्षा में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका और शांतिपूर्ण समाज को बढ़ावा देने में व्यापक रूप से उनकी महत्वपूर्ण भूमिका पर विचार करने के लिए एकत्रित हुए तो प्रतिभागियों ने इस बात पर चर्चा की कि इस तरह के वार्तालाप कितने महत्वपूर्ण हैं। उन्हें समाज में महिलाओं की पूर्ण भागीदारी के मार्ग में आने वाली कतिपय बाधाओं पर विचार करने का अवसर प्राप्त हुआ। ऐसी ही एक बाधा जिस पर चर्चा की गई वह थी आर्थिक बाधाएं और लड़कियों की तुलना में लड़कों की शिक्षा को प्राथमिकता देने वाली घिरी-पिटी मान्यताओं के कारण महिलाओं के लिए शिक्षा के अवसरों की कमी। इस तरह के कुचक्र ने कई महिलाओं को अपने बच्चों के सीखने की प्रक्रिया में सहायता करने से भी रोका है। गांव में माध्यमिक विद्यालय तक सीमित पहुंच ने भी बड़ी संख्या में बच्चों को अपनी शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करने में बाधा उत्पन्न की है। उदाहरण के लिए, कई लोगों को दूसरी जगह स्कूल जाने के लिए अपना घर छोड़ना पड़ता है और कक्षाओं में भाग लेने के बजाय भोजन के लिए पैसे कमाने के लिए काम करना पड़ता है, या फिर कम उम्र में विवाह या गर्भधारण के कारण स्कूल छोड़ना पड़ता है। अन्य उदाहरणों में, लड़कियों को अक्सर स्कूल वापस लौटने में शर्म का अनुभव होता है या वे घरेलू जिम्मेदारियों में व्यस्त हो जाती हैं। कई माता-पिता इन चुनौतियों से निपटने में अपने बच्चों की सहायता करने में स्वयं को असमर्थ महसूस करते हैं क्योंकि वे उनसे बहुत दूर हैं।

विचार-विमर्श के दौरान एक मूल प्रश्न यह उभरा: जब महिलाओं को स्वयं अपने लिए पर्याप्त अवसर प्राप्त नहीं होता है तो वे अपने बच्चों की आध्यात्मिक और बौद्धिक शिक्षा में पूर्ण सहयोग कैसे दे सकती हैं? इसके अलावा, उन्हें इन आकांक्षाओं का प्रत्युत्तर देने के लिए कैसे सशक्त बनाया जा सकता है और गांव की संरचना और कामकाज में किस प्रकार के समायोजन की आवश्यकता है?

इस अवसर ने महिलाओं को इन सवालों पर विचार करने और संभावित प्रतियुक्तियों का पता लगाने में समर्थ बनाया। सम्मेलन में समुदाय के कई सदस्यों ने स्वेच्छा से सहयोग की पेशकश की। उदाहरण के लिए, पेशेवर शिक्षकों ने महिलाओं के लिए साक्षरता कक्षाएं शुरू करने का निर्णय लिया। कुछ लोगों ने महिलाओं को अपने घर के पिछवाड़े में बगीचे के साथ-साथ एक बचत बैंक शुरू करने में सहायता करने की पेशकश की ताकि वे अपने लिए आय का सृजन कर सकें। बहाई समुदाय द्वारा संचालित कुछ कार्यक्रमों में उन्हें अपने बच्चों की शिक्षा में परिवारों का सहयोग करने के अन्य अवसर उपलब्ध हुए जैसे सामुदायिक स्कूल, बच्चों के लिए नैतिक शिक्षा की कक्षाएं और युवा किशोरों के लिए किशोर समूह।

यह सम्मेलन एक अलग घटना न होकर, गांव के भीतर परामर्श और सहयोग की सतत जागी प्रक्रिया से जुड़ा हुआ था — जिसमें समुदाय की आवश्यकताओं से सम्बंधित व्यापक प्रश्नों की तलाश के लिए पारंपरिक नेताओं, गांव में आध्यात्मिक और भौतिक शिक्षा को बढ़ावा देने में शामिल बहाई एजेंसियों, माता-पिता, युवाओं और बच्चों को शामिल किया गया था। इन वार्तालापों के परिणामस्वरूप गांव में शिक्षा का एक केंद्र स्थापित करने का निर्णय लिया गया जहां सभी उम्र के लोगों के लिए कई कक्षाएं और गतिविधियां हो सकती हैं, जिनमें माध्यमिक विद्यालय के लोगों के लिए अकादमिक शिक्षण भी शामिल है। इससे कई युवाओं को माध्यमिक स्कूली शिक्षा के लिए अपना गांव छोड़ने की बाध्यता में कमी आएगी और उन्हें अपने समुदाय की जरूरतों को पूरा करने के लिए अपनी ऊर्जा लगाने में सहायता मिलेगी।

“...इस विलक्षण युग की महानता महिलाओं के संसार में प्रगति के परिणामस्वरूप प्रकट होगी।”

- अब्दुल-बहा

समुदाय की महिलाओं के कुछ चिंतनों को नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है:

“मुझे आशा है कि समाज में स्त्री की भूमिका के सम्बंध में अपने ज्ञान में स्त्री और पुरुष दोनों प्रगति करेंगे। शिक्षा के महत्व के बारे में बेहतर समझ के साथ, समुदाय यह सुनिश्चित करेगा कि उनके बच्चों को आध्यात्मिक और भौतिक दोनों ही प्रकार की शिक्षा प्राप्त हो सके ताकि हम सामाजिक रूपांतरण होते देख सकें।”



“हमारे बच्चों को शिक्षित करने का सबसे अच्छा तरीका है उनके लिए एक स्वयं एक आदर्श बनना महिलाएं पुरुषों के समान हो सकें इसके लिए उन्हें अपना उत्थान करना होगा। हमने यह सीखा है कि स्त्री और पुरुष चिड़िया के डैनों की तरह हैं; चिड़िया उड़ान भर सके इसके लिए दोनों ही डैनों को मजबूत होना होगा।”

“इस सम्मेलन ने मुझे एकता के सूत्र में बंधे हुए लोगों की शक्ति को देख पाने में सहायता दी है, भले ही वे विभिन्न धार्मिक पृष्ठभूमियों से क्यों न आते हों।”



“गांव में प्रत्येक बच्चे के विकास का फॉलो-अप करने के लिए हम सबको मिलजुलकर काम करने की जरूरत है ... उनके बच्चे आध्यात्मिक और भौतिक शिक्षा प्राप्त कर सकें, यह सुनिश्चित करने के लिए शिक्षकों और माता-पिताओं को आपस में सहयोग करना होगा। इससे उनके बच्चों के भावी विकास की सुदृढ़ आधारशिला रखने में सहायता मिलेगी और वे अपने समुदाय की प्रगति में योगदान दे सकेंगे।”

कला और मीडिया

बहाई शिक्षाओं में कला पर विशेष जोर दिया गया है और कहा गया है कि उनमें “अस्तित्व के संसार का उत्थान करने” और जनमानस में “उदात्त भावनाओं को जगाने” की क्षमता है। बहाई धर्म के इन तथा ऐसे ही अन्य लेखों से प्रेरित होकर, व्यक्ति और समुदाय उच्च लक्ष्यों की प्रेरणा भरने तथा जनसमूह की भौतिक एवं आध्यात्मिक प्रगति के लिए प्रासंगिक सिद्धान्तों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रकार के संचारों के उपयोग के बारे में सीख रहे हैं।



अजरबैजान



ब्राज़ील

वे लोगों के हृदयों में रचनात्मक सामाजिक परिवर्तन की दिशा में योगदान देने की प्रेरणा का संचार करते हुए, प्रभुधर्म के सिद्धान्तों से ग्रहण की गई अवधारणाओं और विषयों को व्यवस्थित करने का रचनात्मक प्रयास कर रहे हैं।

कला और संचार मीडिया के क्षेत्र में कुछ शुरुआती प्रयासों में लैटिन अमेरिका और एशिया में बहाई रेडियो स्टेशनों का निर्माण शामिल है, जैसे **पनामा** में रेडियो बहाई सोलोज, जिसे 1980 के दशक में जनजातीय लोगों की आवाज को मुखरित करने और एक शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक चैनल के रूप में सेवा देने के लिए स्थापित किया गया था। इनमें से कुछ रेडियो स्टेशन समाज की सेवा, एकजुटता, प्रेम और उदारता जैसी अवधारणाओं से प्रेरित मूल गीतों, कहानियों और साक्षात्कारों के रूप में सामग्री तैयार कर रहे हैं।

कला के माध्यम से कुछ सामाजिक मुद्दों के बारे में जागरूकता विकसित करने के प्रयास में पिछले कुछ वर्षों में कई नृत्य कार्यशालाओं और थिएटर कम्पनियों की भी स्थापना की गई। ऐसा ही एक उदाहरण **संयुक्त राज्य अमेरिका** में चिल्ड्रेन थिएटर कम्पनी है, जो पांच से उन्नीस वर्ष की आयु के बच्चों और युवाओं के साथ संगीत तैयार करने और उन्हें न्यूयॉर्क शहर के समुदायों में आम जनता के लिए प्रदर्शित करने के लिए काम करती है। मंच के सदस्य संगीत के सामाजिक और नैतिक अभिप्रायों पर विचार करने के लिए नियमित रूप से मिलते हैं और इस माध्यम से नस्लीय एकता, महिलाओं की उन्नति, अत्यधिक अमीरी और गरीबी को खत्म करने और पर्यावरण के संरक्षण जैसे विषयों को संबोधित किया जाता है। **रूस** में, एसोसिएशन फॉर क्रिएटिव मोरल एजुकेशन (ACME) तातारस्तान गणराज्य के स्कूलों में नैतिक शिक्षा पाठ शुरू करने के लिए कला और मीडिया का उपयोग करता है। सामाजिक क्षमता और नैतिक निर्णय लेने के लिए अपने गोल्डन वे (Altyn Iul) कार्यक्रम के माध्यम से, इस कार्यक्रम में संघर्ष की अलग-अलग प्रकृति की स्थितियों को प्रस्तुत करने वाले टीडियो स्किट का उपयोग किया जाता है

जो चर्चा का आधार बनता है। इस कार्यक्रम में 40 से अधिक स्कूलों और अन्य शैक्षणिक संगठनों के 8,000 से अधिक छात्रों ने भाग लिया है। संगठन युवाओं को उनके साथियों को सदाचार और नैतिक अवधारणाओं से अवगत कराने वाली लघु फिल्में बनाने में भी सहायता करता है और शिक्षकों और सामाजिक कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण प्रदान करता है। इसी तरह की पद्धति पर आधारित, प्रंकफर्ट (**जर्मनी**) में रिपुल्स थिएटर स्कूलों के साथ-साथ किशोर हिरासत केंद्रों और वरिष्ठ नागरिक गृहों जैसे अन्य परिवेशों में इंटरैक्टिव थिएटर परियोजनाओं को लागू करने के लिए सालाना 10 से 15 युवाओं को प्रशिक्षित करता है। लगभग 900 शो के माध्यम से हर साल 10,000 से अधिक लोगों तक पहुँचते हुए, भागीदारी-आधारित नाटक करुणा और मित्रता जैसे गुणों को बढ़ावा देते हैं और प्रतिभागियों को एकता के बिंदुओं की पहचान के माध्यम से परामर्श करने और संघर्षों से परे जाने की क्षमता विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

हाल के वर्षों में, कई गांवों और पड़ोसों में बहाई समूहों ने रखने की प्रक्रिया में भाग लिया है, जिसका उद्देश्य उनके परिवेशों के लिए सबसे उपयुक्त संचार माध्यमों के माध्यम से अपने समुदायों के भीतर सार्थक सामग्री बनाना और साझा करना है। उन्होंने फिल्म, संगीत और थिएटर जैसे साधनों का उपयोग इस तरह से किया है जो सामूहिक समझ को बढ़ाता है और उनके सामाजिक परिवेश के परिवर्तन में योगदान देता है, जिससे कई बार समुदाय-आधारित मीडिया परियोजनाओं का निर्माण होता है। संगीत के क्षेत्र में ऐसे प्रयासों के उदाहरण निम्नलिखित हैं।



पाकिस्तान



कनाडा



ऑस्ट्रेलिया

समुदाय-आधारित संगीत पहलें

सिडनी (ऑस्ट्रेलिया) के एक पड़ोसी समूह में, बहाई शैक्षणिक कार्यक्रमों में भाग लेने वाले युवा मित्रों का एक समूह अपने पड़ोस में व्यक्तियों और परिवारों में आशा का संचार करने और उनकी उन महान आकांक्षाओं को व्यक्त करने के लिए गीत रचना कर रहा है जिसे ऐतिहासिक रूप से मीडिया में नकारात्मक रूप से चित्रित किया गया है। इस प्रक्रिया के माध्यम से, युवा यह वर्णन कर रहे हैं कि उन्हें उस बदलाव के लिए कैसे सशक्त बनाया गया है जो वे अपने समुदाय में देखना चाहते हैं और वे समुदाय में व्यापक रूप से प्रचारित विषयों से बिल्कुल अलग विषयों पर प्रकाश डालते हैं। समूह के प्रयासों को देश के विभिन्न समाचार माध्यमों द्वारा सामाजिक एकता के स्रोत के रूप में मान्यता दी गई है और सदस्यों को स्कूली छात्रों, शिक्षकों और अन्य समुदाय के सदस्यों के बीच गीतों में उठाए गए विषयों के बारे में चर्चा की सुविधा के लिए स्थानीय संस्थानों द्वारा आमंत्रित किया गया है। ग्रैन कैनरिया (स्पेन) में किशोरों के आध्यात्मिक सशक्तीकरण कार्यक्रम में भाग लेने वाले युवा वर्षों से हृदयों पर

संगीत से पड़ने वाले प्रभाव के बारे में भी सीख रहे हैं क्योंकि वे समाज के लिए अपने दृष्टिकोण को साझा करने के लिए गीत लिखते हैं। किशोर शिविरों के साथ-साथ अन्य स्थानों पर आयोजित कार्यशालाओं के माध्यम से विकसित किए गए गाने, जो अब कई एल्बमों में रिकॉर्ड किए गए हैं, वार्षिक सामुदायिक संगीत कार्यक्रमों और अन्य कार्यक्रमों में प्रस्तुत किए जाते हैं। मित्रों के विस्तारित समूह के बीच एक अनौपचारिक पहल के रूप में शुरू हुई, "नुएस्ट्रा वोज़" (हमारी आवाज़) अब औपचारिक रूप से एक समुदाय-आधारित मीडिया परियोजना में बदल गई है।

कुछ समुदायों में जहां कला वहां की संस्कृति की मूल विशेषता है और जहां संगीत स्वाभाविक रूप से जीवन के विभिन्न पहलुओं में शामिल है, जैसे कि **कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य** में, वहां गायक दल गहन और उन्नयनकारी आध्यात्मिक विषयों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए गाने बना रहे हैं और उन्हें साझा कर रहे हैं। ये गीत उन लोगों के साथ अंतर्दृष्टि साझा करने का एक महत्वपूर्ण साधन रहे हैं जिन्हें अकादमिक शिक्षा तक पहुंच प्राप्त

नहीं है और वे पढ़ने में सक्षम नहीं हैं। मबुजी माई में बहाई समुदाय के सदस्य सामुदायिक जीवन के स्वाभाविक हिस्से के रूप में उन्नत अवधारणाओं से प्रेरित गीत बनाने और साझा करने के बारे में सीख रहे हैं। इनमें से कुछ गीत वृहत्तर समुदाय में व्यापक रूप से प्रचलित हो गए हैं क्योंकि उन्हें विभिन्न समारोहों में साझा किया जाता है और उन्होंने सार्थक संवाद को प्रेरित किया है। एक उदाहरण के रूप में, समुदाय में युवा किशोरों के एक समूह ने बताया है कि कैसे ये गाने उन्हें न्याय के सिद्धान्त के बारे में और अधिक विचार करने में मदद करते हैं और कैसे उन्होंने उन मामलों में रचनात्मक प्रश्न पूछने के लिए अधिक सशक्त महसूस किया है जहां वे समाज में अन्याय की अभिव्यक्ति देखते हैं।

मानवतावादी राहत

जैसे-जैसे विभिन्न प्रकार के मानवतावादी संकट व्याप्त हो रहे हैं, वैसे-वैसे बहाई समुदाय “जरूरतमंदों की पुकार के उत्तरदाता”, “पीड़ितों के लिए मलहम”, “अपरिचितों के लिए आश्रय” और “अत्याचार-पीड़ितों के पक्ष-समर्थक एवं रखवाले” बनने के लिए बहाउल्लाह द्वारा किए गए आह्वान को व्यावहारिक रूप देने के लिए स्पर्दित हुए हैं।

“लोगों के बीच बंधुता और अखंडता के बंधन जितने अधिक मजबूत होंगे, रचनात्मकता की शक्ति उतनी ही बलवती और मानव के कार्यकलापों के विविध धरातलों पर उपलब्धि उतनी ही अधिक होगी।”

- अब्दुल-बहा

दुनिया के विभिन्न हिस्सों में, व्यक्ति, समुदाय और संस्थान इस बारे में सीख रहे हैं कि बहाई समुदाय द्वारा पोषित समुदाय-निर्माण के प्रयास अधिक लोचशीलता की दिशा में कैसे योगदान दे सकते हैं और कैसे उन कतिपय क्षमताओं को विकसित कर सकते हैं जो गंभीर संकट के समय भी आवश्यक हैं। उदाहरण के लिए, इनमें से कुछ क्षमताओं में शामिल हैं समाज की निःस्वार्थ सेवा में सहभागी होना, सामूहिक क्रिया को सहज बनाना, विविध नायकों के बीच सहयोग बढ़ाना, सीखने की मुद्रा रखते हुए काम करना और आध्यात्मिक सिद्धान्तों एवं वैज्ञानिक ज्ञान के आधार पर समाधान प्रस्तुत करना शामिल है।

तीके के स्तर पर, मानवतावादी राहत के क्षेत्र में बहाई समुदाय का कार्य तीन सम्बंधित श्रेणियों में आता है: राहत, पुनर्बहाली और स्थायित्वपूर्ण विकास के लिए प्रयास। बाढ़, भूकम्प, भोजन की कमी, युद्ध और स्वास्थ्य संकट जैसी आपदाओं के मद्देनजर जब जनसमूह उपरोक्त क्षमताओं को क्रियान्वित करना सीख रहे हैं तो क्रमिक रूप से ज्ञान का एक वैश्विक भंडार एकत्रित हो रहा है। इस बारे में भी अंतर्दृष्टियां प्राप्त की जा रही हैं कि सामुदायिक जीवन के जीवंत पैटर्न के प्राकृतिक परिणाम के रूप में उभरने वाली विभिन्न संस्थागत व्यवस्थाएं समन्वित क्रिया को तेजी से कैसे सहज बना सकती हैं और स्थिरता और सुरक्षा का स्रोत कैसे बन सकती हैं। कुछ उदाहरणों में, जिन समुदायों ने आपदा राहत में काफी हद तक अनुभव प्राप्त किया है, उन्होंने पुनर्वास के अपने प्रयासों को भी आगे बढ़ाया है और अपनी नियमित गतिविधियों में जोखिम कम करने के अनेक उपायों को शामिल किया है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर, बहाई अंतर्राष्ट्रीय विकास संगठन इस क्षेत्र में प्रयासों का संयोजन करता है और प्राप्त ज्ञान को सुव्यवस्थित करने में मदद देता है।

सुसंगति की अभिव्यक्ति के रूप में लोचशीलता

दुनिया भर के समुदायों से आपदा के मद्देनजर सेवा और सामूहिक क्रिया की भावना को प्रदर्शित करने वाले कई विवरण सामने आ रहे हैं। उदाहरण के लिए, मलेशिया और मोजाम्बिक दोनों में, जब भारी

वर्षा के कारण भयंकर बाढ़ आई तो स्थानीय बहाई संस्थाएं कार्य में जुट गईं और भोजन, कपड़े, सफाई सामग्री और अन्य आवश्यक वस्तुओं के संग्रह और वितरण के लिए एक केंद्र के रूप में बहाई केंद्रों का उपयोग किया गया और वहीं दूसरी ओर पूरे देश में परिवारों ने अपने घरों के द्वार आश्रय के लिए खोल दिए। गतिविधि के पैटर्न के माध्यम से जो नेटवर्क पहले ही स्थापित किए जा चुके थे वे युवाओं के लिए सहयोग करने और विभिन्न प्रकार की राहत प्रदान करने के लिए तेजी से काम करने के एक माध्यम भी बन गए। एक स्थानीय बहाई संस्था के एक सदस्य ने टिप्पणी की: “बहुत से लोग अब स्वयं को एक विस्तारित परिवार के हिस्से के रूप में देखते हैं, न कि केवल अगल-बगल रहने वाले अजनबियों, मित्रों या परिचितों के रूप में।” इसके अतिरिक्त, समय के साथ प्रकट हुई परामर्श की संस्कृति ने समुदायों को नागरिक समाज के अन्य संगठनों के साथ मिलकर योजना बनाने, कार्य करने और सहयोग करने में सहायता दी।

युवाओं के आध्यात्मिक सशक्तीकरण के उद्देश्य से चल रही गतिविधियों ने युवाओं को सहयोग और साझा प्रयास की भावना को बढ़ावा देने का अनुभव प्रदान किया जो कि जरूरत के समय एक महत्वपूर्ण क्षमता साबित हुई है। बेरुत (लेबनान) में एक विस्फोट के बाद, इन कार्यक्रमों में भाग लेने वाले युवाओं ने कार्य करने की तत्काल भावना महसूस की और राहत और पुनर्वास में सहायता के लिए योजना बनाने के लिए उन्होंने तुरंत बैठक की। पहले वे केवल दस व्यक्ति थे, लेकिन उनके प्रयासों ने तेजी से अलग-अलग उम्र और पृष्ठभूमि के लगभग 80 स्वयंसेवकों को सहायता कार्य में जुट जाने के लिए प्रेरित किया — चाहे वह भोजन तैयार करने, कपड़े दान की व्यवस्था करने, या क्षतिग्रस्त भवनों को साफ करने में मदद करने के रूप में हो। प्रार्थना सभा का भी आयोजन किया गया। इसमें शामिल होने वाले कई लोगों ने टिप्पणी की कि कैसे आध्यात्मिक जड़ों को गहरा करने के लिए ऐसे अवसरों ने न केवल सामाजिक सम्बंधों को मजबूत करने में अपनी भूमिका निभाई बल्कि आशा का संचार भी किया और उन्हें अधिक लोचशीलता का अनुभव प्रदान किया।



हॉनडयुरस



तिमोर-लेस्ते



लेबनान

गहन रूप में: वैश्विक स्वास्थ्य-संकट का प्रत्युत्तर

कोविड-19 कोरोना वायरस से उत्पन्न वैश्विक महामारी के मद्देनजर, दुनिया भर में मौजूदा प्रणालियों का सभी स्तरों पर और समाज के सभी क्षेत्रों में अभूतपूर्व तरीके से परीक्षण किया गया। इस पृष्ठभूमि में, व्यक्ति, समुदाय और संस्थाएं यह सीखते आ रहे हैं कि समाज में व्याप्त रीढ़ को कैसे कम किया जाए। विभिन्न परिवेशों में, बहाई समुदाय के सदस्य जिन इलाकों में रहते हैं उनके लोगों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करते हुए, समाज के जीवन में और भी अधिक गहनता से सहभागी बने हैं और सरल से लेकर जटिल तक, अनुक्रियाओं की एक शृंखला तैयार की। कई उदाहरणों में, स्थानीय बहाई संस्थानों ने समुदायों की जरूरतों पर तेजी से अनुक्रिया की और महामारी से राहत प्रदान करने के लिए सरकार और नागरिक समाज के नायकों के साथ जुड़ने की अधिक क्षमता विकसित की।

समाज के सभी स्तरों पर सहयोग

दुनिया भर के किशोरों ने अपने समुदायों में महामारी के कारण उत्पन्न मुद्दों पर असंख्य रचनात्मक अनुक्रियाएं तैयार कीं। उदाहरण के लिए, **संयुक्त राज्य अमेरिका** में, न्यूयॉर्क शहर के एक उपनगर में युवाओं के एक समूह ने उन बच्चों को भोजन दान करने के लिए क्षेत्र के शिक्षा बोर्ड और विक्रेताओं के साथ एक प्रयास का समन्वय किया, जिनके भोजन का प्राथमिक स्रोत अब स्कूल बंद हो जाने के कारण उपलब्ध नहीं था। उन्होंने शारीरिक दूरी और स्वच्छता सुनिश्चित करने के उपायों के साथ, अपने अपार्टमेंट परिसर में सामुदायिक कक्ष को वितरण बिंदु के रूप में उपलब्ध कराने की व्यवस्था की। **इटली** में युवाओं ने पता लगाया कि गाने और कलात्मक प्रस्तुतियां पेश करने के लिए ऑनलाइन प्लेटफॉर्म का उपयोग कैसे किया जाए और साथ ही सार्थक विषयों पर विचार करने और जब व्यक्तिगत रूप से एकत्र होना संभव न हो



हॉन्ड्युरस

तो एक-दूसरे से जुड़ने के लिए अवसर का सृजन कैसे किया जाए।

स्थानीय संसाधनों को जुटाने और उन्हें प्रसारित करने और अन्य स्थानीय संस्थाओं के साथ सहयोग करने में बहाई संस्थाओं की क्षमता कई समुदायों की रीढ़ को दूर करने में सहायक रही है। उदाहरण के लिए, **भारत** में एक स्थानीय बहाई संस्था ने उन किसानों से संपर्क किया जो महामारी के दौरान बाजारों तक सीमित पहुंच के कारण अपनी उपज फेंक रहे थे। उन्होंने इन खाद्य पदार्थों को जरूरतमंद परिवारों में वितरित किया। संस्था ने एक चिकित्सा स्वास्थ्य शिविर आयोजित करने और दवा वितरित करने के लिए ग्राम प्रधान और स्थानीय स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के साथ भी सहयोग किया। **ग्यांमार** में, एक राष्ट्रीय बहाई संस्था ने, स्थानीय और क्षेत्रीय बहाई संस्थानों की मदद से, महामारी के कारण आर्थिक कठिनाई का सामना कर रहे लगभग 1,000 व्यक्तियों की एक सूची की पहचान की और उपयुक्त माध्यम से धन उपलब्ध कराकर उनकी तत्काल जरूरतों को पूरा करने के लिए काम किया।

दुनिया भर में कई बहाई समुदायों ने पड़ोस या गांव स्तर पर मानवीय राहत के लिए कोष की स्थापना की और जब स्थानीय साधन समाप्त हो गए तो क्षेत्रीय और राष्ट्रीय संसाधनों की मांग की गई। कुछ लोगों ने महामारी राहत प्रयासों के समन्वय के लिए डॉक्टरों और नर्सों के साथ राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और स्थानीय टास्क फोर्स की स्थापना की। इनमें से कुछ कार्यबलों ने आर्थिक, शैक्षिक या चिकित्सा सम्बंधी आवश्यकताओं को कम करने के तरीकों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए उप-समितियों का गठन किया। **भारत** में, स्थानीय टास्क फोर्स ने अपने अधिकार क्षेत्र को अनेक उपक्षेत्रों में विभाजित किया



भारत

और आवश्यक सहायता की प्रकृति निर्धारित करने के लिए प्रत्येक में जितना संभव हो सके उतने परिवारों से संपर्क किया — जैसे कि भोजन, दवा या वित्तीय सहायता — और उन लोगों को प्रोत्साहित किया जिनके पास अन्य लोगों की तुलना में स्थानीय कोषों में योगदान करने का साधन था ताकि जरूरतमंद लोग लाभान्वित हो सकें। संसाधनों को प्रभावी ढंग से व्यवस्थित करने के लिए, **एक्वाडोर** में कार्यबलों ने आवश्यक सहायता की प्रकृति के आधार पर परिवारों की पहचान की। वायरस के प्रसार को रोकने के उद्देश्य से संसाधनों को पूरे समुदाय के साथ साझा किया गया था और जिन परिवारों ने अपनी आय के स्रोत खो दिए थे, उन्हें खाद्य सामग्री प्रदान करके या सरकारी या गैर-सरकारी एजेंसियों द्वारा उपलब्ध कराई गई अन्य योजनाओं के लिए आवेदन करने में मदद करने के लिए कदम उठाए गए थे। जिन लोगों को स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ा, उन्हें स्वास्थ्य देखभाल तक पहुँचने में सहायता दी गई। उन जगहों पर जहाँ स्वास्थ्य देखभाल उपलब्ध नहीं थी, टास्क फोर्स ने यह सुनिश्चित किया कि मित्रगण टेलीफोन के माध्यम से डॉक्टरों के एक समूह से चिकित्सा सलाह प्राप्त कर सकें। **इराक** में, राष्ट्रीय बहाई संस्था ने एक टास्क फोर्स का गठन किया जिसके सदस्यों में स्वास्थ्य पेशेवर शामिल थे। टास्क फोर्स ने जरूरत पड़ने पर व्यक्तियों को विश्वसनीय जानकारी और स्वास्थ्य सहायता प्रदान करने के लिए काम किया। इसने उन विषयों पर ध्यान केंद्रित करने वाली साप्ताहिक ऑनलाइन शैक्षिक सभाओं की भी पेशकश की जो महामारी के लिए प्रासंगिक थीं। एक टास्क फोर्स जिसका गठन महामारी के दौरान **हंडरास** में संसाधनों को प्रसारित करने और लोगों को जोड़ने के लिए किया गया था, तब से तूफान जैसे अन्य संकटों का जवाब देने में एक आवश्यक तंत्र साबित हुआ है।

कई बहाई-प्रेरित संगठनों ने भी अपनी परिस्थितियों के अनुरूप महामारी के कारण उत्पन्न चुनौतियों का प्रत्युत्तर दिया। उदाहरण के लिए, **युगांडा** में किमान्या-न्येयो फाउंडेशन ने उन युवाओं के साथ काम करके भोजन की कमी को दूर करने के लिए कदम उठाए, जिन्होंने सैकड़ों आँगन उद्यान शुरू करने के लिए अपने क्षमता-निर्माण कार्यक्रमों (पृष्ठ 62 देखें) में भाग लिया था। **फिलीपींस** जैसे स्थानों में बहाई रेडियो स्टेशनों ने उन्नतिकारी कहानियों को प्रसारित करके श्रोताओं में आशा और प्रसन्नता का संचार करने में योगदान दिया, जिसने कुछ मामलों में श्रोताओं को दूसरों का सहयोग करने के लिए प्रेरित किया, या उन बच्चों के लिए शैक्षिक पाठ की पेशकश

की जिनके स्कूल बंद हो गए थे। सामुदायिक स्कूलों से जुड़े संगठनों ने छात्रों, शिक्षकों और परिवारों के सामने आने वाली वास्तविकता को समझने की कोशिश शुरू की। उदाहरण के लिए, कई संगठनों ने अपनी और अपने छात्रों की परिस्थितियों को समझने के लिए प्रत्येक शिक्षक के साथ नियमित टेलीफोन बैठकें कीं। अन्य संगठनों ने स्कूल संस्थापकों के लिए अंतर्दृष्टियों और अनुभव के आदान-प्रदान के अवसर सृजित किए और शिक्षकों ने उचित स्वास्थ्य उपायों को लागू करते हुए परिवारों का नियमित दौरा किया। मलावी में, कुछ स्कूलों ने यह सुनिश्चित करने के लिए अपने समुदाय के सभी बच्चों की सूची तैयार की कि किसी भी बच्चे की अनदेखी न हो और पड़ोस में रहने वाले शिक्षकों द्वारा वीडियो या फोन कॉल, मैसेजिंग चेक-इन या नियमित दौरे की व्यवस्था की। **मध्य अफ्रीकी गणराज्य** में, शिक्षकों ने परिवारों के घरों में विकेंद्रीकृत कक्षाएं आयोजित करना शुरू कर दिया, जिससे माता-पिता के लिए अपने बच्चों की आध्यात्मिक और बौद्धिक शिक्षा में अधिक सक्रिय भूमिका निभाने का अवसर सृजित हुआ।

इन प्रयासों की प्रभावशीलता के लिए एक महत्वपूर्ण कारक था इसमें शामिल व्यक्तियों द्वारा सरकारी एजेंसियों और समाज की अन्य संस्थाओं को सहभागी बनाने की क्षमता। **चिली** में, बहाई समुदाय द्वारा चिली एसोसिएशन फॉर इंटरनैशनल जियस डायलॉग के साथ साझेदारी करते हुए एक राष्ट्रीय रीडिया आउटलेट के लिए कार्यक्रम तैयार किया गया ताकि यह पता लगाया जा सके कि स्वास्थ्य संकट के प्रति रचनात्मक प्रतिक्रिया देने में आस्था के माध्यम से आशा का संचार कैसे किया जा सकता है। **जॉर्डन** और **स्पेन** सहित दुनिया भर में, बहाई समुदाय के सदस्य महामारी से निपटने में रीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में पत्रकारों और समाज के अन्य नायकों के साथ संवाद में जुटे हुए हैं।

“वर्तमान समय में सबकुछ चाहे कितना ही कठिन क्यों न हो और समाज के कुछ तबके अपनी सहनशीलता की सीमाओं के चाहे जितने भी निकट पहुँच चुके हों, मानवजाति अंततः इस अग्नि-परीक्षा को पार कर लेगी और वह ज्यादा बड़ी अंतर्दृष्टि और अपनी अंतर्निहित एकता की ज्यादा गहन समझ के साथ उस दूसरे छोर पर प्रकट होगी।”

— विश्व न्याय मंदिर



सीखने को सुव्यवस्थित बनाना

बहाई समुदाय के भीतर, विकास सिद्धान्त और व्यवहार के बारे में सीखने की क्रिया का अनावरण स्थानीय से लेकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक समुचित संस्थागत व्यवस्थाओं के समर्थन से होता है। क्रिया के विभिन्न क्षेत्रों में प्राप्त ज्ञान को धीरे-धीरे सुव्यवस्थित किया जाता है, जिससे कभी-कभी ऐसी विधियों या ऐसे कार्यक्रमों का उदय होता है जिन्हें अधिक व्यापक रूप से अपनाया जा सकता है और स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार लागू किया जा सकता है।

जब दुनिया भर के गांवों और आस-पड़ोस में, बढ़ती हुई संख्या में लोग अपने समुदायों की प्रगति के लिए आध्यात्मिक और वैज्ञानिक दोनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त करने और उन्हें कार्यान्वित करने के लिए कदम उठा रहे हैं तो उन्हें अनुभव के माध्यम से अंतर्दृष्टियां भी प्राप्त हो रही हैं। ये ही वे स्थानीय संदर्भ हैं जिनमें सीखने की क्रिया को सुव्यवस्थित करना अपना आकार लेना शुरू करता है। सीखे गए पहले पाठ में सामयिक कहानियां, उपाख्यान और व्यक्तिगत वृत्तांत शामिल हो सकते हैं। समय के साथ, पैटर्न उभर कर सामने आते हैं जिन्हें प्रलेखित किया जा सकता है और उनका सावधानीपूर्वक विश्लेषण किया जा सकता है। सीखने की क्रिया को सुव्यवस्थित करने के काम को सहज बनाने के लिए, स्थानीय स्तर पर उपयुक्त संरचनाओं का होना जरूरी है और उनमें ऐसी संस्थाएं और एजेंसियां शामिल हैं जिन्हें सीखने की प्रक्रिया की अखंडता की रक्षा करने और यह सुनिश्चित करने का अधिकार निहित हो कि यह केवल रायशुमा की या विभिन्न अनुभवों के संग्रह मात्र तक सीमित नहीं हो। इस संदर्भ में, आधारभूत स्तर पर काम करने वाली प्रभुधर्म की प्रशासनिक संस्थाएं व्यक्तिगत इच्छा का सामूहिक इच्छा के साथ तालमेल स्थापित करने और भागीदारी को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

चाहे वह कितना ही आवश्यक क्यों न हो किंतु स्थानीय स्तर पर सीखने की प्रक्रिया अपनी प्रभावशीलता में सीमित हो रहेगी यदि वह ज्ञान के व्यापक निकाय से जुड़ी हुई नहीं हो। कुछ मामलों में, प्रभुधर्म की क्षेत्रीय या राष्ट्रीय स्तर पर काम करने वाली संस्थाएं समान क्षेत्र में कार्य करने वाले व्यक्तियों के समूहों के बीच समीक्षा बैठकों की व्यवस्था करती हैं, या इस उद्देश्य के लिए वे विशेष एजेंसियां नियुक्त करती हैं। अन्य समय में, सीमाओं के भीतर या बाहर, स्कूलों या संगठनों के नेटवर्क का स्वाभाविक रूप से गठन होता है, जैसा कि अकादमिक विद्यालयों के सम्बंध में पृष्ठ 41 से 42 और युवाओं को सहयोग देने पर केंद्रित पहल के लिए पृष्ठ 51 पर दर्शाया गया है।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर, विकास के बारे में सीखने की प्रक्रिया के लिए एक निश्चित स्तर की अवधारणा की आवश्यकता होती है जो चल रहे वैश्विक परिवर्तन की व्यापक प्रक्रियाओं को ध्यान में रखती है और जो तदनुसार विकास गतिविधियों की समग्र दिशा को समायोजित करने का कार्य करती है। इस संदर्भ में, बहाई विश्व केंद्र स्थित बहाई अंतर्राष्ट्रीय विकास संगठन स्वयं को उस विकासमान विश्वव्यापी अनुभव को सुव्यवस्थित करने के प्रति समर्पित एक सीखने वाली संस्था के रूप में देखता है जो कि बढ़ती हुई संख्या में व्यक्तियों, एजेंसियों और समुदायों की भागीदारी के कारण संभव हो सका है। इस संगठन द्वारा सम्पन्न किए जाने वाले काम-काज उसे दुनिया भर के बहाई समुदायों में हो रहे विकास के बारे में सीखने, एक या अधिक परिस्थिति-समूहों में उभरने वाले पैटर्न की पहचान और उनका विश्लेषण करने तथा इस प्रकार उत्पन्न ज्ञान का प्रसार करने के लिए आवश्यक परिप्रेक्ष्य प्रदान करते हैं। जब वह उन कतिपय दृष्टिकोणों और कार्यप्रणालियों की पहचान करता है जो कार्य के किसी क्षेत्र में विशेष रूप से आशाजनक परिणाम प्राप्त कर रहे हैं तो वह



सम्बंधित संस्थाओं से परामर्श के माध्यम से, विभिन्न महाद्वीपों पर प्रारम्भिक परियोजनाओं को शुरू करने की व्यवस्था कर सकता है, जिसका उद्देश्य सामग्री और विधियों को परिष्कृत करना और उन्हें एक परीक्षित कार्यक्रम के रूप में समेकित करना होता है। तदुपरांत, उस कार्यक्रम को उपयुक्त परिस्थितियों वाले अन्य देशों में प्रसारित किया जाता है और राष्ट्रीय बहाई समुदाय उन्हें अपनी-अपनी खास आवश्यकताओं के अनुसार अनुकूलित कर सकते हैं। जब कार्यक्रम को संचालित करने में शामिल संस्थाओं की संख्या बढ़ जाती है तो उसी अनुसार

सूचना और ज्ञान के प्रवाह को सहज बनाने के लिए व्यवस्थाएं और संरचनाएं विकसित होती हैं, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि दुनिया भर के समुदाय न केवल कार्यक्रम से लाभान्वित हो सकें बल्कि उसकी आगे की प्रगति में भी योगदान दे सकें।

किसी न किसी हद तक, पिछले खंड में वर्णित प्रत्येक क्षेत्र के सम्बंध में सीखने के प्रवाह को सुव्यवस्थित और सहज बनाने के प्रयास जारी हैं। नीचे दिए गए चार उदाहरण यह समझाने में मदद करेंगे कि यह प्रक्रिया कैसे प्रकट होती है।

किशोरों का नैतिक सशक्तीकरण

1990 के दशक के मध्य में, साक्षरता को बढ़ावा देने में बहाई समुदायों द्वारा प्राप्त अनुभव का विश्लेषण करने के लिए, बहाई अंतर्राष्ट्रीय विकास संगठन की पूर्णगामी संस्था – सामाजिक और आर्थिक विकास कार्यालय (OSED) – द्वारा व्यक्तियों के एक समूह को आमंत्रित किया गया था। इस आधार पर, कई देशों में प्रारम्भिक साक्षरता परियोजनाएं तैयार की गईं। बाद के पशमशों में, जो कि विचारों को साझा करने और उपलब्धियों पर चर्चा करने के लिए आयोजित किए गए थे, यह तैज्ी से स्पष्ट हो गया कि 12 से 15 वर्ष की आयु के नवयुवाओं में एक विशेष आदर्शवाद और ऊर्जा देखने को मिलती है और अभिव्यक्ति की शक्ति को बढ़ाने वाले कार्यक्रमों के प्रति उनमें विशेष ग्रहणशीलता थी। परिणामस्वरूप, किशोरों के लिए आध्यात्मिक सशक्तीकरण कार्यक्रम तैयार किया गया (देखें पृष्ठ 52–55)।

2002 में, OSED ने किशोरों के आध्यात्मिक सशक्तीकरण के उद्देश्य से किए गए प्रयासों की पृष्ठभूमि, विशेषताओं और सामान्य मापदंडों का वर्णन करते हुए एक दस्तावेज का ड्राफ्ट तैयार किया। दस्तावेज के प्रसार से दुनिया भर में उस आयु वर्ग के साथ काम करने को और अधिक प्रोत्साहन मिला और रीखने की प्रक्रिया में एक नया आयाम खुल गया। जब किशोरों के लिए परियोजनाओं की संख्या में कई गुणा वृद्धि हुई तो OSED ने कई महाद्वीपीय सेमिनार आयोजित किए जिनमें विभिन्न देशों के प्रतिनिधि

अपने अनुभव साझा कर सकते थे, प्रशिक्षण प्राप्त कर सकते थे और योजनाएं तैयार कर सकते थे। जब गतिविधि को कायम रखने में एक निश्चित हद तक क्षमता विकसित हो गई तो सेमिनारों का ध्यान प्रत्येक देश में मानव संसाधन की तैयारी पर केंद्रित हो गया, जिन्हें कार्यक्रम की गुणवत्ता को मजबूत और समृद्ध बनाने के लिए नियोजित किया जा सकता है।

अगले दो दशकों में, इस कार्यक्रम को दुनिया भर में लगभग 330 बहाई प्रशिक्षण संस्थानों और संगठनों द्वारा अपनाया गया। कार्यक्रम की पर्याप्त मांग के जवाब में, 2008 से आरंभ करते हुए, इन प्रशिक्षण संस्थानों के प्रयासों में सहयोग देने के लिए सभी महाद्वीपों में ज्ञान के प्रसार के लिए साइटों का एक नेटवर्क स्थापित किया गया था। ये साइटें, जिनमें से लगभग 60 वर्तमान समय में संचालित स्थिति में हैं, कार्यक्रम के संयोजकों को प्रशिक्षण प्रदान करती हैं और विविध संदर्भों में अर्जित ज्ञान को सुव्यवस्थित करने और उनके प्रसार में मदद करती हैं। धीरे-धीरे, प्रत्येक क्षेत्र में शिक्षण स्थलों के नेटवर्क के बीच अनौपचारिक व्यवस्था ने नौ महाद्वीपीय या उप-महाद्वीपीय कार्यालयों को जन्म दिया है जिन्हें प्रत्येक क्षेत्र में ज्ञान के प्रवाह को सहज बनाने के लिए स्थापित किया गया है। जैसे-जैसे यह प्रक्रिया आगे बढ़ती जा रही है, इस कार्यक्रम के बारे में रीखने की क्रिया को सुव्यवस्थित करने और उनके प्रसार के लिए विभिन्न स्तरों पर संगठनात्मक व्यवस्थाओं के और अधिक विकास पर विचार किया जा रहा है।





कांगो जनतांत्रिक गणराज्य

सामुदायिक विद्यालय

सुनियोजित रूप से ध्यान दिए जाने वाला दूसरा क्षेत्र रहा है: दुनिया के उन क्षेत्रों में सामुदायिक स्कूलों को बढ़ावा देना जहां राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली की पहुंच काफी सीमित है। 1970 और 1980 के दशक के आरंभ में, दुनिया भर में बहाई समुदाय द्वारा बड़े अकादमिक स्कूलों की शुरुआत के साथ-साथ, ट्यूटोरियल स्कूलों को बढ़ावा देने के लिए एक वैश्विक अभियान शुरू किया गया था। ये ट्यूटोरियल स्कूल आम तौर पर ग्रामीण परिवेश में और सामान्यतः स्थानीय बहाई संस्थाओं द्वारा प्रबंधित किए जाने वाले, मामूली सुविधा-सम्पन्न स्कूल थे। दुनिया भर में कई बहाई समुदाय ऐसे स्कूल स्थापित करने में सफल हुए। किंतु उनकी निरंतर प्रगति में सहारा देने के लिए क्षेत्रीय या राष्ट्रीय स्तर पर संस्थात्मक क्षमता के अभाव में उनके अस्तित्व को कायम रख पाना संभव नहीं हो सका।

समय के साथ, एक सुसंगत शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रावधान के माध्यम से सामुदायिक स्कूलों को बढ़ावा देने के लिए, अफ्रीका में दो बहाई विकास संगठन सामने आए — एक मध्य अफ्रीकी गणराज्य (CAR) और दूसरा माली में। CAR में स्थित 'फाउंडेशन नाहिद एट हुशांग एहदियेह' के प्रयासों के क्रमविकास का वर्णन पृष्ठ 32-33 पर अधिक विस्तार से किया गया है। इन दो एजेंसियों

द्वारा अर्जित अनुभवों और पूर्व में 2007 में प्राप्त की गई अंतर्दृष्टियों से प्रेरित होकर, OSED ने संस्थात्मक और मानव संसाधनों वाले देशों में इस तरह के प्रयास को शुरू करने के लिए सामुदायिक स्कूलों की सुव्यवस्थित स्थापना में सहायता करने की कार्यनीति के तत्वों की रूपरेखा तैयार की।

तब से लेकर अब तक, अफ्रीका, एशिया और प्रशांत क्षेत्र में सतत बढ़ती हुई संख्या में बहाई-प्रेरित एजेंसियां गांवों और कस्बों में सामुदायिक स्कूलों को प्रोत्साहित करने की दिशा में काम कर रही हैं। अब जब उनकी संख्या बढ़ गई है, उनके बीच ज्ञान को साझा करने के काम को सहज बनाने की व्यवस्थाएं की गई हैं। महत्वपूर्ण अनुभव वाले कुछ संगठनों ने उभरती हुई एजेंसियों के लिए प्रशिक्षण केंद्र के रूप में कार्य करना शुरू कर दिया है, जिससे उन्हें अपने शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम को विकसित और परिष्कृत करने के प्रयासों में सहायता मिल रही है। अफ्रीका में, सामुदायिक स्कूलों को बढ़ावा देने वाली एजेंसियों के नेटवर्क के लिए एक सचिवालय इन संगठनों की संस्थागत क्षमता विकसित करने और पूरे महाद्वीप में प्राप्त किए जा रहे ज्ञान को व्यवस्थित करने में मदद करने के लिए काम कर रहा है। अब अन्य क्षेत्रों में भी इसी तरह की व्यवस्था के उद्भव सम्बंधी मुद्दों पर मंथन जारी है।

“ज्ञान का उद्देश्य होना चाहिए लोगों के कल्याण को बढ़ावा देना...”

— बहाउल्लाह



कोलंबिया

सामाजिक क्रिया की तैयारी

विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में युवाओं की शैक्षणिक आवश्यकताओं को संबोधित करना, कई बहाई-प्रेरित संगठनों के लिए लंबे समय से चिंता का विषय रहा है। बहाई-प्रेरित एजेंसियों द्वारा विकसित विभिन्न कार्यक्रमों और सामग्रियों को एकत्र किया गया है और दूसरों के साथ साझा किया गया है और उनकी प्रभावकारिता के बारे में परामर्श करने के लिए अवसरों का सृजन किया गया है। लैटिन अमेरिका में, कई वर्षों के अनुसंधान और कार्य के दौरान FUNDAEC (पृष्ठ 56 देखें) द्वारा विकसित शैक्षणिक सामग्री ने उनकी अकादमिक दृढ़ता और युवाओं को उन सामग्रियों को विकसित करने में सहायता करने में उनकी प्रभावशीलता के क्षेत्र में विशेष आशा का संकेत दिया है जो उन्हें अपने समुदायों की आध्यात्मिक और भौतिक प्रगति में योगदान देने में सक्षम बनाएंगी।

दुनिया भर में नित बढ़ती हुई संख्या में बहाई-प्रेरित संगठनों द्वारा दिखाई गई रुचि का जवाब देने के लिए, 2000 के दशक की शुरुआत में FUNDAEC ने, OSIED के परामर्श से, अपने पाठ्यक्रम के कुछ तत्वों में सुधार किया और उन्हें "सामाजिक क्रिया की तैयारी" (PSA) नामक एक कार्यक्रम में समेकित किया। 2006 में, OSIED ने अफ्रीका, एशिया, लैटिन अमेरिका और प्रशांत क्षेत्र में बहाई-प्रेरित संगठनों के साथ परामर्श किया जो अपने देशों में इस कार्यक्रम के कार्यान्वयन के बारे में जानने में रुचि रखते

थे। इन प्रारंभिक वर्षों में, FUNDAEC ने तकनीकी सलाह और प्रशिक्षण की पेशकश की, क्योंकि इन संगठनों ने सामग्रियों में अंतर्निहित विषयवस्तु और शैक्षणिक दृष्टिकोण के बारे में रीखा। धीरे-धीरे, संगठनों का एक वैश्विक नेटवर्क बनना शुरू हुआ, जिनमें से प्रत्येक ने विविध परिवेशों में कार्यक्रम के कार्यान्वयन के बारे में ज्ञान के विकसित होते भंडार में योगदान दिया। जैसे-जैसे ये संगठन मजबूत होते गए, वैसे-वैसे वे पड़ोसी देशों में इच्छुक संस्थानों को समर्थन देने की स्थिति में आते चले गए।

अब तक, PSA कार्यक्रम अफ्रीका, एशिया, लैटिन अमेरिका और प्रशांत क्षेत्र के करीब 20 देशों में लागू किया गया है और 17,000 से अधिक प्रतिभागियों तक पहुंच गया है। कई अन्य देशों की संस्थाओं ने कार्यक्रम शुरू करने का अनुरोध किया है और इस दिशा में कदम भी उठाए जा रहे हैं। प्रत्येक महाद्वीपीय क्षेत्र में, व्यक्तियों और एजेंसियों के एक उभरते हुए नेटवर्क का सहयोग सामग्री के उपयोग और सामुदायिक कल्याण प्रवर्तकों की सामग्रियों के बारे में रीखने के काम को और अधिक प्रोत्साहन दे रहा है। कार्यक्रम के आगे और अधिक विस्तार की संभावनाओं के प्रकाश में, यह कल्पना की जाती है कि विभिन्न महाद्वीपीय क्षेत्रों में रीखने की क्रिया को सुव्यवस्थित करने के लिए और अधिक औपचारिक प्रणालियां उभरेंगी।

कृषि

एक अन्य क्षेत्र जिसमें रीखने की क्रिया को सुव्यवस्थित किया जा रहा है वह है कृषि। अफ्रीका में, जहां बहाई समुदायों ने ऐतिहासिक रूप से कृषि पर विशेष ध्यान दिया है, 2010 के बाद से ही एक अधिक सुव्यवस्थित दृष्टिकोण उभरना शुरू हुआ। उस वर्ष, OSED ने उस महाद्वीप में कुछेक बहाई-प्रेरित संगठनों के साथ बातचीत शुरू की, जिन्होंने सामुदायिक स्कूलों को सहयोग देने या PSA कार्यक्रम प्रस्तुत करने में उल्लेखनीय अनुभव प्राप्त किया था। बातचीत में यह पता चला कि उनके प्रयासों के परिणामस्वरूप किस प्रकार ग्राही स्तर पर उभरने वाली क्षमताएं और संरचनाएं कृषि के इर्द-गिर्द रीखने की एक अधिक सुव्यवस्थित प्रक्रिया का आधार बन सकती हैं। जिन समुदायों में ये संगठन काम कर रहे थे, उनकी वास्तविकता को देखते हुए, ऐसी प्रक्रिया पर सहमति व्यक्त की गई, जिसका उद्देश्य खाद्य असुरक्षा के मुद्दों को संबोधित करने और कृषक परिवारों के आर्थिक विकास में योगदान करने में मदद करने के लिए छोटे खेतों पर उत्पादन बढ़ाना और विविधीकरण करना होगा। किसानों की वैज्ञानिक और तकनीकी क्षमताओं को बढ़ाने पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी, जिससे उन्हें न केवल ऐसे संसूचित विकल्प चुनने में सहायता मिलेगी जो उनके मूल्यों और उनके समुदायों के लिए उनकी आकांक्षाओं के अनुरूप हों, बल्कि विकास की प्रक्रिया में भाग लेने और नई प्रौद्योगिकियों का प्रसार करने में भी मदद मिलेगी जो कृषि विज्ञान में नई प्रगति को पारंपरिक ज्ञान के साथ संयोजित करेंगी। यह आशा की गई थी कि प्राप्त की गई प्रगति से कुछ विशेषाधिकार प्राप्त समुदायों के बजाय पूरे समुदायों को लाभ होगा और किसानों के बीच पारस्परिकता और सहयोग के संबंधों को बढ़ावा मिलेगा, जो कि धीरे-धीरे स्थानीय खाद्य बाजार को प्रभावित करेगा।

इन वार्तालापों के परिणामस्वरूप जो परिप्रेक्ष्य सामने आया वह यह था कि इन शैक्षणिक कार्यक्रमों से लाभान्वित होने वाले व्यक्तियों के समूह, जिनमें से अधिकांश स्वयं किसान थे, गांव के स्तर पर, किसी सामुदायिक स्कूल के या PSA समूह के सामूहिक

प्रयासों के हिस्से के रूप में भौतिक और सामाजिक स्तर पर रीखने की प्रक्रिया का नेतृत्व करने में मदद कर सकते थे। शुरुआती चरणों में रीखने की प्रक्रिया को प्रोत्साहित करने के लिए जिस सामग्री की पहचान की गई थी, वह छोटे खेतों में खाद्य उत्पादन पर केंद्रित FUNDAEC की एक पाठ्यपुस्तक थी, जो **कोलंबिया** में किसानों के साथ संगठन के शोध का रिकॉर्ड और प्रत्येक देश में उत्पन्न विशिष्ट ज्ञान के संदर्भ के दस्तावेजीकरण के लिए एक उपकरण है। इन सामग्रियों में वर्णित अनुसंधान के प्लॉट चयनित समुदायों में स्थापित किए जाएंगे ताकि वे ऐसे परिवेशों के रूप में काम कर सकें जिनमें उत्पादन प्रक्रिया से संबंधित नए तरीकों का परीक्षण और मूल्यांकन किया जा सके।

मध्य अफ्रीकी गणराज्य और मलावी में बहाई-प्रेरित सामुदायिक स्कूलों की एक छोटी संख्या में शुरू हुआ प्रयास समय के साथ **कैमरून**, **चैड**, **कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य**, **केन्या**, **मलावी**, **तंजानिया**, **युगांडा** और **जाम्बिया** सहित आठ अन्य देशों में विस्तारित हुआ। संगठनों के इस उभरते हुए नेटवर्क के कृषिविज्ञानी अपने अनुभवों पर विचार करने और उनका विश्लेषण करने और रीखने के नए क्षेत्रों की पहचान करने के लिए समय-समय पर बहाई अंतर्राष्ट्रीय विकास संगठन द्वारा समर्थित सम्मेलनों में मिलते हैं। 2019 के अंत में **युगांडा** में हुए एक महाद्वीपीय सम्मेलन में अध्ययन, परामर्श और समीक्षा की एक महीने की अवधि की अनुमति दी गई – कृषिविदों को रीखने की प्रक्रिया को तेज करने के लिए तैयार किया गया, विशेष रूप से महाद्वीप पर खाद्य प्रणालियों के सामने जलवायु परिवर्तन, स्वास्थ्य संकट और असुरक्षा जैसे मुद्दों के परिणामस्वरूप आने वाली नई चुनौतियों के प्रकाश में। इस स्तर पर विचाराधीन प्रश्नों में से हैं: इस प्रकृति के प्रयास को बनाए रखने के लिए स्थानीय या राष्ट्रीय स्तर पर किस प्रकार की संस्थागत क्षमता की आवश्यकता है? और जो अंतर्दृष्टि प्राप्त हुई है उसे उन स्थानों तक कैसे विस्तारित किया जा सकता है जहां बहाई-प्रेरित संगठन कृषि के क्षेत्र में सहभागी होना शुरू कर रहे हैं? इनमें से कुछ प्रयासों की झलकियां पृष्ठ 62 से 63 पर हैं।





विभिन्न स्तरों पर विकास सम्बंधी संवाद में योगदान देना

पिछले पन्नों में गतिविधियों के जिस विस्तृत होते नेटवर्क का वर्णन किया गया है, बहाई समुदाय की दृष्टि से उसका महत्व प्रतिभागी व्यक्तियों को मिलने वाले तात्कालिक लाभों से कहीं अधिक है। बहाई धर्म के लेखों में निहित सिद्धान्तों को विभिन्न स्थितियों में लागू करने के अनुभव ने बहाई समुदाय और उसके सहयोगियों को विकास के क्षेत्र में वर्तमान चुनौतियों के बारे में दिनोंदिन अंतर्दृष्टि प्राप्त करने और प्रचलित वैश्विक परिसंवाद में ज्यादा आत्मविश्वास के साथ योगदान देने में सक्षम बनाया है।

विभिन्न संवादों में बहाई भागीदारी का उद्देश्य दूसरों को किसी भी विषय पर बहाई दृष्टिकोणों को स्वीकार करने के लिए राजी करना नहीं है। न ही इस क्षेत्र में किया जाने वाला प्रयास जनसंपर्क के कार्यक्रमलाप या अकादमिक अभ्यास के रूप में ही किया जाता है। बल्कि, बहाई लोग सम्यता की उन्नति में योगदान देने के लिए बहाउल्लाह की शिक्षाओं को लागू करने के अपने प्रयासों में जो कुछ सीख रहे हैं उसे साझा करने और अन्य व्यक्तियों और समूहों के साथ साझा करने और उनसे यह सीखने के लिए उत्सुक हैं कि मानवजाति के सम्मुख खड़ी सामान्य चिन्ताओं का प्रत्युत्तर कैसे दिया जाए।

व्यक्तियों के योगदान

किरी भी समय और समाज के सभी स्तरों पर मौजूद सामाजिक अवसरों में, मानवजाति के कल्याण और उसकी प्रगति के विभिन्न पहलुओं से सम्बंधित वार्तालाप जारी रहते हैं। स्थानीय स्तर पर, सामाजिक प्रगति से सम्बंधित विमर्शों में व्यक्तियों की भागीदारी के साथ-साथ आध्यात्मिक विषयों पर सार्थक बातचीत में शामिल होने की क्षमता विकसित करना जीवन्त समुदायों के निर्माण के प्रयासों का एक स्वाभाविक हिस्सा है। इसका दायरा रोजमर्रा की बातचीत में बहाई अवधारणाओं को शामिल करने जैसे सरल कार्य से लेकर लेख तैयार करने और सामाजिक सरोकार के विषयों के लिए समर्पित सभाओं में भाग लेने जैसी अधिक औपचारिक गतिविधियों तक व्यापक हो सकता है। इस तरह की बातचीत से समुदाय के सामने आने वाली चुनौतियों की प्रकृति की सामूहिक समझ बढ़ती है और रचनात्मक क्रिया के संभावित तरीकों पर प्रकाश डाला जा सकता है। अनगिनत व्यक्तियों ने अपने प्रोफेशनल और स्वैच्छिक प्रयासों के माध्यम से भी सामान्य जन की भलाई से सम्बंधित संवादों में योगदान दिया है।

बहाई-प्रेरित संगठन और स्कूल

बहाई-प्रेरित संगठन भी अपने कार्यक्षेत्र से जुड़े परिसंवादों में योगदान देते रहते हैं। हालांकि ऐसा रुझान आम तौर पर किरी एजेंसी के प्रयासों के शुरुआती चरणों से ही मौजूद होता है, लेकिन प्रासंगिक वार्तालापों और फोरमों में भाग लेने के अवसर एजेंसी के संचित अनुभव के साथ स्वाभाविक रूप से विकसित होते रहते हैं।

उदाहरण के लिए, भारत में कई बहाई-प्रेरित स्कूल और एजेंसियां स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा सम्बंधी बातचीत में योगदान देना सीख रहे हैं। सिक्किम में, कई बहाई-प्रेरित स्कूलों ने व्यापक समुदाय के अन्य स्कूलों को यह सीखाने के लिए आमंत्रित किया है कि वे अपने समाज की बेहतर सेवा कैसे करें, सामूहिक रूप से अपने सामने आने वाली कुछ चुनौतियों की पहचान कैसे करें और वे जिन युवा छात्रों को अपनी सेवा का लाभ देते हैं उनकी क्षमता को कैसे उजागर करें। इन परामर्श सभाओं के परिणामस्वरूप स्कूलों के बीच अधिक समर्थन और सहयोग का वातावरण विकसित हुआ है जिसमें अंतर्दृष्टियों और संसाधनों का आदान-प्रदान भी शामिल है। हाल ही में, इस पहल में शामिल कुछ स्कूलों को शिक्षा के क्षेत्र में राज्य की नीति के बारे में अपने विचार पेश करने के लिए आमंत्रित किया गया है और इस विषय पर कई मीडिया प्रतिष्ठानों द्वारा



भारत

उनका साक्षात्कार लिया गया है।

देही अहिल्या विश्वविद्यालय (इन्दौर) में बहाई विकास अध्ययनपीठ (बहाई चेयर फॉर स्टडी इन डेवलपमेंट), जिसे लगभग 30 साल पहले स्थापित किया गया था, एक ऐसे दृष्टिकोण से विकास के क्षेत्र में अंतःविपरी शोध और स्कॉलरशिप को बढ़ावा देता है जिसमें मनुष्य की समृद्धि को भौतिक और आध्यात्मिक प्रगति दोनों के परिणाम के रूप में देखा जाता है। इस कार्य के एक हिस्से के रूप में, यह अध्ययनपीठ शिक्षा नीति, कृषि, स्थानीय आर्थिक विकास और जलवायु परिवर्तन सहित देश में विकास चुनौतियों से सम्बंधित कई विषयों पर सेमिनारों का आयोजन करता रहा है और जनसामान्य के कल्याण में योगदान देने के प्रयत्नों में समुदायों एवं संगठनों द्वारा आध्यात्मिक सिद्धान्तों का उपयोग कैसे किया जाता है, इस पर ध्यान केन्द्रित करते हुए उसने शोधपत्र भी प्रकाशित किए हैं।



लवजेमबर्ग में, यूनिटी फाउंडेशन एक बहाई-प्रेरित संगठन है जो अफ्रीका, एशिया और लैटिन अमेरिका में एजेंसियों की ओर से समान विचारधारा वाले ऐसे दानदाताओं की पहचान करने और उनके साथ काम करने में विशेषज्ञता रखता है जो कार्यक्रम-आत्मक और प्रशासनिक क्षमता के एक निश्चित स्तर तक पहुंच चुके हैं। फाउंडेशन के सबसे महत्वपूर्ण दानदाताओं में से एक देश का विदेश मंत्रालय है। फाउंडेशन के दृष्टिकोण की एक मुख्य विशेषता में उन विकास संगठनों की स्वतंत्रता का सम्मान करना शामिल है जिनके साथ वह भागीदार है। यह आपसी सहयोग और रीखने के सम्बंध स्थापित करता है जिसमें यह दानदाताओं के सामने अपने भागीदारों के लिए एक वकील के रूप में कार्य करता है। हाल के वर्षों में, संगठन यह रीख रहा है कि जिन एजेंसियों के साथ यह सहयोग करता है, उनसे प्राप्त अंतर्दृष्टि के आधार पर लवजेमबर्ग के भीतर विकास परिचर्चा में कैसे योगदान दिया जाए। इस सम्बंध में, उसके प्रयास विकास के अंतर्निहित सिद्धांतों के बारे में रचनात्मक वार्तालाप को बढ़ावा देने पर केंद्रित हैं। विभिन्न स्थानों में – चाहे दानदाताओं के साथ, स्कूलों में, समुदायों में, मीडिया में, या आम जनता के लिए खुले अन्य आयोजनों में – प्रतिभागियों को न्याय, आपसी समर्थन, लैंगिक समानता और पूर्वाग्रह पर विजय पाने जैसे विषयों के अन्वेषण के लिए आमंत्रित किया जाता है ताकि वे इन सिद्धांतों को अपने जीवन में लागू करने पर विचार करें। फाउंडेशन लवजेमबर्ग के गैर-सरकारी संगठनों की विभिन्न सभाओं में भी भाग लेता है और इन संगठनों को नियमित सम्मेलनों के लिए आमंत्रित करता है ताकि अनुभव के माध्यम से उन्हें जो अंतर्दृष्टियां प्राप्त हो रही हैं उन पर विचार किया जा सके।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर

बहाई अंतर्राष्ट्रीय समुदाय (BIC) दशकों से संयुक्त राष्ट्र (UN) के भीतर समाज की बेहतरी से सम्बंधित अनेक विमर्शों में संलग्न रहा है। हाल के वर्षों में, इसने अफ्रीकी संघ, दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्र संघ, यूरोपीय संघ और अन्य 'सुपरनेशनल' समूहों से जुड़े मंचों में भाग लिया है। वह जिन परिसंवादों में संलग्न है उनमें वैश्विक शासन, विकास, स्त्री-पुरुष की समानता, शांति और सुरक्षा, समाज में धर्म की भूमिका, मानवाधिकार, पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन, खाद्य सुरक्षा और युवाओं की भूमिका से सम्बंधित विषय शामिल हैं।

BIC नियमित रूप से सरकारी राजनयिकों, संयुक्त राष्ट्र एजेंसियों और नागरिक समाज के नायकों के साथ अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों और गैर-सरकारी मंचों – जैसे सामाजिक विकास और महिलाओं की स्थिति पर संयुक्त राष्ट्र आयोग और संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलनों – में भाग लेता रहा है। पिछले कुछ वर्षों में, BIC ने उपरोक्त परिसंवादों से सम्बंधित अवधारणाओं को संबोधित करते हुए कई वक्तव्य भी प्रकाशित किए हैं। 1990 के दशक के मध्य में, एक प्रमुख दस्तावेज जो जारी किया गया था और जो विभिन्न स्तरों पर आज भी सहयोग करता आ रहा है वह है 'मानवजाति की समृद्धि'। यह दस्तावेज बहाई शिक्षाओं के संदर्भ में वैश्विक समृद्धि की अवधारणा को परखता है। यह विकास-प्रक्रिया की प्रकृति और उद्देश्य के साथ-साथ इसके विभिन्न नायकों के लिए निर्धारित विभिन्न भूमिकाओं जैसे आवश्यक मामलों की खोज प्रस्तुत करता है।

BIC के हाल के वक्तव्यों में से एक, "ए गवर्नेंस बिफिटिंग: ह्यूमैनिटी एंड द पाथ टुवर्ड्स ए जस्ट ग्लोबल ऑर्डर" को संयुक्त राष्ट्र की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर जारी किया गया था। यह वक्तव्य अभिशासन के आयामों की पड़ताल करता है – विशेष रूप से इस बात पर विचार करते हुए कि वैश्विक चुनौतियों का प्रत्युत्तर देने और आने वाले वर्षों की अपूर्व संभावनाओं का लाभ उठाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय समुदाय वैश्विक सहयोग की अपनी प्रणालियों को कैसे मजबूत कर सकता है और मानव परिवार की एकता और एक-दूसरे पर निर्भरता के आलाोक में अपने मामलों को कैसे पुनर्गठित कर सकता है।

“उच्च विचारों का प्रकाशन जीवन की धमनियों में प्रवाहित होने वाली गत्यात्मक शक्ति है; यह संसार की साक्षात् आत्मा है।”

– अब्दुल-बहा





“धर्म दिव्य यथार्थ की बाह्य अभिव्यक्ति है। इसलिए उसका जीवन्त, ऊर्जस्वित, गतिमान और प्रगतिशील होना जरूरी है।”

- अब्दुल-बहा

एक अन्य वक्तव्य, “वन प्लैनेट, वन हैबिटेशन: ए बहाई पर्सपेक्टिव ऑन रीकास्टिंग ह्यूमैनिटीज़ रिलेशनशिप विद द नेचुरल वर्ल्ड” (एक धरती, एक निवास: प्राकृतिक जगत के साथ मानवजाति के सम्बंध के नवनिर्माण के बारे में बहाई दृष्टिकोण), मानव पर्यावरण पर 1972 के संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन की 50 वीं वर्षगांठ के अवसर पर जारी किया गया था। अनेक राष्ट्रीय समुदायों के अनुभवों के साथ-साथ पर्यावरणीय क्रिया में शामिल बहाई लोगों के विशिष्ट ज्ञान का उपयोग करते हुए, इस दस्तावेज़ में यह अन्वेषण किया गया है कि प्राकृतिक जगत के साथ सौहार्द रखते हुए भौतिक एवं आध्यात्मिक रूप से समृद्ध सभ्यता को आगे बढ़ाना मनुष्य के अर्थबोध और उद्देश्य के मूल में है। विभिन्न बहाई समुदायों द्वारा इस वक्तव्य का उपयोग स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर पर प्रासंगिक बातचीत में योगदान देने के लिए किया गया है और तब से इसे **कोलंबिया, कागो जनतांत्रिक गणराज्य, डोमिनिका सहित संयुक्त राज्य अमेरिका** के नवाजो राष्ट्र, **सिंगापुर, वानुआतु और जाम्बिया** में कई समुदायों के अनुभव को साझा करने वाली अन्य स्रोत-सामग्रियों के साथ एक पूरक सामग्री के रूप में इस्तेमाल किया गया है।

BIC के प्रयासों के अलावा, करीब 25 साल पहले स्थापित किए गए ‘इंस्टीट्यूट फॉर स्टडीज़ इन ग्लोबल प्रॉस्पेरेटी’ (वैश्विक समृद्धि अध्ययन संस्थान) सभ्यता की उन्नति के लिए प्रासंगिक चिंताओं की गहन खोज के लिए एक स्थायी मंच प्रदान करता है। इसके प्रथम कार्यकलाप में एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के कई देशों में विज्ञान, धर्म और विकास पर संवाद की एक शृंखला को प्रायोजित करना शामिल था। अपने पहले के काम को जारी रखने के क्रम में, संस्थान परिवर्तन के दौर से गुजरते हुए समाजों में शांति और न्याय, जनसमूहों के

वैश्विक अभिगमन, प्रवासन में धर्म की भूमिका और शहरों में विकास और संवृद्धि जैसे महत्वपूर्ण विषयों की खोज में समान विचारधारा वाले व्यक्तियों और संस्थानों के साथ सहयोग करता रहा है। अक्सर बहाई अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के सहयोग से, यह अपने निष्कर्षों को प्रकाशनों के रूप में और विभिन्न प्रकार के संवाद-मंचों के माध्यम से साझा करता है और इसका उद्देश्य सार्वजनिक परिसंवाद के ऐसे विचारों को प्रस्तुत करना है जो स्थायी सामाजिक परिवर्तन की ओर इंगित करते हैं।

कोई भी गंभीर पर्यवेक्षक उन मानव और भौतिक संसाधनों के व्यापक निवेश की आवश्यकता को समझने में विफल नहीं हो सकता है जिन्हें सरकारें और नागरिक समाज के संगठन मानव जाति की भलाई को बढ़ावा देने के लिए समर्पित करते हैं; न ही वे उस बुद्धिमत्ता और आदर्शवाद की भावना को नज़रअंदाज़ कर सकते हैं जो इस कार्य को प्रेरित करती है। अपने विकास प्रयासों के और अधिक विस्तार एवं संवर्द्धन के लिए प्रतिबद्ध, बहाई समुदाय अपने इस दृष्टिकोण को परिष्कृत करना जारी रखता है कि सीखना और क्षमता-निर्माण सफल विकास का केंद्रबिंदु है। इस तरह की दृष्टि ज्ञान के उत्पादन और अनुप्रयोग में, जीवन के सभी क्षेत्रों से और मानव परिवार की पूर्ण विविधता का प्रतिनिधित्व करने वाले लोगों को शामिल करने का आह्वान करती है। आध्यात्मिक सिद्धांत और विज्ञान के तरीके – ये दोनों मिलकर इस तरह की सहभागिता का संयोजन कर सकते हैं। बहाई समुदाय यह मानता है कि अंततः विकास सम्बंधी परिसंवादों में उसका सबसे उपयोगी योगदान सुव्यवस्थित अनुभव के परिणामस्वरूप प्राप्त इन अंतर्दृष्टियों को साझा करने में ही निहित होना चाहिए।



अज़रबैजान



ऑस्ट्रेलिया



लक्ज़ेम्बर्ग

ब्राज़ील

“...वह उद्देश्य जिसके लिए
नाशवान मनुष्य ने परम शून्यता से
इस अस्तित्व के लोक में अपने
कदम रखे हैं वह यह है कि वे
संसार की बेहतरी के लिए काम
कर सकें और एकता एवं सौहार्द
के साथ मिलजुल कर रहें।”

– बहाउल्लाह

और अधिक जानकारी के लिए:

वेबसाइट

bahai.org

विश्वव्यापी बहाई समुदाय की
आधिकारिक वेबसाइट

bahai.org/action/involvement- life-society/social-action

विकास सम्बंधी बहाई प्रयासों के बारे में
सूचना एवं स्रोत

news.bahai.org/socialaction

बहाई वर्ल्ड न्यूज़ सर्विस, विकास सम्बंधी
प्रयासों के बारे में कहानियां

bahaiworld.bahai.org/special- collections/contributing-to- social-transformation/

सामाजिक रूपांतरण के प्रति योगदानों
के बारे में लेखों और निबन्धों का एक
विशेष संकलन

bic.org

अंतर्राष्ट्रीय स्तर के परिसंवादों में
बहाई समुदाय की भागीदारी के बारे में
जानकारियां

globalprosperity.org

इंस्टीट्यूट फॉर स्टडीज़ इन
ग्लोबल प्रॉस्पेरिटी
(वैश्विक समृद्धि अध्ययन संस्थान)
की वेबसाइट

अनुशंसित अध्ययन

The Secret of Divine Civilization

(दिव्य सभ्यता का रहस्य)

अब्दुल-बहा द्वारा 1875 में फारसी भाषा
में लिखित एक व्याख्या जिसे फारस के
शासकों और लोगों को संबोधित किया
गया था। इसमें मानवजाति में निहित
असीम क्षमता के बारे में एक विस्तृत
टिप्पणी दी गई है और उस क्षमता के
अनुरूप सभ्यता के गुणों एवं विशेषताओं,
संरचनाओं और प्रक्रियाओं को प्रस्तुत
किया गया है।

Compilation on Social Action

(सामाजिक क्रिया: एक संकलन)

सामाजिक क्रिया के विषय पर विश्व
न्याय मंदिर के शोध विभाग द्वारा तैयार
किया गया एक संकलन

The Prosperity of Humankind

(मानवजाति की समृद्धि)

बहाई शिक्षाओं के प्रसंग में वैश्विक
समृद्धि की संकल्पना के बारे में विश्व
न्याय मंदिर के आदेश से प्रस्तुत एक
वक्तव्य

Statement on Social Action

(सामाजिक क्रिया पर एक वक्तव्य)

बहाई विश्व केंद्र स्थित सामाजिक एवं
आर्थिक विकास विभाग द्वारा 2012 में
तैयार किया गया एक दस्तावेज़ जिसमें
सामाजिक क्रिया के क्षेत्र में बहाई प्रयासों
को मार्गदर्शित करने वाली विकासशील
संरचनात्मक रूपरेखा का वर्णन किया
गया है।

Promoting a Discourse on Science, Religion, and Development

(विज्ञान, धर्म और विकास के बारे में
परिसंवाद का प्रोत्साहन)

लेखक: फ़रज़ाम अरबाब

"दि लैब, दि टेम्पुल, एंड दि मार्केट"

प्रकाशन में अंतर्राष्ट्रीय विकास शोध केंद्र
द्वारा एक अध्याय। इस प्रलेख में विकास
की एक ऐसी संकल्पना की तलाश की
गई है जिसके मूल में है विज्ञान और धर्म
दोनों से संप्रेरित ज्ञान का सृजन और
प्रयोग।

Revelation & Social Reality: Learning to Translate What is Written into Reality

(धर्म-प्रकटीकरण एवं समाज की
वास्तविकता: जो लिखित है उसे यथार्थ में
परिणत करना सीखना)

लेखक: पॉल लैम्पल

इस पुस्तक में इस बात पर चर्चा की
गई है कि बहाई लोग बहाउल्लाह
के प्रकटीकरण को समझने और एक
सतत-विकासशील सभ्यता की उनकी
संकल्पना को पूरा करने के लिए किस
प्रकार कार्य करते हैं

Moral Empowerment: In Quest of a Pedagogy

(नैतिक सशक्तीकरण: एक शिक्षणशास्त्र
की तलाश)

लेखक: सोना फ़रीद-अरबाब

एक पुस्तक जिसमें प्रभुधर्म की शिक्षाओं
से प्रेरित उस अवधारणात्मक रूपरेखा की
तलाश की गई है जो छात्रों के नैतिक
सशक्तीकरण का प्रयास करने वाले
शैक्षणिक कार्यक्रमों को मार्गदर्शित कर
सकती है।

एक बेहतर विश्व की ओर

सामाजिक एवं आर्थिक विकास के बारे में विश्वव्यापी बहाई समुदाय का दृष्टिकोण

प्रस्तोता: बहाई अंतर्राष्ट्रीय विकास संगठन